SWARN BHOOMI KI
LOK KATHAYE

सुवर्ण-भूमि की लोक कथाएं

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण अक्तूबर, 1982 (पौष 1903)

मूल्य : 12.50

निदेशक प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाऊस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित ।

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल) कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- कामर्स हाऊस, करीमभाई रोड़, बालार्ड पायर, बम्बई-400038
- 8, एसप्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700001
- ए. एल. ए. आडीटोरियम, 736 अन्नासलै, मद्रास-600002
- बिहार राज्य सरकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- निकट गवर्नमैंट प्रैस, प्रैस रोड़, त्रिवेन्द्रम-695001
- 10वीं स्टेशन रोड, लखनऊ-226004

गवर्नमैंट प्रैस, (यू. टी.) चण्डीगढ़ द्वारा मुद्रित ।

दो बातें

हमारे प्राचीन ग्रन्थों यथा वृहत संहिता तथा मार्कण्डेय पुराण में उत्तर प्रदेश के उत्तरी अंचल (जिसे उत्तराखण्ड के नाम से भी जाना जाता है) को सुवर्ण भूमि अथवा सुवर्ण नाम से सम्बोधित किया गया है। महाभारत कालीन इतिहास के अध्ययन से विदित होता है कि महाराजा युधिष्ठिर ने राजसूय नामक महायज्ञ सम्पन्न करने के लिए पिपलिक नाम का सोना इसी भू-भाग से मंगवाया था। उस काल में उक्त भू-भाग कुणिन्द (जमुना की घाटी) तथा तंगण (गंगा की घाटी) नाम से विख्यात था। प्रसिद्ध ऐतिहासिक चीनी यात्री हुवैनसांग ने भी सातवीं सदी ई० की अपनी यात्रा में इस भू-भाग को सुवर्ण भूमि नाम से पुकारा है। प्रस्तुत लोक कथाएं उसी प्रदेश की हैं।

दूसरी बात

मेरी पूजनीया मां को कथा सुनाने का कमाल हासिल है। मां के सम्पर्क में आने वाला शायद ही ऐसा कोई स्त्री-पुरुष व बच्चा होगा जो मां की इस विलक्षण कला से परिचित न हो। मैं जब छोटा था तो मां रोज रात को जाड़ों की लम्बी ठिठुरती रातों को गुदगुदे लिहाफ के अन्दर मुझे अपने साथ लिटाकर एक से एक दिलचस्प कथा सुनाकर मेरा भरपूर मनोरंजन किया करती थी। दिनभर काम-धंधे से बुरी तरह थकी-मांदी मां कभी-कभी तो कथा कहते-कहते स्वयं ऊंघने लग जाया करती और न जाने हम दोनों ही कथा के किस पड़ाव पर कब सो जाया करते।

बड़ा होने पर मैंने जब विभिन्न प्रदेशों और देशों की लोककथाएं पढ़ीं, तो मुझे भी लोक कथाएं लिखने की धुन सवार हो गई। अब क्या था। मैंने लोक कथाएं लिखने का पक्का मन बना लिया। संयोग से दस-बारह साल के पत्रकारिता के कच्चे-पक्के अनुभव ने कलम पकड़नी सिखा दी थी। अब क्या चाहिए था। अपनी स्मृति के लघु भंडार से मैंने प्रयास कर कुछेक

कथा-कंकालों को टटोल लिया। फिर उन ठठरियों पर अत्यन्त सावधानी के साथ शब्दों की सांस और भाषा शैली का मांस चढ़ाया। प्रस्तुत कथाओं के जन्म की यही संक्षिप्त कथा है। बेशक इस सम्पूर्ण क्रिया के चलते मां से सुनीं कुछ कथाएं तो पूरी की पूरी याद हो आईं और कुछ को दुबारा मां से सुन कर पूरा करना पड़ा है। मां ने मुझे पुनः उसी जादुई अंदाज में कथाएं सुनाईं। इस प्रकार कुल मिलकर इन सब कथाओं का शत-प्रतिशत श्रेय मां को ही है। यह उसी की थाती है, उसी की धरोहर।

पाठकों की कथाओं में बराबर दिलचस्पी को बनाए रखने के उद्देश्य से मैंने मां की उस जादुई शैली की मौलिकता को यथाशक्य अक्षुण बनाये रखने का भरसक प्रयास किया है। अस्तु, इससे अधिक मां के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन और उसके भारी ऋण से उऋण होने का मेरे पास भला और सरल, सुगम और सस्ता उपाय भी क्या था। इसलिए इन लोक कथाओं में जो कुछ भी सुविज्ञ पाठकों को भाये वह उसे मेरी मां की पवित्र धरोहर मानें और जो मन को खटके उसके लिए मुझे उत्तरदायी ठहराते हुए कथाओं का रसास्वादन लें।

तीसरी और अंतिम बात जो कहनी है, वह यह है कि प्रस्तुत संग्रह-लेखन में समय-समय पर जिन अन्य लोगों का मुझे सक्रिय सहयोग मिलता रहा उनमें अपनी तीनों-बहनों श्रीमती सावित्री डोभाल, श्रीमती सुशीला थपलियाल और श्रीमती शांति डोभाल—के नामों का उल्लेख करना भी आवश्यक-सा है। बड़ी बहन सावित्री के समय-समय पर सुझाये गये सुग्राह्य परामर्श, सत सहयोग और सतत प्रोत्साहन तथा प्रेरणा के अभाव में शो यह कार्य कदाचित उतनी भली-भांति सम्पन्न न हो पाता, जितना कि हो सका है। इनके अतिरिक्त, मेरी पत्नी श्री ने आद्योपान्त पाण्डुलिपि को को संवारने-सुधारने में जो श्रम किया, प्रस्तुत प्रयास उसी का प्रतिफल है।

—दुर्गाप्रसाद नौटियाल

विषय सूची

सापा दादा

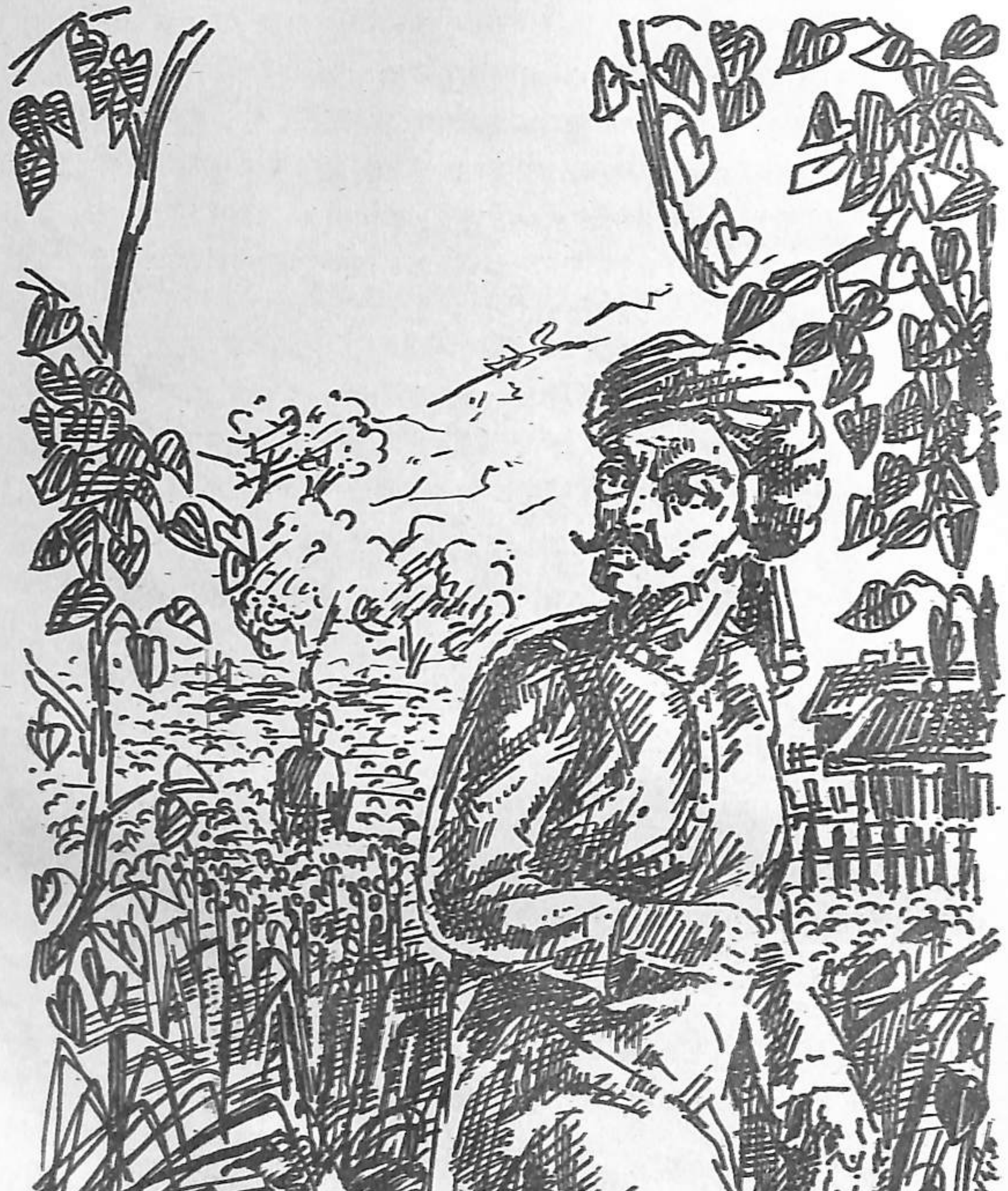
किसी गांव में शेर सिंह नाम का एक साहूकार रहता था। उसे सिर पर सापा (साफा या पगड़ी) बांधने का शौक था। और वह हमेशा सापा बांध कर रहता था। गांव के लोग उसे सापा दादा कह कर पुकारते थे। असली नाम उसका बहुत कम लोग जानते थे।

सापा दादा सेठ साहूकार था, लेकिन था उजड़ा हुआ। उसके मुकाबले का चतुर-चालाक और समझदार आदमी उस इलाके में कोई न था। जिस समस्या को कोई नहीं सुलझा सकता था। उसे सापा दादा पलक झपकते ही हल कर दिया करते। इसी गुण के कारण सारे गांव और आस-पास के गांवों तक उसकी धाक और छाप थी। लोगबाग उसका लोहा मानते थे।

सापा दादा को सब प्रकार के सुख प्राप्त थे, किन्तु स्त्री सुख शायद उसके भाग्य में नहीं लिखा था। पैंतालीस साल की अवस्था पर पहुंचते-पहुंचते उसे अपनी आंखों से तीन पत्नियों की मौतें देखनी पड़ीं। तीनों पत्नियों से किसी को भी कोई सन्तान न हुई। सापा दादा के लिए यह एक और दुख था। दुर्भाग्य से वह पुत्रदर्शन से भी वंचित रह गया। इतना सब होने के बावजूद वह गजब का जिंदा दिल इन्सान था।

जमीन, जायदाद और धन दौलत उसके पास काफी थी। इस कारण भी उसे उत्तराधिकारी की चिन्ता थी। वह नहीं चाहता था कि उसकी सम्पत्ति को उससे ईर्ष्या-द्वेष करने वाले लोग खायें। सोच विचार करने के बाद उसने चौथी शादी करने का विचार बनाया। अगले ही दिन वह एक गरीब व्यक्ति के यहां से चार पाथा रुपया (चार हजार रुपये) देकर एक सोलह वर्षीया लड़की ले आया।

चारों ओर खबर फैलते देर न लगी कि सापा दादा ने टक्कों (रुपयों) से विवाह कर लिया है। उसके निकटतम संबंधी अब उससे और भी डाह करने लगे। लेकिन उसे किसी की क्या परवाह थी। न किसी का दिया वह खाता था, न किसी के अधीन था जिससे उसको किसी की जरूरत पड़ती।



अब सापा दादा के दिन हंसी खुशी में निकलने लगे। वह इस पत्नी को पहले की पत्नियों की अपेक्षा ज्यादा प्यार करता था। उसके लिए नित नये-नये वस्त्र, आभूषण बनाता रहता था। वह गरीब घर की थी। उसने इतना धन माल स्वप्न में भी नहीं देखा था। धीरे-धीरे उसे घमंड होने लगा। उसने जल्दी ही सापा दादा पर ही शासन करना शुरू कर दिया। सापा दादा तो सापा दादा था। भला उसे कौन चरा सकता था। लेकिन वह चुपचाप सहता सुनता रहता था। बुढ़ापे का जो विवाह था। दैव की मार थी।

उस गांव में एक पधान (प्रधान या मुखिया) भी था। उसका था एक लड़का। शरीर उसका पहलवान जैसा और रंग एकदम गोरा-चिट्टा था। एक दिन पन्ध्यारे (पानी का प्राकृतिक नल) में उसका सामना सापा दादा की नवोढ़ा पत्नी से हो गया। दोनों ने एक दूसरे को देखा। प्रथम साक्षात्कार में ही आंखें चार हो गयीं। अब तो दोनों किसी-न-किसी बहाने रोज एक दूसरे से मिलते। धीरे-धीरे उन दोनों का परस्पर गहरा प्रेम हो गया। अन्त में स्थिति यहां तक पहुंची कि उन्हें बिना एक दूसरे को देखे चैन ही नहीं पड़ता था।

आधा से अधिक गांव उनके प्रेम संबंध की बात जान गया। किन्तु सापा दादा को इस बात की जरा भी खबर न मिली। लोग उसके दुश्मन थे। वे तो चाहते ही थे कि किसी तरह से उसका घर उजड़ जाए।

प्रधान के लड़के से न रहा गया। एक दिन उसने सापा दादा की पत्नी को पट्टी पढ़ाई कि तू किसी तरह सापा दादा को कुछ दिन के लिए बाहर भेज दे। फिर हम दोनों बेफिक्र होकर गुलछर्रे उड़ाएंगे।

शाम को खाना परोसते हुए सापा दादा की पत्नी सुबक-सुबक कर रोने लगी। सापा दादा ने रोने का कारण पूछा तो वह कुछ नहीं बोली। बस, रोती ही रही। सापा दादा बड़े संकट में पड़ गया। उसने खाना खाना बंद कर दिया। रोने का कारण पूछने लगा। लेकिन उसने मुंह नहीं खोला। सापा दादा ने जब उसे बहुत मनाया बुझाया तो वह फूट पड़ी—"लगता है कि

मुझे महीने लग गए हैं (पेट में जीव ठहरा है) । एक तुम हो कि अपने ही रंग में मस्त हो । कोई मरे या जिये तुमसे कोई मतलब नहीं है । रात में काफी दिनों से बड़े भयानक सपने देखती आ रही हूं । अब तुमसे क्या छिपाऊं । मेरी चोटी पकड़कर पिशाचनी मुझे घसीटती है ।" इतना कहते-कहते वह फूट-फूट कर रोने लगी ।

सापा दादा को उसकी बात पर विश्वास करते तनिक भी देर न लगी । उसका चेहरा मुरझा गया । बड़ी मायूसी से उसने जब इसका उपचार-इलाज पूछा तो पत्नी बोली,"मैंने गांव में बड़ी बूढ़ी औरतों से पूछा है । उनका कहना है कि किसी अच्छे जानकार झाड़कंडी (ओझा) से इस कार्य को करवाना चाहिए । फिर यह काम जितना जल्दी हो, उतना ही अच्छा है, अन्यथा विलम्ब करने से भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है । हमारे गांव के पास ही एक गांव है । उस गांव में एक पहुंचा हुआ झाड़कंडी रहता है । यदि किसी तरह उसको ला सको तो सब कुछ ठीक हो जाएगा । तीन-चार दिन आने जाने में तो लगेंगे । लेकिन बिना तुम्हारे जाए वह आएगा भी नहीं ।"

यह सुनकर सापा दादा की जान में जान आ गयी । उसे लगा कि बड़ा भारी संकट टल गया है । एक क्षण मौन रहने के बाद पत्नी को धैर्य बंधाते हुए वह कहने लगा —"बस इतनी सी बात के लिए तू इतना रो रही है । तेरे लिए तो सापा दादा अपनी जान तक सहर्ष दे सकता है । झाड़कंडी तो मैं एक से एक बढ़िया ला सकता हूं । लेकिन जब तेरा विश्वास उसी झाड़-कंडी पर जमा हुआ है, तो मैं उसको ले आऊंगा । कल ही सवेरे मैं ससुराल को चल दूंगा । इस बहाने ससुराल वालों से भी मुलाकात हो जाएगी । बहुत दिन से उनसे मिलना भी नहीं हो सका है । करें भी तो क्या । दूर का मामला है । मैं ठहरा अकेला आदमी ।"

पत्नी धोती के पल्लू से अपने बनावटी आंसुओं को पोंछने लगी । मन ही मन वह प्रसन्नता से फूल उठी । उसे अपनी योजना सफल होती दिखाई पड़ी ।

दोनों ने खाना खाया तथा आधी रात तक दोनों बतियाते रहे । फिर सापा दादा तो सो गया, क्योंकि उसे रात खुलने से पहले ही घर से रवाना हो जाना

था। पत्नी को तो मारे खुशी के नींद नहीं आयी। और फिर उसे सापा दादा के लिए रास्ते के वास्ते कुछ चना चबेना भी बनाना था। इसके लिए वह शाम से ही तैयार थी। उड़द की दाल भिगो रखी थी। बहुत रात गये उसने दाल पीसी और दाल की भरी हुई परोंठियां बनाने लगी। करीब दो दर्जन परोंठियां उसने बना डालीं तथा बड़े प्यार से उसने सापा दादा को जगाया। सापा दादा उठ-बैठा। पैंतालिस छयालिस साल की अवस्था में सापा दादा को आज महसूस हुआ था कि बच्चे का बाप बनना कितना कष्टदायक होता है।

सापा दादा ने जल्दी-जल्दी चाय का गिलास गले में डाला और फिर नित्य-कर्म से निवृत होकर चलने को तैयार हो गया। सापा दादा जब कभी घर से बाहर जाता, तो अपनी आदत के अनुसार जाने से पहले कहता, "लाओ मेरी लाठी और छतरी।" पत्नी शीघ्रता से लाठी-छतरी लाकर दे देती है। फिर वह मुड़कर पीछे नहीं देखता। उस दिन भी उसने वैसा ही कहा। किन्तु आज तो पत्नी लाठी-छतरी लिए पहले से ही तैयार खड़ी थी। सापा दादा के लाठी छतरी मांगने पर वह उसे विदा करने के लिए आगे-आगे चल पड़ी। सापा दादा भी चलने लगा। गांव से काफी दूर तक वह उसे छोड़कर आयी।

सापा दादा जब लगभग आठ-दस मील का फासला तय कर चुका, तब कहीं रात खुली। कुछ देर उसने बैठकर थोड़ा विश्राम किया और फिर धीरे-धीरे अपने गन्तव्य की ओर चलने लगा। दोपहर होते-होते वह एक गांव के समीप पहुंच गया। अचानक उसकी भेंट रास्ते में पीपल के नीचे बैठे गप्प सड़ाका लगाते हुए चार आदमियों से हो गयी। ये चारों बड़े चतुर और धूर्त थे। सापा दादा को वे पहले से ही जानते पहचानते थे। उनको यह भी पता था कि गांव के प्रधान के लड़के का सापा दादा की पत्नी से इश्क चल रहा है। लेकिन सापा दादा उनमें से किसी को भी नहीं पहचानता था। सापा दादा को आते हुए देख कर उन चारों ने उसे नमस्कार किया और बैठने को कहा। उनके आग्रह अनुरोध पर सापा दादा बैठ गया। बातचीत होने लगी। उन्होंने पूछा कि आज कहां तक दौड़ हो रही है। उत्तर में सापा दादा ने सब कुछ सच-सच बता दिया। सुनकर उनमें से एक आदमी ने कहा, "यार सापा दादा तू भी कितना भोला है। तेरी घरवाली गांव के प्रधान के लड़के के साथ फंसी हुई है। उसने ऐसा बहाना

बनाकर तुझको घर से बाहर कर दिया है। तेरी अब तक तीन-पत्नियां मर गयीं हैं, पर तुझे स्त्रियों के चरित्र का जरा भी तो ज्ञान नहीं है। अगर हमारी बात का तुझे विश्वास नहीं है, तो अभी उल्टे पांव घर जाकर देख ले। हम तेरा घर उजड़ता हुआ नहीं देख सकते। इसलिए कह रहे हैं।

सापा दादा को एक झटका सा लगा। पत्नी का आलाप प्रलाप आंखों में चढ़ने उतरने लगा। उसने अपनी लाठी-छतरी और कंडी उठाई और चलने को उठ खड़ा हुआ। यह देखकर उनमें से दूसरा आदमी बोल पड़ा, "सीधे-पन की भी तो हद होती है। भलेमानुष जो तू इस टोकरी को लेकर घर पहुंचेगा तो तेरी घरवाली क्या कहेगी। उसे तू क्या जवाब देगा, टोकरी यहीं छोड़ जा। घर जाकर कहना कि मुझे रास्ते में लुटेरों ने लूट लिया है। बड़ी मुश्किल से जान बचाकर वापस आ गया हूं। बस इतना कहने की जरूरत है। फिर सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

सापा दादा के गले में सुझाव एक दम उतर गया। वैसे वह सुलझा हुआ आदमी था। उनकी बात का उसे पूरा विश्वास हो गया। टोकरी वहीं छोड़-कर वह उल्टे पांव वापस घर की ओर चल पड़ा।

उधर चारों ने टोकरी खोली। ढेर सारी परोंठियां पाकर वे प्रसन्नता से फूले न समाए। मजे से सबने परोंठियां छकीं और वहीं पेड़ की छाया में निश्चिन्त होकर सो गए।

उधर सापा दादा को विदा कर घर वापस आते हुए उसकी पत्नी प्रधान के लड़के को साथ घर ले आयी। घर पहुंच कर उसने भैंस का दूध दुहा और तुरन्त गरम कर उसे पीने को दिया। फिर वह अपनी बखरोटी (जहां बकरियां बांधते हैं) में गयी। वहां से एक तगड़ा सा बकरा ले आयी। प्रधान के लड़के ने एक ही झटके में बकरे का काम-तमाम कर दिया। अब तो सारे दिन के लिए दोनों के पास काम ही काम हो गया था।

सापा दादा का मकान गांव से कुछ दूरी पर था, इसलिए किसी को कुछ भी पता नहीं लगा। फिर काम धंधे का समय था। सब लोग अपने-अपने कामों

में व्यस्त थे। दोनों ने खूब डटकर कच्चा पक्का मांस खाया। सापा दादा की तरफ से तो वे बेफिक्र ही थे।

रात होते-होते सापा दादा खाली हाथ घर पहुंच गया। द्वार बन्द देखकर उसने सांकल हिलायी। किसी के आने की आहट पाकर पत्नी ने प्रधान के लड़के को कोठार (लकड़ी का बड़ा बक्स) में छिपा दिया और फिर दरवाजा खोलने को आयी। दरवाजा खोलकर देखती क्या है कि सापा दादा साक्षात खड़ा है। वह हक्की-बक्की रह गयी। पत्नी की मुख-मुद्रा देखकर सापा दादा को भांपते देर न लगी कि दाल में कुछ काला है। उसने तत्काल नाटक किया। दरवाजा खुलते ही वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा। लाठी छतरी उसकी दूर जा गिरीं। यह देखकर पत्नी नखरे करते हुए बोली, "हे भगवान ! क्या हो गया है इनको। कुछ बोलो तो सही।"

"गनीमत समझ कि मैं जीता जागता पहुंच गया हूं। मुझे रास्ते में लुटेरों ने लूट लिया। सच मान मैं तो तेरी किस्मत से बच गया। मेरी तो किस्मत खोटी है। सापा दादा ने अत्यन्त रुंधे कंठ से रुक-रुक कर कहा।"

सुनकर पत्नी कहने लगी-"चलो अच्छा ही हुआ, भगवान जो कुछ करता है, भले के लिए ही करता है। देखो तो कैसा दुर्भाग्य है हमारा। उधर तुमको लुटेरों ने लूट लिया और इधर बाघ ने एक बकरा मार दिया। मैं सोच रही थी कि ऐसे मौके पर ही तुम्हें बाहर जाना था। मांस मुझे वैसे ही अच्छा नहीं लगता। फिर साथ में तो मैं थोड़ा बहुत खा भी लेती हूं, पर अकेले में तो एक टुकड़ा भी मुंह में रखना मेरे लिए मुश्किल हो गया। कुछ मैंने तुम्हारी बड़ी बहन के यहां भिजवा दिया है और बाकी सब यहां पड़ा है। चलो अच्छा हुआ तुम आ तो गए।"

सापा दादा ने हाथ पैर धोये और खाना खाने बैठ गया। उस दिन उसे पहले की अपेक्षा खाना कहीं ज्यादा स्वादिष्ट लगा। उसका संदेह बढ़ता ही गया। इस बीच उसे शक हो गया कि लकड़ी के बक्स में कोई छिपा पड़ा है। ऐसा भांप कर उसने पत्नी से कहा कि थकान ज्यादा लग गयी है, इसलिये तुरन्त बिस्तर बिछा दे, ताकि खाते ही लम्बी तान लूं। पत्नी तो ऐसा चाहती ही थी। वह तुरन्त जाने को उठ खड़ी हुई। जाते समय वह कहती गयी कि इधर शिकार

रखा है, जरा बिल्ली को देखते रहना।

पत्नी के जाते ही सापा दादा ने बकरे की रान (टांग) अच्छी तरह देखी। फिर धीरे से बक्से का ढक्कन उठाया। वहां प्रधान के लड़के की झलक पाते ही उसने आव देखा न ताव और उसके मुंह में सारी टांग ठूंस दी। प्रधान का लड़का भय और लज्जा से जरा भी प्रतिवाद नहीं कर सका। कुछ ही देर में उसका प्राणान्त हो गया। उसका काम-तमाम कर सापा दादा चुपचाप खाना खाने लग गया। कुछ देर बाद पत्नी वापस आ गयी। पत्नी को देखकर वह बोला, "तेरे जाते ही एक ढड्डू (बिल्ला) वहां आ धमका। मेरे लाख छुड़ाने के बावजूद वह बकरे का रान लेकर लकड़ी के बक्स में घुस गया। मैं उसे छुड़ाने गया तो उल्टा मुझपर झपटने लगा। मैंने यह सोचकर कि आज का दिन ही खराब है, उसे नहीं छेड़ा। अब वह रान को बैठकर मस्ती से चट कर रहा है।"

पत्नी ने कहा कि तुम जाकर आराम करो। सापा दादा बोला, "जरा उजाला तो ला। उस ढड्डू को देखते हैं।" पत्नी सकपका गयी। उसने तुरन्त लालटेन उठायी और बक्स की ओर लपका। पत्नी भी साथ लपकी। रोशनी में देखते क्या हैं कि बक्स के अंदर प्रधान का लड़का मरा पड़ा है। लेकिन यह क्या। उसके मुंह में बकरे की रान है। पत्नी को काटो तो खून नहीं। भय के मारे वह थरथर कांपने लगी। यह देखकर लालटेन नीचे रखते हुए सापा दादा बोला—"अब सारी बात का पता चला है। तूने गांव के प्रधान का लड़का मार दिया है। तेरे लिए मैं क्या चीज हूं। अब तू ही इस घर, गांव में रह। ला मेरी लाठी और छतरी मैं तो चला।"

अब तो पत्नी की हालत और भी खराब हो गयी। एक क्षण वह मौन रही। फिर अगले ही क्षण वह सापा दादा के पैरों में पड़कर गिड़गिड़ाने लगी—"मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूं। अब जो कुछ हो गया है, उस पर मिट्टी डालो। लेकिन किसी तरह इस लाश को दफना दो। आज से मैं ऐसा कोई भी काम नहीं करूंगी।" कहते-कहते वह जोर-जोर से रोने लगी।

सापा दादा सुलझा हुआ आदमी था। भला वह क्यों किसी के कानों में बात पड़ने देता। लेकिन पत्नी को रास्ते पर लाने के इरादे से उसने यह सारा नाटक रचा था।

रात अभी काफी शेष थी। सापा दादा ने पत्नी को सोने के लिए भेज दिया और अपने आप प्रधान के मृतक लड़के के बारे में सोचने लगा। उसी दिन बगल के गांव में मेला था। उस गांव के बड़े बूढ़े मेले में गए हुए थे। जवान लड़कियां मेले में नहीं जाया करती थीं। यह उसे मालूम था। दो चार परिवारों की जवान और कुंवारी लड़कियां मेले की रात को किसी एक घर में जमीन पर बिस्तर बिछा कर एक साथ सोया करती थीं। इस रिवाज से भी वह पूर्णतया परिचित ही था। यह भी उसे मालूम था कि वे उस रात को किस के यहां सोई हुई हो सकती हैं। बस फिर क्या था। सारी समस्या का हल उसे अगले ही क्षण मिल गया। उसने प्रधान के मृतक लड़के को कंधे पर उठाया और गांव की ओर चल पड़ा।

सापा दादा कुछ देर बाद उस कमरे में जा पहुंचा जहां जवान लड़कियां सोई हुई थीं। उसने बड़ी सावधानी से प्रधान के मृतक लड़के को लड़कियों के पैरों के ठीक नीचे लिटा दिया। और दबे पांव वापस घर आ गया।

वहां सोते हुए में जब किसी लड़की के पैर से प्रधान का मृतक लड़का लगता, तो वह समझती कि उन्हीं में से कोई सहेली है। और इस गलतफहमी में अपनी सहेली को गाली देकर एक लात जमा देती। रातभर ऐसा ही होता रहा। रात खुली। लड़कियां उठीं। उनकी नजर पैरों की ओर गई। वे सन्न रह गयीं। वहां प्रधान के लड़के की लाश पड़ी थी। भय के मारे लड़कियों के प्राण सूख गए। और किसी की लाश होती तो वे चुपचाप आकर गांव के प्रधान से कह देतीं। लेकिन यह तो उसी का लड़का था। अब जायें तो कहां जायें और कहें तो किससे कहें। हत्या तो हो ही चुकी थी। अब तो लड़कियों के सामने किसी तरह अपनी इज्जत और जान बचाने का सवाल था। उनमें एक लड़की बड़ी सयानी थी। उसने इस समस्या को सापा दादा के सामने रखने का निश्चय किया। सब लड़कियां सापा दादा के घर की ओर चल पड़ीं।

सुबह-सुबह वह सापा दादा के यहां आ पहुंची। सापा दादा तो सोया हुआ था। उन्होंने उसकी पत्नी से उसे जगाने का अनुरोध किया। कुछ देर बाद वह उठ कर बाहर आया। लडकियों ने सारी बात बताई। उसकी पत्नी भी खड़ी हुई सुन रही थी। जब लड़कियां सारी बात कह चुकीं, तो सापा दादा अपनी पत्नी की ओर

देखते हुए बोला-"ला मेरी लाठी और छतरी। मैं अभी इस गांव को छोड़कर जाता हूं। जब इन लड़कियों ने इतने बड़े प्रधान का संडा मुसंडा लड़का मार दिया है, तो इनके लिए मैं क्या चीज हूं।"

लड़कियों की दशा और भी खराब होने लगी, उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा। फिर सबने एक-एक कर अपने कान के जेवर उतार कर सापा दादा के पैरों में रख दिए और कहा कि चाहे जो कुछ करें लेकिन इस मामले को दबा दें। सापा दादा तो यह चाह ही रहा था। उसने लड़कियों से कहा कि उस कमरे का दरवाजा बंद कर चाबी मुझे दे दो और तुम निश्चिंत हो अपने अपने घर चली जाओ। अब कहीं लड़कियों की जान में जान आयी। एक लड़की गयी और जल्दी ही उस कमरे पर ताला लगाकर वापस आ गयी। चाबी सापा दादा को सौंपकर वे सब अपने-अपने घरों को चल दीं।

लगभग आधी रात को सापा दादा अपने घर से निकला। प्रधान के मृतक लड़के को उठाकर वह चुपके से एक कोली (गांव में कपड़ा बुनने का काम करने वाला) के करघे से सटा कर खड़ा कर आया।

कोली बहुत सवेरे उठ कर अपना काम शुरू कर दिया करता था। अगले दिन वह हमेशा की तरह उठ कर करघे के पास गया। उसका नियम था कि सुबह सवेरे उठकर बिना किसी का मुंह देखे करघे के दर्शन करना। करघा उसकी रोटी रोजी था। अंधेरे में करघे के पास किसी को खड़ा देखकर कोली सहसा सहम गया। बोला—"कौन है? लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। कई बार पूछने पर जब उसे कोई जवाब नहीं मिला तो उसे गुस्सा आ गया। वह तेजी से गया और उसको एक जोर का धक्का दे दिया। धक्का लगते ही वह धड़ाम से नीचे गिर गया। कोली ने उसे ध्यान से देखा। देखता क्या कि गांव के प्रधान का लड़का है। और मर चुका है। अब तो उसका गुस्सा हवा हो गया। आश्चर्य और भय से उसकी बुरी हालत हो गई। होती भी क्यों नहीं। प्रधान के लड़के की हत्या जो हो गई थी। कुछ देर तक वह माथा पकड़े वहीं बैठा रहा। सहसा उसके मस्तिष्क में विचार आया, "फंसना तो वैसे भी है ही। फिर क्यों न किसी से इस विषय में सलाह मशविरा कर लिया जाए। इसके लिए उसे सापा दादा से ज्यादा उपयुक्त और अच्छा आदमी

कोई नहीं सूझा। वह सीधे सापा दादा के घर की ओर चल पड़ा।

सूरज निकलने से पहले ही वह सापा दादा के यहां जा पहुंचा। सापा दादा कम्बल ओढ़कर हुक्का गुड़गुड़ा रहा था, सुबह-सुबह कोली को द्वार पर पाया देखकर उसकी त्योरियां चढ़ गयीं। लेकिन इससे पहले कि वह मुंह खोलता, कोली उसके पैरों में पड़ गया। वह बोला कुछ नहीं। सापा दादा ने जब उससे बारबार पूछा तो बड़ी मुश्किल से उसने कांपते-कांपते सारी बात कही। सापा दादा ने सारी बात सुनते ही हुक्का एक कोने में खड़ा किया। कम्बल उतार कर अलग रखा। अपने सफरी जूते पहने। कोली यह देखकर मन ही मन खुश हो रहा था। वह समझ रहा था कि सापा दादा उसकी सहायता के लिए तैयार हो रहा है। इतना करने के बाद वह रोब से पत्नी से बोला–"ला जल्दी मेरी लाठी और छतरी। जब इस तीन कौड़ी के कोली ने गांव के प्रधान का लड़का मार दिया है तो इसके लिए मैं क्या चीज हूं। मैं तो गांव छोड़कर अभी जाता हूं।"

अब तो कोली की सारी प्रसन्नता क्षणभर में घोर निराशा में बदल गयी। उसे मौत साक्षात खड़ी नजर आने लगी। एक क्षण वह मौन रहा। फिर तुरंत उसने अपने कानों में पहनी सोने की दो बालियां निकाल कर सापा दादा के पैरों में रख दीं। और गिड़गिड़ाया–" दादा, जीवन भर तुम्हारा अहसान नहीं भूलूंगा मेरे पास और है ही क्या ? किसी तरह मुझे इस विपत्ति से छुटकारा दिला दो। यह कहकर वह फूट-फूट कर रोने लगा।

सापा दादा कुछ देर तक चिन्तन-मनन की मुद्रा बनाये मौन रहा, फिर उसने कोली को आश्वासन देते हुए कहा–"तू घर जा। मैं अभी सब कुछ ठीक कर देता हूं।"

सापा दादा ने कोली की दी हुई बालियां अपने बक्स के हवाले कीं और कोली के पीछे-पीछे उसके घर की ओर चल पड़ा। वहां सचमुच प्रधान का लड़का मरा पड़ा था। सापा दादा ने कोली से एक अच्छी सी चादर मांगी। कोली ने एक के बजाय दो चादरें लाकर दे दीं। सापा दादा ने दोनों चादरों में प्रधान के लड़के की लाश को लपेटा और उसे कंधे पर रख कर चल दिया।

गांव के पास ही मटर का एक हरा भरा खेत था। सापा दादा ने इधर उधर देखा। उसे कोई नहीं दीखा। लाश को उसने एक लकड़ी के सहारे मटर के खेत में बीचों बीच खड़ा कर दिया। और दोनों चादरें लेकर सीधे अपने घर चला गया।

कुछ देर बाद खेत का मालिक आया। उसने देखा कि खेत के बीचोंबीच कोई खड़ा है। उसने मन में सोचा, आज पकड़ा गया है चोर रंगे हाथों। यह सोच कर उसने जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। अब तो उसके क्रोध का ठिकाना न रहा। हाथ में उसके डंडा था ही। तेजी से उधर लपका और आव देखा न ताव एक डंडा उसकी पीठ पर जमा दिया। डंडा पड़ते ही वह कटे हुए केले के पेड़ की तरह जमीन पर आ गया। अब उसने जो कुछ देखा उससे उसकी सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। उसके हाथ से प्रधान का लड़का मर गया था। उसे इतना भय लगा कि चक्कर खा कर जमीन पर गिर गया। बहुत देर तक वह वहीं पड़ा रहा। होश आया तो उसने देखा लाश उसके पास पड़ी है। उसे लगा कि वह कोई डरावना स्वप्न देख रहा है। कुछ देर सोचता रहा। फिर उसने विचार बनाया जो हुआ सो हुआ अब तो इसे यहीं खेत में गाड़ देता हूं। किसी को खबर भी क्या लगेगी। यह सोचकर वह जल्दी से घर गया और कुदाल और फावड़ा ले आया। आते ही लगा गड्डा खोदने।

उधर सापा दादा का माथा ठनका। सोचने लगा कि क्या बात है कि अभी तक यह खबर दबी पड़ी है। दोपहर होने को आ गयी थी। इस बात का पता लगाने के इरादे से वह उस खेत की ओर चल पड़ा। पत्नी भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ी। खेत के नजदीक पहुंच कर उसने देखा कि वहां प्रधान के लड़के की लाश खड़ी नहीं है। अब तो उसे और भी संदेह हो गया। जल्दी ही वह खेत में जा पहुंचा।

मटर के खेत का मालिक गड्डा खोद चुका था। वह लाश को दफनाने वाला ही था कि सापा दादा सहसा उसके पास पहुंच गया। सापा दादा को अपने सामने देखकर उसकी आंखें फटी की फटी रह गयीं। छोटी-मोटी चीज होती, तो कहीं तुरन्त छिपा लेता। भारी भरकम को छिपाना असान न था। सापा दादा ने एक नजर लाश पर डाली फिर उसके चेहरे पर नज़र गड़ा दी। बोला कुछ नहीं। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं। रंगे हाथों जो पकड़ा गया था।

इससे पहले कि सापा दादा उससे कुछ पूछता, वह उसके पैरों में पड़ गया उसने एक ही सांस में सारी कहानी सुना डाली। सापा दादा ने सारी बात सुनकर एक ठंडी सांस छोड़ी। फिर बगल में खड़ी पत्नी की ग्रोर मुखातिब होकर बोला— "जा जल्दी से घर जा। ला मेरी लाठी ग्रौर छतरी। मैं ग्रभी गांव छोड़ कर जाता हूं। इसने गांव के प्रधान का लड़का मार दिया है तो इसके लिए मैं क्या चीज हूं।"

ग्रब तो उस ग्रादमी की हालत ग्रजीबो गरीब हो गयी। ग्रपना समूचा साहस बटोरकर वह बोला—"दादा, ग्रब मेरी जान तुम्हारे हाथ में है। जो हुग्रा सो हुग्रा, मेरे छोटे-छोटे बच्चों का ख्याल करो। किसी भी कीमत पर इस बात को ग्रपने तक ही सीमित रखो।" यह कहते हुए उसने ग्रपने गले से सोने की जंजीर उतारते हुए सापा दादा के पैरों में रख दी ग्रौर ग्रागे बोला—"तुम जानते ही हो कि मुझ गरीब के पास ग्रौर रखा ही क्या है। इस समय यही मेरे पास है। ग्रौर जरूरत पड़ेगी तो पत्नी के सारे जेवर लाकर तुम्हारे चरणों में रख दूंगा।"

सापा दादा ने मन ही मन सोचा, जब लोहा लाल हो तो तुरन्त पीट देना चाहिए। एक क्षण वह कुछ सोचता रहा फिर गम्भीर होकर बोला इससे भला क्या काम चलेगा। प्रधान का लड़का है। कई लोगों का मुंह बन्द करना पड़ेगा। खैर मुझे तो कुछ चाहिए नहीं, लेकिन ग्रौर तो बिना कुछ लिए चुप रहेंगे नहीं। इसलिए मेरी नेक सलाह यह है कि तुम्हारे पास जितना भी सोना चांदी है, ग्रभी लाकर दे दो। तभी बचने की कोई तरकीब निकल सकती है। वरना तुमने ग्रादमी मारा है क्या कोई मजाक है। इसकी सजा फांसी से कम तो होगी ही नहीं। लटको प्यारे फांसी पर।

मरता क्या न करता। वह ग्रादमी भागा हुग्रा घर गया ग्रौर सारे जेवर लाकर उसने सापा दादा को सौंप दिए। जेवर हाथ में लेकर सापा दादा उससे बोला "सारा काम मैं स्वयं करवा लूंगा। तू यहां से दफा हो जा। कोई देख लेगा तो खामखां जान ग्राफत में पड़ जाएगी।"

सापा दादा ने उसी वक्त सारे जेवर ग्रपनी पत्नी को पहना दिए। ढेर सारे जेवरों से लदकर वह फूली नहीं समायी। शाम हो गयी थी। दोनों ग्रपने घर की ग्रोर चल पड़े। कुछ देर बाद वे घर पहुंच गए। पत्नी सापा दादा की चालाकी

और बुद्धिमता को देखकर दंग रह गयी।

इस बीच सारे गांव में शोर मच गया कि प्रधान का लड़का गुम हो गया है। लोग तरह-तरह की अफवाहें फैलाने लगे। जितने मुंह उतनी बातें सुनने में आने लगीं। सारे गांव में तहलका मच गया।

प्रधान की दो पत्नियां थीं। पहली पत्नी की कोई सन्तान नहीं थी। दूसरी का एक लड़का था। प्रधान ने पहली पत्नी के लिए गांव से बाहर एक छोटा सा मकान बनवा रखा था। वह वहीं रहती थी। प्रधान एक रात एक पत्नी के यहां रहता और दूसरी रात दूसरी पत्नी के यहां। पहली पत्नी अपनी सौत के लड़के से बहुत डाह करती थी। सारा गांव इस बात को जानता था।

सापा दादा ने सोचा, "अपने सब दुश्मनों को तो मजा चखा लिया है। अब जरा प्रधानी को भी देखा जाए। आधी रात का वक्त था। सारा गांव सोया हुआ था। वह चुपचाप उठा और मटर के खेत की ओर चल पड़ा। वहां से उसने उस लाश को उसके दरवाजे के बीचोंबीच खड़ा कर दिया। फिर दबे पांव घर आ गया।

संयोग से उस रात प्रधान उसी पत्नी के यहां था। गांव के लोग सुवह बहुत तड़के बिस्तर छोड़ दिया करते हैं। अभी पूरी तरह उजाला नहीं हुआ था। प्रधानी उठी। उसने दरवाजा खोला। देखती क्या है कि द्वार पर फतरू (उस लड़के का नाम था) खड़ा है। उसे पहचान गुस्से में भरी बोली, "फतरू! इतनी सुबह तू द्वार पर क्यों आया है? तेरे बाप को क्या मैं खा लूंगी। सारे गांव में तो चर्चा है फतरू भाग गया है और तू है कि सुबह सुबह द्वार पर भूत सा खड़ा है।" यह कहते हुए वह उसके और नजदीक गयी। उसने उसे हटाने के इरादे से हल्का सा धक्का दिया। वह तो छूते ही धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। उसने उसे टटोला। लेकिन यह क्या हुआ! वह तो ईश्वर को प्यारा हो चुका था। इतने में प्रधान भी अन्दर से उधर आ गया। उसने अपने बेटे फतरू को अपने ही दरवाजे के आगे मरा पड़ा देखा। सिर पीटने लगा अपना वह। प्रधान को यह समझते तनिक भी देर न लगी कि फतरू को उसकी सौतेली मां ने ही मारा है। सारा अपराध सौतेली मां के मत्थे मढ़ गया।

दोनों जोर-जोर से लगे रोने-धोने। गांव वालों को शक करते देर नहीं लगी कि सौतेली मां ने ही बेटे को मारा है। गांव के पंच तब तक आ ही चुके थे। सापा दादा भी आ पहुंचा था। उसने सबसे कहा जो होना था हो गया। अब जल्दी से दाह-संस्कार कर दो। वरना सारा गांव भुतहा हो जाएगा। उसकी सलाह कौन नहीं मानता। मृतक का जल्दी से दाह संस्कार कर दिया गया।

बिमुखा

एक राजा था। उसके चार बेटे थे। सबसे छोटे बेटे का नाम था बिमुखा। बिमुखा बड़ा बुद्धिमान था। जब राजकुमार विवाह योग्य हुए, तो राजा ने एक-एक कर तीन बड़े राजकुमारों की शादी कर दी।

जब बिमुखा की शादी की बात चली तो उसने शादी करने से इन्कार कर दिया। कारण पूछने पर उसने बताया कि वह एक नहीं, बल्कि चार शादियां करना चाहता है। राजा उसे बेहद प्यार करता था। उसने बिमुखा की शर्त मान ली। लेकिन बिमुखा इतने से ही राजी नहीं हुआ। उसने अगली शर्त रखी कि वह राजा, वजीर, धोबी और तेली की लड़कियों से विवाह करेगा। बिमुखा की ऐसी विचित्र और ऊटपटांग शर्त सुनकर राजा बेहद दुखी हुआ। क्रोध से उसने बिमुखा को घर से निकाल बाहर कर दिया। और राजकर्मचारियों को हुक्म दिया कि उसे राज्य से बाहर निकाल दिया जाए।

वजीर और दरबारियों ने बिमुखा को बहुतेरा समझाया-बुझाया किन्तु वह अपनी शर्त से टस से मस नहीं हुआ। उसकी विचित्र शर्त किसी के भी गले नहीं उतर रही थी और राजा की आशा के विरुद्ध भला कौन जा सकता था। अतः बिमुखा को राज्य छोड़कर जाना ही पड़ा।

बिमुखा चलते-चलते एक घनघोर जंगल में जा पहुंचा। थकान मिटाने के इरादे से वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। धुआं इसी झोंपड़ी से आ रहा था। झोंपड़ी के बाहर एक महात्मा बैठे चिलम पी रहे थे। बिमुखा महात्मा के पास गया और उसने उनके चरण स्पर्श किए। महात्मा के मुंह से शब्द फूट पड़े "बच्चा तेरी मनोकामना पूरी हो।" यह सुनकर बिमुखा के मुख पर प्रसन्नता खेलने लगी।

महात्मा ने बैठने का संकेत किया। बिमुखा उनके समीप बैठ गया। महात्मा ने उसका नाम, पता और जंगल में आने का कारण पूछा। उसने बात सच-सच



बता दी। सुनकर महात्मा ने उससे कहा—"बस, सचमुच तेरे भाग्य में चार विवाह हैं। तू चिन्ता मत कर। सब समय आने पर ठीक हो जाएगा।"

महात्मा के बचन सुनकर बिमुखा को धीरज बंध गया। वह मन ही मन प्रसन्नता से फूल कर कुप्पा हो गया। उसने महात्मा के साथ रहने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने उसकी बात सहर्ष स्वीकार कर ली। अब बिमुखा वहीं कुटिया में रहने लगा। बड़ी लगन और निष्ठा के साथ वह महात्मा की सेवा करने लगा। वह सवेरे ब्रहममुहूर्त में उठ जाया करता और रात को जब महात्मा सो जाते तब कहीं जाकर सोता था। दिन भर वह किसी न किसी काम में व्यस्त रहता था। इस तरह वहां रहते-रहते उसे कुछ दिन हो गए। उसे महात्मा की बात पर पूरा विश्वास था। इसलिए वह निश्चिन्त होकर महात्मा की सेवा में रहता हुआ समय का इन्तजार कर रहा था।

जिस राज्य में महात्मा की कुटिया थी, वहां के राजा की एक इकलौती बेटी थी। राजकुमारी परम सुंदरी थी। राजकुमारी का वजीर के बेटे से प्रेम हो गया। बहुत दिनों तक तो उनके प्रेम संबंध की बात छिपी रही। लेकिन आखिर प्रेम भला कब तक छिपा रह सकता है। एक दिन राजा ने दोनों को रंगे हाथों पकड़ लिया, राजा ने इसे अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल समझा। उसने वजीर के लड़के को बहुत डांटा फटकारा। किन्तु वह कर भी क्या सकता था। राजा को इस खबर से बड़ा सदमा पहुंचा और उसने खाट पकड़ ली। सब का ध्यान इस प्रेम सम्बन्ध से हटकर राजा की ओर आकृष्ट हो गया।

अच्छा अवसर देखकर राजकुमारी और वजीर का बेटा अपने-अपने घरों से निकलकर एक बाग में आ मिले। वे दोनों एक पेड़ के नीचे निश्चिन्त हो-कर बतियाने लगे।

बिमुखा इस बाग में रोज फूल लेने आया करता था। उसकी नजर इन पर पड़ी। राजकुमारी को देखकर वह उस पर मोहित हो गया। वह उनके पास ही चला गया। उनके समीप बैठकर वह उनकी बातचीत का रस लेने लगा। वे दोनों बातचीत करने में इतने अधिक खोये हुए थे कि उन्हें वहां किसी तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति का जरा भी आभास नहीं हुआ।

राजकुमारी कह रही थी, "मेरे पिताजी को हमारे प्रेम-सम्बन्ध के बारे में पता चल गया है। लेकिन तुमको जरा भी चिंतित होने की जरूरत नहीं है। कहते हैं, जब मियां बीवी राजी तो क्या करेगा काजी। सो, मैंने इसके लिए एक युक्ति सोची है।"

वजीर के लड़के के पूछने पर वह आगे कहने लगी, "हम दोनों घर से भाग जाएंगे। मैंने एक तरकीब सोची है। आज रात के तीन बजे तुम अस्तबल से कोयल नाम की घोड़ी से आना। इसका इंतजाम मैं सईस से स्वयं करवा लूंगी। फिर मेरे महल की पश्चिम की खिड़की की ओर आ जाना। मैं ऊपर से रस्सी के सहारे नीचे उतर आऊंगी। फिर हम दोनों उस हवा से बात करने वाली घोड़ी पर बैठकर रात खुलने से पहले सैकड़ों कोस दूर निकल जाएंगे।"

वज़ीर का लड़का तो यह चाहता ही था। राजकुमारी का प्रस्ताव उसे बेहद पसन्द आया। उसने इसके लिए उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और उसके जूड़े में एक गेंदे का सुन्दर सा-ताजा फूल लगाने के लिए फूल तोड़ने को लपका। सहसा उसकी नजर बाग में बैठे बिमुखा पर पड़ी। उसने इशारे से राजकुमारी को वहां एक युवक की उपस्थिति होना बताया। उसको देखकर दोनों को शक पड़ गया कि इस लड़के ने अवश्य उनकी गुप्त बातें सुन ली होंगी। उन्हें अपनी सारी योजना गड़बड़ाती नजर आने लगी। इससे पहले कि वे अपनी योजना बदलते, उन्होंने उस लड़के से पूछना उचित समझा। इस ख्याल से दोनों उसके पास गए। फिर वजीर के लड़के ने पूछा—"अरे! तेरा नाम क्या है।"

"बिमुखा है, सरकार।" उसने उत्तर दिया।

"हमने क्या-क्या बात की है? क्या तूने भी कुछ सुना है?" राजकुमारी ने प्रश्न किया।

"हां, हां मैंने सब कुछ समझा और सुन लिया है?" बिमुखा ने बड़ी साव-धानी से उत्तर दिया।

अब तो वजीर के लड़के और राजकुमारी को काटो तो खून नहीं। दोनों भयंकर दुविधा में पड़ गए। अपने को सम्भालते हुए राजकुमारी ने बिमुखा से

कहा —"अच्छा, बिमुखा, सच-सच बता कि तूने क्या-क्या सुना है। मैं तुझे इसके लिए अपनी अंगूठी दूंगी।"

यह सुनकर बिमुखा मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ । एक क्षण उसने सोचने का अभिनय किया। फिर सरलता से बोला–"तुमने सलाह की है कि हम दोनों शाम को शहर से मिठाई लाएंगे। फिर बाग में बैठकर मजे से खाएंगे। इस बिमुखा को नहीं देंगे।"

"अरे, हमने और कुछ कहा है ?" वजीर के लड़के ने तनिक मुसकराते हुए पूछा।

"साहब, मैंने तो जो कुछ सुना है, वह सब सच-सच बता दिया है। अब आप इनाम देने से मुकर जाएं तो मैं गरीब आप लोगों का क्या कर सकता हूं।"

सुनकर राजकुमारी को लगा कि बिमुखा सच ही बोल रहा है। खुश होकर उसने तुरन्त अपनी अंगुली से हीरा जड़ी बहुमूल्य अंगूठी उतारी और बिमुखा के हाथ में पकड़ा दी। बिमुखा बोला–" मैं तो पहनना जानता नहीं, तुम ही पहना दो।" इस पर दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े। हँसते हुए राजकुमारी ने बिमुखा की अंगुली में अंगूठी पहना दी। उसके चेहरे पर हँसी खेलने लगी। इसके बाद वे दोनों वहां से चले गए।

कुटिया में पहुंचकर उसने सारी बात महात्मा को बताई। सुनकर महात्मा ने प्रसन्न होकर उसकी पीठ थपथपाई और साथ ही संकेत किया कि हाथ आए हुए अवसर को नहीं छोड़ना चाहिए। महातमा का संकेत समझते बिमुखा को जरा भी देर न लगी। उसने तत्काल महात्मा के चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लिया और शहर की ओर चल पड़ा। रात होते-होते वह शहर पहुंच गया। वहां वह एक सराय में ठहर गया।

उधर राजकुमारी को भी रात भर नींद नहीं आयी। वजीर के लड़के की भी आंख नहीं लगी। उसे सुबह तड़के तीन बजे घोड़ी लेकर तैयार जो रहना था।

बिमुखा रात के एक बजे के लगभग सराय से शाही अस्तबल की ओर चल पड़ा। ठीक दो बजे वह वहां पहुंच गया। घुप अंधेरा था। पूस की रात थी। मारे ठण्ड के पेड़-पौधे तक सोये हुए थे। सईस घोड़ी लेकर निर्धारित स्थान पर खड़ा था। बिमुखा को उसने अंधेरे में वजीर का लड़का समझा। उसने सलाम ठोका, घोड़ी की लगाम उसके हाथ में पकड़ा दी। बिमुखा घोड़ी लेकर राजकुमारी के महल को चल दिया और सईस अपनी ड्यूटी पूरी कर सोने चला गया। जल्दी ही बिमुखा राजकुमारी के बताए हुए स्थान पर पहुंच गया।

राजकुमारी खिड़की पर बैठकर बड़ी बेसब्री से वजीर के लड़के का इन्तजार कर रही थी। घोड़ी पर बैठे हुए बिमुखा को उसने घुप अंधेरे में वजीर का लड़का ही समझा। पूर्व योजना के अनुसार उसने ऊपर से एक मजबूत रस्सी नीचे फेंकी। बिमुखा ने रस्सी पकड़ ली। राजकुमारी अगले ही क्षण रस्सी के सहारे नीचे आ गयी। नीचे आते ही वह घोड़ी पर सवार हो गयी। घोड़ी सरपट भागने लगी। राजकुमारी को संदेह होने लगा। वह उसे टटोलने लगी। इससे पहले कि वह जाने कि वह वजीर का बेटा नहीं है, बिमुखा उसको लेकर महात्मा की कुटिया पर पहुंच गया। घनघोर जंगल में स्वयं को एक अजनबी के साथ पाकर राजकुमारी भय से थरथर कांपने लगी। महात्मा ने बिमुखा को राजकुमारी के साथ देखा, तो वह भी खुशी से झूम उठा। उसने राजकुमारी के सिर पर हाथ रखते हुए आशीर्वाद दिया—"तुम एक महान रानी होओ।"

राजकुमारी को लग रहा था कि वह स्वप्न देख रही है। वह पश्चाताप की अग्नि में झुलस रही थी। बिमुखा उसकी परेशानी भांप गया। उसने उसी वक्त अपने राजसी वस्त्र पहन लिए। अब तो राजकुमारी की जान में जान आ गयी। राजकुमार ने उसे जब अपना परिचय बताया, तो उसके हर्ष और आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

उधर रात खुलने पर जब राजा को राजकुमारी के रहस्यमय ढंग से वजीर के लड़के के साथ भाग जाने की खबर मिली तो उसके क्रोध का पारावार न रहा। वजीर का लड़का यदि उस समय उसके सामने होता, तो वह उसे कच्चा चबा जाता। उसने तुरन्त घोषणा करवा दी—जो कोई राजकुमारी व वजीर के लड़के को पकड़कर ले आएगा, उसकी शादी राजकुमारी से कर दी जाएगी।

वजीर के लड़के की एक बहन थी । उम्र में वह राजकुमारी के बराबर ही थी । उम्र ही में क्या सुन्दरता में भी वह राजकुमारी से कम नहीं थी । इस घोषणा से उसे लगा कि राजा उसके अपराधी भाई को निस्सन्देह ही फांसी पर चढ़ा देगा । भाई के प्रति उसकी ममता और स्नेह उमड़ आया । भाई के स्नेह का सुख लेने के लिए उसने अपनी पसन्द की कुर्बानी करनी अधिक उचित समझी । तुरन्त उसने भी डुगडुगी पिटवा दी कि जो कोई मेरे भाई को जीते जी ले आएगा और उसे फांसी के तख्ते पर चढ़ने से रोक देगा, उसी के साथ मैं सहर्ष विवाह कर लूंगी ।

घोषणा के बाद उसे सुनकर समूचे राज्य में भूचाल आ गया । सारी प्रजा मारे भय के थर-थर कांपने लगी । लोग आतंकित हो गए । बिमुखा ने भी दोनों घोषणाएं सुनीं । सुनकर वह खुशी से उछलने लगा । एक तीर से उसे दो शिकार साफ मरते हुए नजर आने लगे । राजकुमारी को लेकर वह राजदरबार को चल पड़ा ।

उधर वजीर का लड़का निराशा और भय से आतंकित होकर भटकता-भटकता उसी महात्मा की कुटिया पर पहुंच गया । उसे अत्यन्त दुखी देखकर महात्मा ने उसे अपने पास ठहरा लिया । पूछने पर उसने महात्मा को सारा वृतान्त सुना दिया । महात्मा तो इस घटना से पहले से ही परिचित थे । उन्होंने उसको सान्त्वना दी और धीरज बंधाया ।

बिमुखा राजकुमारी को लेकर सीधे राजा के पास गया । उसने राजा को अपना परिचय दिया । राजा बेहद खुश हुआ । उसने अपनी घोषणा के अनुसार राजकुमारी का हाथ सहर्ष बिमुखा को पकड़ा दिया । शीघ्र ही दोनों का विधिवत विवाह सम्पन्न कर दिया गया ।

राजकुमारी को लेकर बिमुखा दुबारा महात्मा के यहां गया । वहां उसने वजीर का लड़का देखा । अब उसे दूसरी शर्त जीतकर वजीर की बेटी से विवाह करना था । अच्छा अवसर देखकर उसने राजकुमारी को महात्मा के यहां रख दिया और वजीर के बेटे को अपने साथ लेकर राजदरबार की ओर चल पड़ा । राजा के पास जाकर उसने वजीर के लड़के की सजा माफ करवा दी । फिर उसे लेकर वह वजीर के घर गया । बहन भाई को देखकर फूली न समायी । अपनी

शर्त के अनुसार उसने बिमुखा से सहर्ष शादी कर ली । बिमुखा उसे अपने साथ घोड़े पर बैठाकर महात्मा के यहां चल पड़ा । शीघ्र ही वह महात्मा के पास पहुंच गया । इस प्रकार उसने दो विवाह कर लिए । महात्मा का आशीर्वाद और आज्ञा पाकर वह अपनी दोनों पत्नियों को लेकर राजा के यहां आ पहुंचा ।

राजा बहुत बूढ़ा हो चला था । उसने राज्य की बागडोर अपने सुयोग्य दामाद के हाथों में सौंप दी और स्वयं संन्यास लेकर जंगल को प्रस्थान कर गया ।

दोनों रानियां आनन्दपूर्वक दिन व्यतीत करने लगीं । बिमुखा को अभी अपनी शर्त के अनुसार धोबी और तेली की लड़कियों से शादी करनी थी । बस यही चिंता उसे खाये जा रही थी । वह किसी ऐसे उचित अवसर की तलाश में था जिससे कि इन जातियों के साथ सहज ही वैवाहिक सम्बन्ध हो जाए । क्योंकि कोई भी धोबी और तेली राजा से अपनी बेटी व्याहने की कल्पना स्वप्न में भी नहीं कर सकता था ।

समय तेजी के साथ कटने लगा । एक दिन अचानक एक बड़ी दर्दनाक घटना घटी । धोबी की सोलह वर्षीया लड़की को सांप ने डस लिया । लड़की तुरन्त बेहोश होकर गिर पड़ी । किसी ने रोते–बिलखते हुए धोबी को बताया कि राजा विष उतारना जानता है । यदि वह किसी तरह राजा से विष उतरवा दे तो लड़की बच सकती है । धोबी सुनकर कांपता हुआ राजा के पास आया । उसने राजा को सारी बात बतायी । राजा ने सुना तो वह बोला, "धोबी, एक शर्त है । मैं तुझसे जो मांगूंगा, वही देना होगा ।"

"सरकार आपको मैं गरीब क्या दे सकता हूं ? फिर भी इस समय मुझे आपकी हर शर्त स्वीकार है । धोबी ने रुंधे हुए गले से विनती की ।"

राजा अपने अंगरक्षकों के साथ धोबी के घर की ओर चल पड़ा । रास्ते में जो कोई राजा को धोबी के साथ जाता हुआ देखता, आश्चर्य से आंखें फाड़कर देखने लगता । सब राजा की प्रजा के प्रति प्रेम की सराहना करते जाते । कुछ ही देर में राजा लड़की के पास पहुंच गया । उसने मंत्र के द्वारा विष उतार दिया । यह मंत्र उसने महात्मा से सीखा था ।

विष उतरते ही लड़की ने आंखें खोल दीं। देखते ही देखते वह होश में आ गयी। धोबी और उसकी पत्नी की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। दोनों राजा के पैरों में पड़ गए। राजा ने कहा, "धोबी अब अपना वचन निभाओ।" धोबी निःसहाय-सा राजा की ओर ताकने लगा। एक क्षण राजा मौन रहा। फिर बोला—"मैं इस लड़की से शादी करना चाहता हूं।" धोबी को स्वीकार करना पड़ा। इस प्रकार धोबी की लड़की से भी बिमुखा राजा की शादी हो गयी।

धोबी की लड़की की तेली की लड़की से गहरी दोस्ती थी। जब धोबी की लड़की राजा के साथ चलने लगी, तो उसने उसका पल्ला पकड़ लिया और साथ ले चलने का हठ करने लगी। सबने उसे लाख समझाया, लेकिन वह एक न मानी। सब हैरान हो गए कि कैसे क्या करें। राजा ने तेली की आज्ञा लेकर उसकी लड़की के साथ भी शादी कर ली। इस प्रकार तेली और धोबी की लड़कियों से एक साथ विवाह हो गया। दोनों रानियों को लेकर राजा दरबार में पहुंचा। अपनी शर्त के अनुसार उसने चारों लड़कियों से शादी करली। चारों रानियां भी बिना किसी प्रकार का भेद-भाव बरते प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करने लगीं।

———

भाग्यशाली किसान

किसी गांव में एक गरीब किसान था । उसकी तीन लड़कियां थीं । पति-पत्नी दोनों कठोर परिश्रम करके बड़ी कठिनाई से परिवार के लिए दो जून रोटी जुटा पाते थे । किसान बड़ा भोला और सीधा-सच्चा था ।

तीनों लड़कियां जब सयानी हुईं, तो किसान को उनकी शादी की चिंता सताने लगी । लड़कियां रूपवती और स्वस्थ थीं, लेकिन गरीब घर के कारण कोई भी रिश्ता करने के लिए तैयार नहीं हो रहा था ।

एक दिन की बात है । किसान शहर की ओर जा रहा था । सहसा रास्ते में उसकी भेंट एक फकीर से हो गयी । फकीर ने चिंतित किसान से उसकी चिंता का कारण पूछा, जवाब में उसने जवान लड़कियों के विवाह की बात फकीर को बताई । फकीर ने कुछ देर सोचा और किसान से कहा—"तुम अपनी तीनों लड़कियों को क्रमशः गिद्द, बंदर और रीछ को व्याह देना । ये तीनों जानवर तुम्हारे घर बारी-बारी से आएंगे । इनको लड़कियां देने में तुम जरा भी हिच-किचाना नहीं । ये तीनों राजकुमार थे और किसी फकीर के शाप के कारण बंदर, रीछ और गीद्द बने हैं । जब शाप की अवधि समाप्त हो जाएगी तो ये अपने असली रूप में आ जाएंगे ।" यह कहकर फकीर एकाएक किसान की आंखों से ओझल हो गया ।

किसान शहर जाने के बजाय उल्टा घर की ओर चल दिया । उसे लगा कि उसकी चिन्ता का फकीर ने चुटकी बजाते ही हल निकाल लिया है । घर पहुंच कर सारी बात उसने अपनी पत्नी को बताई । सुनकर पत्नी के विस्मय और हर्ष का पारावार न रहा ।

दिन बीतते गए । एक दिन सवेरे किसान के द्वार पर एक बंदर आया । उसने मनुष्य की बोली में किसान से बातचीत की और उसकी सबसे बड़ी लड़की से विवाह करने की इच्छा प्रकट की । फकीर की बात किसान को याद थी । बंदर



को देखकर तो उसका विश्वास पक्का हो गया। उसने अपनी लड़की को फकीर की कही हुई बात बता दी। लड़की बुद्धिमान थी। वह बंदर के साथ विवाह करने के लिए सहर्ष तैयार हो गई। किसान ने लड़की का हाथ बंदर को पकड़ा दिया। बंदर लड़की को अपने साथ लेकर वहां से विदा हो गया।

इसी प्रकार किसान ने शेष दो लड़कियों का विवाह भी क्रमश: रीछ और गिद्द से कर दिया। तीनों लड़कियों को ब्याहने के बाद किसान और उसकी पत्नी अकेले रह गए।

विवाह के बहुत दिन बाद एक दिन किसान की पत्नी ने उससे कहा कि जब से लड़कियों की शादी हुई है, तब से हमने उनकी कुशल-क्षेम नहीं ली। उन्होंने तय किया कि किसान एक-एक करके तीनों लड़कियों के यहां जाएगा।

एक दिन सवेरे किसान सबसे बड़ी लड़की को मिलने के लिए चल पड़ा। काफी लम्बा रास्ता तय कर वह शाम तक बंदर के यहां पहुंच गया। अपने पिता को देखकर पुत्री की आंखों में खुशी के आंसू आ गए। बंदर भी ससुर को देखकर बहुत खुश हुआ। सोचने लगा ससुर की क्या आवभगत करूं। पास ही एक बगीचा था। उसमें आम और जामुन के पेड़ फलों से झुक रहे थे। बंदर उछलता-कूदता गया और देखते ही देखते ढेर सारे आम और जामुन ले आया। किसान अपने दामाद के पराक्रम को देखकर बहुत खुश हुआ। उसने छककर आम और जामुन खाए। फिर सो गया। बंदर ने अपने ससुर को दो–तीन दिन अपने यहां ही रोक लिया। रोज किसान छककर फल डकारने लगा। जब फल खाते-खाते वह ऊब गया, तो उसने घर वापस जाने की इच्छा व्यक्त की। पुत्री और दामाद ने उसको ढेर सारे फल देकर खुशी-खुशी विदा कर दिया।

किसान ने घर आकर पत्नी को सारे हाल-समाचार बताए और साथ ही कहा कि वह दामाद से बिल्कुल नयी तरकीब सीखकर आया है। पत्नी के पूछने पर उसने कहा कि अगले दिन सवेरे तू स्वयं देख लेगी। पत्नी यह सुनकर चुप हो गयी। क्योंकि वह किसान के सीधेपन और मूर्खता से भली-भांति परिचित थी। उसने समझ लिया कि वह कोई ऊटपटांग तरकीब सीख कर आया होगा।

अगले दिन सवेरे मुंह अंधेरे किसान उठा और सीधे गांव के जमींदार के बाग में जा पहुंचा। फिर उसने अपने बंदर दामाद की तरह बाग में अंधाधुंध फल तोड़ने शुरू कर दिए। माली की झोंपड़ी वहीं थी। उसने सोचा बाग में बंदर आए हैं। वह फोरन उठा और बाग में पहुंचा। देखता क्या है कि गांव का किसान पेड़ पर चढ़कर बंदरों की तरह फल तोड़ रहा है। उसने किसान को दो चार गालियां सुनाते हुए तुरन्त नीचे उतरने को कहा। डंडा हाथ में पकड़े क्रोध में कांपते हुए माली को पेड़ के नीचे खड़ा हुआ देखकर किसान की घिग्घी बंध गई। डर के मारे वह चुपचाप नीचे उतर आया। नीचे उतरने पर उसने किसान की वो पिटाई की कि उसे छठी का दूध याद आ गया।

उसके घर पहुंचने से पहले ही पत्नी को सारी बात का पता चल चुका था। अब क्या था। वह किसान की मूर्खता पर बरस पड़ी। किसान भी बहुत पछताया। किसान को स्वस्थ होने में पूरा एक महीना लग गया। सारे गांव में उसकी बदनामी हो गयी। गांव में मुंह दिखाना उसे मुश्किल हो गया।

स्वस्थ होने पर वह अपनी दूसरी लड़की को मिलने के लिए चल पड़ा। पहाड़, नदी, जंगल और बीहड़ रास्ते को पार करता हुआ वह अपने रीछ दामाद के यहां जा पहुंचा। पिता को देखकर वे दोनों खुशी से नाच उठे। रीछ ससुर के चारों ओर चक्कर काटने लगा। फिर अपनी पत्नी के परामर्श पर उसने ससुर की गर्म-गर्म पकोड़ियों से खातिर करनी चाही। पास ही में लोबिया का भरा-पूरा खेत था। रीछ ने पत्नी से कहा कि तू तेल की कड़ाई गरम कर मैं अभी आया। किसान सारी बात को बारीकी से देख सुन रहा था।

रीछ तेजी के साथ लोबिया के खेत में जा पहुंचा। वहां पहुंचते ही लोबिया की फलियों को निगलने लगा तथा कुछ ही देर में काफी फलियां निगल गया। फिर भागता हुआ घर आ पहुंचा। घर पहुंच कर उसने लोबिया की फलियों को ज्यो का त्यों उगल दिया। उसकी पत्नी ने जल्दी से दाने अलग किए और फिर गरम तेल में स्वादिष्ट पकोड़ियां बनायीं। किसान ने पकोड़ियां खायीं। उसे बहुत स्वादिष्ट लगीं। ऐसी पकोड़ियां उसने अपने जीवन में पहले कभी नहीं खायी थीं। वह एक हफ्ते तक वहीं रुक गया। अब तो रोज खूब छकछंक कर पकोड़ियां

खाता और निश्चिंत लेटा रहता। लेकिन इससे भी वह जल्दी ही ऊब गया। उसे अपनी पत्नी की याद सताने लगी। और इससे भी अधिक उसे पत्नी को नयी तरकीब बताने की उतावली परेशान करने लगी। उसने बेटी दामाद से घर वापस जाने की इच्छा व्यक्त की। रीछ ने ससुर के थैले में ढेर सारे मटर और लोबिया भर कर खुशी-खुशी विदा कर दिया।

घर पहुंचने पर किसान ने थैला पत्नी को थमाते हुए कहा, "अरी इस बार तो मैं बहुत ही नयी और लाभदायक तरकीब सीख कर आया हूं।" पत्नी ने व्यंग्य कसते हुए जवाब दिया," जैसी तरकीब पहले सीखी वैसी ही घुटने फुड़वाने वाली तरकीब यह भी होगी।" इस पर किसान ने उसे विश्वास दिलाते हुए समझाया कि यह तरकीब वैसी नहीं है। पत्नी ने तरकीब जानने की जिज्ञासा जाहिर की तो किसान ने पहले की ही तरह जवाब दिया कि अगले दिन वह खुद देख लेगी। पत्नी नाराज हो कर सो गयी। किसान भी सो गया। रात भर उसे नींद नहीं आयी। सोचता रहा कब रात खुले और कब वह अपनी नई तरकीब से पत्नी को अचम्भे में डाले।

सुबह होते ही किसान उठा। पत्नी सो रही थी। उसने उसे जगाया। फिर उससे कहा कि तू कढ़ाई में तेल गरम कर रखना, मैं आनन फानन में आता हूं। यह कह कर वह लोबिया के खेत की ओर चल पड़ा। आनन फानन में खेत में जा पहुंचा। अब क्या था। रीछ की तरह वह भी लोबिया की फलियां डकारने लगा कुछ ही देर में, उसका पेट भर गया। दौड़ता हुआ घर आया। पत्नी उसकी आज्ञा के अनुसार तेल की कढ़ाई गरम कर उसकी प्रतीक्षा में बैठी हुई कुढ़ रही थी। किसान घर पहुंचते ही जमीन पर लेट गया। पेट दर्द के कारण वह तड़पने लगा। अब तो पत्नी का सारा क्रोध हवा हो गया। किसान को मरणासन्न देखकर उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। उसने सोचा, इसकी यह तरकीब जान लेकर ही रहेगी। वह मूर्ख पति की बुद्धिमान पत्नी थी। वह घबरायी नहीं। तुरन्त गांव के वैद्य को बुलाकर ले आयी। वैद्य ने किसान की हालत देख कर उसे उल्टी होने की दवा दी। कुछ देर बाद उसे उल्टियां होने लगीं। उल्टी में निरे लोबिये निकलने लगे। यह देखकर सब उसकी मूर्खता पर हँसने लगे।

इस बार किसान को पूर्ण स्वस्थ होने में दो महीने लग गए। पत्नी उसकी बीमारी से तंग आ गयी। स्वस्थ होने पर किसान ने सबसे छोटी लड़की के यहां जाने का विचार बनाया।

अगले दिन वह गिद्ध दामाद के यहां चल पड़ा। गिद्ध का घर एक पहाड़ी पर था। किसान में पहले जैसी चलने की हिम्मत नहीं थीं। लगातार दो दिन के चलने के बाद कहीं जाकर तीसरे दिन वह गिद्द के यहां पहुंच पाया। बेटी और दामाद किसान को देखकर बेहद प्रसन्न हुए। गिद्द ने अपनी पत्नी से कहा कि ससुर जी की हम क्या सेवा कर सकते हैं? उत्तर में पत्नी ने बताया कि पिता जी ने अपने गांव से बाहर बहुत ही कम देखा है। इस लिए उनको सैर करवानी चाहिए। पत्नी का सुझाव गिद्द को जंच गया। ससुर को अपने पंखों में बैठा कर उड़ने लगा। कुछ ही समय में उसने ससुर को दुनिया का एक बड़ा भारी भाग दिखा डाला। अजीबोगरीब दुनिया देखकर किसान के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसे लगा कि वह जीते जी स्वर्ग पहुंच गया है। फिर क्या था। गिद्द रोज ससुर को सैर कराने लगा। लेकिन इस सैर से भी किसान कुछ दिन बाद ऊब गया। वह नयी तरकीब सीख गया था। सोचने लगा, "इस बार तो पत्नी को अपनी कला दिखा के ही रहूंगा।"

किसान ने घर वापस लौटने की इच्छा व्यक्त की, तो गिद्द ने तुरन्त उसे अपने पंखों में बैठाया और कुछ ही समय में उसे उसके गांव के पास छोड़कर वापस चला आया। इस बार किसान को वापस जाने में बिलकुल भी समय नहीं लगा। कुछ ही देर में वह घर पहुंच गया। घर पहुंच कर पत्नी से डींगे हांकने लगा। जैसा उसने देखा था, वह सब पत्नी को कह सुनाया। यह कह कर उसने पत्नी से कहा कि यदि वह भी वैसा देखना चाहती है, तो तैयार हो जाए। पत्नी की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने नहा धोकर नये-नये कपड़े पहने। और जल्दी ही बन ठन कर तैयार हो गयी। किसान ने अपने साथ दो सूप (जिससे अन्न साफ किया जाता है) और मजबूत-सी दो रस्सियां लीं और पत्नी को साथ लेकर पहाड़ की चोटी की ओर चल पड़ा। कुछ ही देर में दोनों चोटी पर पहुंच गए।

चोटी पर पहुंच कर किसान ने दोनों सूपों को अपनी दोनों बगलों में कसकर

बांधा। फिर पत्नी से अपनी पीठ पर चढ़ने के लिए कहा। पत्नी ने वैसा ही किया। पीठ पर पत्नी के बैठते ही किसान ने हुरर------कहते हुए उड़ने के उद्देश्य से नीचे छलांग लगा दी। अगले ही क्षण वह पत्नी समेत नीचे गड्ढे में जा गिरा। गिरते ही दोनों की हड्डी पसली एक हो गयी।

संयोग से उसी समय गिद्द उड़ता हुआ उधर आया। उसकी नजर उन पर पड़ी। वह अपने सास–ससुर को पहचान गया। उसने तुरन्त बंदर और रीछ को खबर दी। वे दोनों भी वहां आ पहुंचे। बंदर कहीं से एक जड़ी खोद लाया। उन दोनों की सांस चल रही थी। बंदर ने उनको जड़ी सुंघायी। जड़ी सूंघते ही दोनों होश में आ गए। फिर रीछ ने एक और जड़ी ढूंढ़ निकाली। उसको पानी में घिसकर उनके सारे बदन पर लगाया। कुछ समय पश्चात दोनों स्वस्थ हो गए।

इस बीच बंदर, रीछ और गिद्द के शाप की अवधि समाप्त हो गयी। तीनों के तीनों खूबसूरत नवयुवकों में बदल गए। वे तीनों भाई एक राजा के लड़के थे। अपने सास-ससुर को लेकर तीनों अपने राज्य की ओर चल पड़े।

तब से किसान और उसकी पत्नी जीवन पर्यन्त उन्हीं के यहां रहे और तीनों राजकुमार अपनी पत्नियों के साथ सर्व सुख भोगते हुए आनन्द से रहने लगे।

पौमू दा

किसी गांव में पौमू नामक एक आदमी रहता था। उम्र उसकी पैंतीस–छत्तीस की रही होगी। गांव में जो काम किसी से न होता, वह पौमू कर दिया करता था। धीरे-धीरे उसका नाम आसपास के गांवों तक फैल गया। अब लोग उसे पौमू दा (भाई) कहकर पुकारने लगे।

पौमू दा अच्छे खाते पीते घर का था। वह अविवाहित था। इसका कारण था, जब तक उसकी अवस्था पच्चीस तीस के आसपास थी, तब तो उसने विवाह किया नहीं और जब वह पैंतीस पार कर गया तब कोई उससे विवाह करने को तैयार नहीं हुआ। बस इसी में मारा गया बेचारा पौमू दा।

जवानी में तो उसने न विवाह की आवश्यकता महसूस की और न ही उपयोगिता समझी। लेकिन उम्र पक्की होते ही उसे ऐसा लगने लगा कि बिना विवाह के जीवन व्यर्थ है। अब क्या था। विवाह करने की धुन उसके सिर सवार हो गयी। कोई सगा-सम्बन्धी अथवा रिश्तेदार उसका ऐसा था नहीं, जो उसकी शादी की बात चलाता। अतएव उसने अपने आप अपने लिए पत्नी ढूंढ़ने का निश्चय किया।

पौमू दा एक दिन अपने घर से बाहर चल पड़ा। चलते चलते वह एक गांव में पहुंच गया। वह चतुर लोगों का गांव था। जो भी उस गांव में पहुंच जाता, बिना ठगे हुए वापस न आता। चाहे कोई कितना ही चतुर चालाक क्यों न होता, लेकिन गांव के घाघ ठगों से पार पाना बड़ा मुश्किल था।

रात पड़ गई थी। पौमू दा को उसी गांव में रात व्यतीत करनी थी। वह पूछते-पूछते गांव के प्रधान के घर जा पहुंचा। उसने प्रधान से एक रात ठहरने के लिए जगह मांगी। प्रधान ने आने का कारण व परिचय आदि पूछा, तो पौमू दा ने सब कुछ सच सच बता दिया। सुनकर प्रधान बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, आज तो बहुत दिनों के बाद भाग्य से मोटी मुर्गी हाथ आयी है। यह सोचकर उसने पौमू दा को खूब स्वादिष्ट भोजन कराया और फिर अलग कमरे में सुला दिया।



इसके बाद प्रधान ने रात में ही गांव के लोगों की एक बैठक बुलायी। बैठक में पौमू दा को ठगने का बाकायदा कार्यक्रम बनाया गया । इसके बाद सब लोग अपने अपने घर सोने चले गए।

प्रधान की थीं दो पत्नियां। एक विवाहिता और दूसरी वैसे ही भगा कर लायी हुई । दूसरी पत्नी बेहद खूबसूरत और जवान थी । पौमू दा और प्रधान की बातचीत वह बड़े ध्यान से सुन रही थी। बातचीत सुनते हुए उसने मन ही मन पौमू दा के साथ भाग जाने की योजना बना डाली।

जब प्रधान पौमू दा को सुलाकर गांव में चला गया तो वह दबे पांव पौमू दा के पास आयी । पौमू दा को अपरिचित स्थान पर नींद नहीं आ रही थी । वह जगा हुआ था । उसने जाकर पौमू दा को सारी बात बतायी और साथ ही उससे कहा कि हम दोनों यहां से भाग जाएंगे। अंधे को क्या चाहिए दो आंखें । पौमू दा तुरन्त तैयार हो गया। इसके बाद वह वापस चली गयी और कुछ ही देर बाद ढेर सारे गहने साथ लेकर चुपचाप पौमू दा के पास आ गयी।

उधर प्रधान पौमू दा को ठगने की बात सोच रहा था और इधर पौमू दा उसकी पत्नी को लेकर आधी रात में ही नौ दो ग्यारह हो गया। और सुबह होते-होते पौमू दा प्रधान की पत्नी को लेकर अपने घर पहुंच चुका था।

भोर होते ही पौमू दा को ठगने के इरादे से गांव के पांच सात छंटे हुए आदमी प्रधान के मकान पर आ पहुंचे । प्रधान सोया हुआ था। उसकी पत्नी ने उसे उठाया। वह हड़बड़ाकर बाहर आया । फिर सीधा उस कमरे की ओर चल पड़ा, जहां पौमू दा को सुला रखा था। देखता क्या है कि पौमू दा नदारत है । उसने तनिक गुस्से में आकर पत्नी से पूछा—"असाडू की मां, मेहमान कहां है ?" उत्तर में पत्नी ने अपनी अनभिज्ञता प्रकट की।

प्रधान ने फिर पूछा—"और छोटी मां (दूसरी पत्नी) कहां है ?" "लेकिन उसका भी पता नहीं है।"—उसने बड़ी मायूसी से उत्तर दिया। यह सुनकर प्रधान को समझते देर न लगी कि जिसको ठगने की वह रात योजना बना रहा था, वह उसी को ठग कर चला गया है। यह जानकर वह सिर पीटकर बैठ गया।

धीरे धीरे सबको वास्तविक स्थिति का ज्ञान हो गया। अब तो वहां उपस्थित आदमी एक एक कर खिसकने लगे।

सारे गांव में खबर फैल गयी कि पौमू दा उड़लख्या कज्याण (भगा कर लायी गयी औरत) ले आया है। कुछ उसकी प्रशंसा करने लगे और कुछ नाक भौं सिकोड़ने लगे। किन्तु उस पर किसी भी बात का कोई असर न पड़ा। उसे तो अपने काम से मतलब रहता था। उसकी बला से भाड़ में जाए दुनिया।

पौमू दा पत्नी के साथ आनन्द के साथ समय व्यतीत करने लगा। समय बीतता गया। दो-चार महीने तो उसके बड़े मजे में बीते, किन्तु उसके बाद उसकी पत्नी बात-बात पर उससे लड़ने लगी। वह कई घर होकर आयी थी जहां भी जाती, उसका यही हाल था। पौमू दा को अपनी इज्जत रखने के लिए उसकी हर उचित अनुचित मांग और बात माननी पड़ती थी। किन्तु फिर भी रोज खटपट बढ़ती ही गयी।

एक दिन पौमू दा किसी काम से शहर गया हुआ था। शाम होने पर वह वापस घर आया। देखता क्या है पत्नी खाट पर लेटी हुई है। कारण पूछने पर पत्नी बोली–"मेरे लिये सात सियारों की सात साबित खालें ला, तब मैं तेरे घर रहूंगी, वरना सम्भाल अपना चूल्हा-चक्की मैं जाती हूं।"

यह सुनकर पौमू दा हक्का-बक्का रह गया। सोचने लगा यह कैसी विचित्र शर्त है। उसने उसे लाख समझाया-बुझाया किन्तु वह टस से मस नहीं हुई। अन्त में पौमू दा को विवश होकर यह शर्त स्वीकार करनी पड़ी।

पोमू दा के पास जमीन जायदाद और धन सम्पत्ति बहुत थी। आगे पीछे उसका कोई था नहीं। पत्नी सोचती थी कि किसी तरह यह बूढ़ा मर जाए, तो फिर खूब गुलछर्रे उड़ाए। इसी उद्देश्य से उसने पौमू दा के सामने इतनी कठिन शर्त रखी थी।

पौमू दा को उस रात नींद नहीं आयी। रात भर सोचता रहा कि वह कैसे सात सियारों की खालें लायेगा। एक दो खाल होती तो ले भी आता; लेकिन

सात खालें लाना कितनी टेढ़ी खीर है और वह भी सियार जैसे चालाक जानवर की। इसी उधेड़बुन में सुबह हो गयी। वह उठा। नित्य कार्य से निवृत्त होकर उसने थोड़ा-बहुत कलेवा किया और फिर चल पड़ा जंगल की ओर।

जंगल गांव से अधिक दूर नहीं था। जल्दी ही वह वहां पहुंच गया। वह एक पेड़ के नीचे बैठकर सुस्ताने लगा। तभी सहसा उसके मस्तिष्क में एक तरकीब सूझी। वह पक्षियों के पंख एकत्र करने लगा। कुछ देर में उसने ढ़ेर सारे पंख इकट्ठे कर लिये।

अचानक उधर से एक सियार गुजरा। सियार ने किसी आदमी को कभी भी इस तरह पक्षियों के पंख एकत्र करते नहीं देखा था। वह पौमू दा के पास आया और उसने उसका नाम और पंख एकत्र करने का कारण पूछा। पौमू दा ने बड़ी आत्मीयता से उत्तर दिया--"सियार भय्या, मेरा नाम पौमू दा है। क्या तुझे नहीं मालूम है कि महाप्रलय होने वाली है। महाप्रलय से बचने का बस एक ही उपाय है। उड़कर भाग जाना। सो, मैं पंख एकत्र कर रहा हूं। पंख अपने बदन पर लगाकर मैं फुर्र से उड़ जाऊंगा।"

महाप्रलय का नाम सुनकर सियार के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गयी। एक क्षण वह खड़ा का खड़ा रह गया। फिर पौमू दा के पैरों में सिर रखकर बोला--"पौमू दा, मेरे परिवार में सात सदस्य हैं। मैं तुम्हारे पैर पड़ता हूं। पहले हम पर पंख लगा दो। ताकि हम महाप्रलय आने से पहले ही उड़ जाएं। तुम तो पंख लगाने का काम जानते ही हो, अपने पर बाद में भी लगा सकते हो हमारी रक्षा करो।"

पौमू दा तो ऐसे मौके की तलाश में था ही। कुछ देर वह मौन रहा। फिर सियार की प्रार्थना उसने स्वीकार कर ली। उसने सियार से अपने बाल-बच्चों को लाने के लिए कहा। सियार की खुशी का ठिकाना न रहा। वह प्रसन्नता से उछलता-कूदता अपने घर की ओर चल पड़ा।

सियार के जाते ही पौमू दा ने दरांती पैनी करनी शुरू कर दी। दरांती तेज कर वह फिर पहले की तरह पंख एकत्र करने में जुट गया।

उधर सियार कुछ ही देर में अपने घर जा पहुंचा। पत्नी को उसने महाप्रलय और पंख लगाकर उड़ने वाली सारी बात बतायी। सुन कर वह भी बड़ी खुश हुई। तुरन्त सपरिवार चलने के लिए तैयार हो गयी।

अब सात सदस्यों का भरा-पूरा सियार परिवार पौमू दा के पास पहुंच गया। सियार को सियारनी और बच्चों सहित आता देखकर पौमू दा की बांछें खिल गयीं। उसे अपनी योजना सफल होती हुई नजर आने लगी।

सियार को सामने देखकर पौमू दा ने उसको बैठने का संकेत किया। वे सबके सब संकेत पाते ही चुपचाप बैठ गए। जब वे बैठ गए, तो सियार की ओर मुड़कर पौमू दा बड़े प्रेम से बोला --'सियार भाई, तुम सब एक पंक्ति में बैठ जाओ। फिर एक-एक कर मैं तुम्हें बुलाऊंगा और पंख लगा कर उड़ा दूंगा। लेकिन एक बात है तुम सब आंखें बन्द कर चुपचाप बैठ जाओ। यदि किसी ने बीच में आंख खोली तो उसकी आंखें फूट जाएंगी।"

अगले ही क्षण सबके सब सियार पंक्ति बनाकर बैठ गए। फिर सबने अपनी आंखें मीच लीं। अब पौमू दा ने आवाज दी, सियार उसके पास गया। उसने सियार के हाथ-पैर एक पेड़ से मजबूत रस्सी से बांधे और फिर तेज धार वाली दरांती से उसकी खाल निकालने लगा। सियार को असहनीय दर्द हुआ, तो उसने आह, आह की आवाज की। यह सुनकर पौमू दा ने धमकी भरे स्वर में कहा--"जरा सी आई-वाई की, तो पंख नहीं लगाऊंगा।" अब तो सियार विवश होकर चुपचाप दर्द सहता गया। कुछ ही देर में उसका प्राणान्त हो गया। पौमू दा ने तेजी से उसकी खाल उतारी और मरे सियार को एक ओर फैंक दिया।

इसके बाद सियारनी गयी। उसका भी यही हाल हुआ। उसके बाद सियार का सबसे बड़ा बच्चा गया। पौमू दा उसकी भी खाल उतारने लगा।

सियार के चार बच्चे चुपचाप आंख मीचे अपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनमें जो सबसे छोटा सियार था। वह एक आंख का काना था। लेकिन था बड़ा होशियार और चालाक। अपने माता-पिता और भाई की आह-आह सुनकर उसका माथा ठनक गया। उसे लगा कि दाल में

अवश्य कुछ काला है। अब क्या था। नाना-प्रकार के विचार और भाव उसके मस्तिष्क में चढ़ने उतरने लगे। उससे न रहा गया। उसने सोचा, "एक आंख तो फूटी हुई है ही दूसरी भी फूट जाएगी तो क्या फर्क पड़ता है। लेकिन आंख खोलकर देख तो लू कि आखिर मामला है क्या।" यह सोचकर उसने धीरे से अपनी आंख खोली, उसने जो कुछ देखा उस से उसके रोंगटे खड़े हो गए। पौमू दा के वेश में काल उसे साक्षात दिखाई दिया। उसने अपनी बगल में बैठी बहन को सचेत किया। उसका संकेत समझ कर उसने भी आंखें खोल दीं।

अपने भाई और माता-पिता की लाशें देख कर उसके मुंह से एक भंयकर चित्कार निकल पड़ी। जिससे उसके और भाइयों ने भी घबरा कर आंख खोल दी। फिर तो मारे भय और आंतक के वे चारों भाई सिर पर पैर रखकर बेतहाशा भागने लगे। और चार पांच मील भागकर ही उन्होंने चैन की सांस ली। सब भाई बहन काने भाई की बुद्धि और सूझबूझ की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे।

उधर पौमू दा के पास सियारों की तीन खालें हो गयी थीं। उसने खालें उठाई और घर की ओर चल पड़ा। अब उसे चार खालें और जुटानी थीं। घर पहुंच कर उसने तीन खालें पत्नी को दीं और शेष चार खालें अगले दिन लाने का वायदा किया। पत्नी तो सात खालें चाहती थी। वह तीन खालें पाकर खुश नहीं हुई। ऐंठी ही रही।

पौमू दा खाना खाकर सोने चला गया। लेकिन चिंता के मारे उसे रात भर नींद नहीं आयी।

अगले दिन बड़े तड़के सबेरे ही उठकर जंगल की ओर चल पड़ा। इस बार वह अपने साथ कुदाल और फावड़ा भी लेता गया।

जल्दी ही पौमू दा जंगल पहुंच गया। एक पेड़ के नीचे वह विचार मग्न बैठ गया। सहसा उसे एक नयी तरकीब सूझी। वह गड्डा खोदने लगा। संयोग से उधर चार सियारों की एक टोली आ पहुंची। टोली के

सरदार सियार ने पौमू दा से उसका नाम और गड्ढा खोदने का कारण पूछा। जवाब में पौमू दा ने उसे बताया––"सियार भाई, मेरा नाम पौमू दा है। मैं अभी-अभी शहर से आया हूं। शहर में खबर है कि राक्षस आ रहा है। वैसे जंगल में तो राक्षस ने जो गजब ढाया है, वह तुमसे क्या कहूं तुम जानते ही होगे।"

सियार ने यह सुनकर और जानने की उत्सुकता प्रकट की। सियार को व्यग्र देखकर पौमू दा बोला––"क्या तुमने जंगल में पड़ी अपने भाइयों की लाशें नहीं देखी हैं, राक्षस किस नृशंसता से उनकी जीते जी खालें उतार कर ले गया है। लगता है, तुम ने नहीं देखी हैं। यदि तुम देख गये होते, तो इतनी बेफिक्री से इधर-उधर न घूमते होते। आओ मैं तुम्हें उनकी लाशें दिखाता हूं, ताकि तुम्हें विश्वास हो जाए।"

यह कहते हुए पौमू दा ने उन्हें अपने साथ चलने को कहा। अब आगे-आगे पौमू दा और उसके पीछे चलने लगे चार सियार। कुछ देर बाद वे उस स्थान पर पहुंच गए, जहां सचमुच चार सियारों की लाशें बिखरी पड़ी थीं। उनके शरीर बिना खाल के पड़े थे। सियारों ने देखा....तो उनके रोंगटे खड़े हो गए। मारे भय के वे थर-थर कांपने लगे।

उचित अवसर और अनुकूल स्थिति देखकर पौमू दा बोला, "राक्षस के भय के कारण ही मैं गड्ढा खोद रहा हूं। इससे पहले की राक्षस आये, मैं गड्ढे में छिप जाऊंगा। जब राक्षस वापस चला जाएगा, तो फिर बाहर आ जाऊंगा। राक्षस से बचने का इसके अतिरिक्त इस समय और चारा ही क्या है।"

यह सुन कर सियारों का सरदार पौमू दा के पैरों में पड़कर गिड़गिड़ाने लगा ––"पौमू दा, मैं तुम्हारे पैरों पड़ता हूं। हमारी जान बचा दो। हम जीवन भर तुम्हारा उपकार नहीं भूलेंगे। हमारे लिए भी एक बड़ा-सा गड्ढा खोद दो। फिर जब राक्षस जंगल से बाहर चला जाएगा, तो हम निश्चिंत होकर जंगल में रहने लगेंगे।" बात समाप्त करते ही सियार रोने लगा।

पौमू दा अहसान जताते हुए बोला—"वैसे तो वक्त अब बिल्कुल भी नहीं है। जब तक मैं तुम्हारे लिए गड्ढा खोदता हूं तब तक तो राक्षस इधर आ ही धमकेगा, लेकिन तुमको मैं उसे खुदे हुए गड्ढे में छिपा देता हूं और अपने लिए दूसरा गड्ढा खोदता हूं। इससे ज्यादा मैं कर ही क्या सकता हूं।"

चारों सियार खुशी से झूम उठे। सब पौमू दा के पैरों में सिर टेकने लगे, वे पौमू दा के साथ गड्ढे की ओर चल पड़े। कुछ देर बाद वे गड्ढे के पास पहुंच गए।

एक-एक कर गड्ढे के अन्दर जाने लगे। चौथा सियार गड्ढे में जाने ही वाला था, तभी उनके कानों में आवाज पड़ी—"पौमू दा आ गया है, पौमू दा आ गया है।" यह आवाज उस काने सियार की थी। संयोग से वह अपने भाइयों के साथ उधर आ पहुंचा था। पौमू दा को देखकर अपने भाइयों को सचेत करने के उद्देश्य से वह चिल्लाया था।

चौथे सियार ने चेतावनी को समझ लिया। वह गड्ढे में जाने की अपेक्षा हड़बड़ा कर उसी ओर भाग खड़ा हुआ, जहां से आवाज आ रही थी। उसके भागते ही पौमू दा ने तेजी से गड्ढे को मिट्टी से पाट दिया।

अब तीन सियार उसके कब्जे में आ गये थे। इसके बाद उसने गड्ढे के ऊपर आग जला दी। कुछ ही देर में वे तीनों सियार ठंडे हो गये।

पौमू दा ने गड्ढा खोला, सियारों की खाल उतार ली और एक को वैसे ही कंधे पर रखकर घर की ओर चल पड़ा।

घर पहुंच कर पौमू दा ने दो खालें अपनी पत्नी को सौंप दीं और मरे हुए सियार को एक कोने में रख दिया। फिर उसने खाना खाया और सोने को चला गया। अभी उसने पत्नी की शर्त पूरी करनी थी। कुल मिलाकर छह सियारों की खालें तो ले आया था। किन्तु एक खाल की कमी पड़ गयी। आधी रात तक उसे नींद नहीं आयी। वह सातवीं खाल लाने के बारे में माथा-पच्ची करता रहा। अन्त में उसे एक कारगर तरकीब सूझ ही गयी। तरकीब निकलते ही उसकी आंखें लग गयीं।

अगले दिन सुबह वह देर से उठा । नाश्ता किया । फिर सियार को उसने कंधे पर उठाया और चल पड़ा । लेकिन इस बार वह जंगल की ओर नहीं वल्कि अपने मक्का के खेत की ओर गया । जल्दी ही वह मक्का के खेत में पहुंच गया । खेत में मक्का पक रही थी । उसने एक बड़ा गड्ढा खोदा । फिर उसके ऊपर पुआल बिछा दिया । इसके बाद सियार को पास ही खड़ा कर दिया ।

उस मक्का के खेत में सियार भूलकर भी नहीं आते थे । इसका कारण यह था कि एक बार उस खेत में किसी ने बहुत पहले एक सियार मार दिया था उस खेत के आसपास तो सियार आते थे, किन्तु उस खेत में पैर नहीं रखते थे । शायद वे उसे खूनी खेत समझते थे

हमेशा की तरह दोपहर को सियारों की एक टोली मक्का के खेतों में आ धमकी । उस खेत में अपने बन्धु सियार को देखकर दो चार सियार उस खेत की तरफ लपके । देखते ही देखते वे उस मरे हुए सियार के निकट पहुंच गए ।

उस टोली में वह काना सियार भी था । उसे कुछ शक पड़ गया । उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई । अचानक उसकी नजर खेत के एक कोने में छिपे पौमू दा पर पड़ गयी । अब क्या था । उसे पहचानते ही वह चिल्ला उठा— "पौम दा छिपा हुआ है, पौमू दा छिपा हुआ है ।"

अब तक पौमू दा के नाम से जगल के सारे सियार पूर्णतया परिचित हो गये थे । सुनते ही सब अपनी-अपनी जान बचा कर सिर पर पैर रख कर भागने लगे । सियारों की भगदड़ में एक सियार उस गड्ढे में गिर गया । वह गिरा तो फिर दुबारा नहीं उठ सका । मौका देखकर पौमू दा ने गड्ढे को ऊपर से पाट दिया । बेचारा सियार कुछ देर बाद दम घुटने के कारण मर गया ।

कुछ देर बाद पौमू दा ने गड्ढे में पड़े सियार को बाहर निकाला । फिर उसनें दोनों सियारों की खाल उतारी । दो खालें लेकर वह घर की ओर चल पड़ा ।

उस दिन उसका रोम-रोम प्रसन्नता से पुलकित हो रहा था। घर जाते ही उसने दोनों खालें अपनी पत्नी को सौंप दीं। सात खालें पाकर पत्नी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसकी शर्त पूरी हो गयी थी।

पौमू दा पत्नी की स्थिति को भांप गया। उसने चुनौती के स्वर में कहा, "सात सियारों की खालें हाजिर हैं। अब यदि तू कहे तो मैं सात शेरों की अथवा सात आदमियों की खालें भी ला सकता हूं।"

यह सुनकर पत्नी डर के मारे पसीना-पसीना हो गयी। अपनी हार स्वीकार करते हुए वह पौमू दा के पैरों में पड़कर क्षमा मांगने लगी। पौमू दा ने उसे क्षमा कर दिया।

तब से दोनों पति-पत्नी हँसी-खुशी के साथ जीवन यापन करने लगे। इसके बाद पत्नी ने कभी पौमू दा को जरा भी जाने अनजाने परेशान नहीं किया। जीवन पर्यन्त दोनों मजे से खाते-पीते आनन्द मनाते रहे।

अनमती-धनमती

किसी जंगल में एक सियार रहता था । उसके परिवार में पत्नी और बच्चे मिलाकर कुल सात प्राणी थे । सियार आलसी था । हर वक्त घर में पड़ा रहता था। सियारनी मेहनती थी। किसी तरह वह परिवार का भरण पोषण करने लगीं ।

एक समय की बात है । सियारनी को गर्भ ठहर गया । उसने सियार से कहा, "हमारे पास सिर छिपाने के लिए एक छोटा-सा घर भी नहीं है। तुम किसी तरह एक घर बना डालो ।" सियार ने पहले तो पत्नी की बात हँसी में टाल दी, लेकिन जब उसने बारम्बार आग्रह किया तो उसकी सलाह माननी ही पड़ी।

अगले दिन से सियार सुबह खा-पीकर घर से निकल जाता । दिन भर वह पैर पसार कर धूप में लेटा रहता और सूरज छिपते ही घर पहुंच जाया करता । घर आते ही धड़ाम से जमीन पर लेट जाता । पूछने पर बताता कि मकान बनाना हँसी खेल नहीं है । कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। सियारनी और बच्चे यह सुन कर बेहद खुश होते । इसी तरह वह रोज घर से निकल जाता और अंधेरा होने पर लौटता । वह कभी कहता कि दो दीवारें पूरी हो गयी हैं तो कभी बताता कि अब छत पड़नी बाकी रह गई है। उसकी बात पर सब विश्वास कर लेते ।

काफी दिन बीत गये, लेकिन उसका मकान बन कर तैयार ही नहीं हुआ। जैसे-जैसे सियारनी के प्रसव का समय नजदीक आने लगा उसे चिन्ता सताने लगी। लेकिन सियार मस्ती की छान रहा था।

एक दिन सियारनी ने बताया कि उसे प्रसव पीड़ा शुरू हो गई है। इस लिए मकान जितना और जैसा भी बना है, हम उससे गुजारा कर लेंगे। अब सियार क्या करता। सबको लेकर चल पड़ा।



पत्नी और बच्चे नये मकान में जाने के लिए खुश थे, लेकिन सियार की तो जान सूखी चली जा रही थी। उनको लेकर जाये तो जाये कहां ? अब झूठ का फल मिलेगा । यही सोचता हुआ वह उदासी को छिपाये चला जा रहा था ।

चलते-चलते उसके मन में विचार आया कि क्यों न बाघ की अनुपस्थिति में उसकी मांद पर कब्जा कर लिया जाए। जो कुछ होगा देखा जाएगा। यह सोचकर वह मन-ही-मन प्रसन्नता से उछलने लगा। अब तो वह डींग हांकते हुए पत्नी से कहने लगा—"मैंने इतना बड़ा घर बनाया है कि उसमें शेर-बाघ तक का परिवार आसानी से आ सकता है। मुझे खबर मिली है कि बाघ हमारे नए मकान पर कब्जा करना चाहता है । लेकिन मैं भी कम नहीं हूं। बाघ क्या उसका बाप भी हमारे घर में जबर्दस्ती नहीं घुस सकता है । जरा घर में घुसने की हिम्मत तो करे। वह मजा चखाऊंगा कि याद करेगा ।"

संयोग से बाघ उस समय शिकार करने गया हुआ था । उसके इतना कहते-कहते बाघ की मांद आ गयी और उसने घर की चौकीदारी पर बन्दर को बैठाया हुआ था । चालाक सियार को समझते तनिक भी देर न लगी कि बाघ इस समय घर में नहीं है । अब क्या था । वह बड़े रोब के साथ घर के अन्दर बढ़ने लगा । बंदर ने उसे घर में घुसने से रोका, बंदर का टोकना था कि वह उस पर टूट पड़ा । पहले तो उसने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई, लेकिन जब बन्दर पर कोई असर न हुआ तो उसने और उसके लड़के ने पीटना शुरू कर दिया। मार पड़ती देखकर बन्दर दुम दबाकर वहां से सिर पर पैर रख कर रफू चक्कर हो गया और सियार सपरिवार बाघ की मांद में जा घुसा ।

बाघ की मांद में भेड़ का मांस पड़ा हुआ था । मांस को देखकर सियार पत्नी से बोला, "मैं एक पूरी भेड़ मारकर यहां रख गया था । दुष्ट बाघ उसे भी चट कर गया । मैंने सोचा था भेड़ वक्त-बेवक्त काम आयेगी। खैर जो हुआ सो हुआ । अब आगे से हम सबको सतर्क रहना है । बाघ हमारा शत्रु है । वह हमारे घर पर अधिकार करना चाहता है।"

सुनकर उसके बच्चे और पत्नी उसका लोहा मानने लगे। उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया कि घर उनका ही है और बाघ ने मौका पाकर जबरन कब्जा कर लिया था। सब बाघ को कोसने लगे।

सियार गप्प तो हांक रहा था। लेकिन अन्दर ही अन्दर मारे भय के उसकी जान सूखी चली जा रही थी और उसे बाघ से निपटने की चिन्ता खाए जा रही थी। उसने पत्नी को पास बुलाया और कहा—"देखो बाघ यहां एक-दो दिन में अवश्य आ धमकेगा। उस वक्त तुम्हें घबराने की आवश्यकता नहीं है, घर हमारा है। उसके बाप का यहां क्या लगता है। तो तुम एक बात का ध्यान रखो। बाकी मैं स्वयं सम्भाल लूंगा। जैसे ही तुम बाघ के दहाड़ने की अवाज सुनो सब बच्चों को एक-एक चपत मारकर रुला देना। जब मैं तुमसे पूछूं कि बच्चे क्यों रो रहे हैं तो तुम क्रोध में भरकर जवाब देना, "बच्चे बाघ के ताजा मांस के लिए रो रहे हैं।"

अगले दिन सवेरे-सवेरे बाघ आ पहुंचा। बन्दर को द्वार पर न देखकर उसे शक पड़ गया। उसने सोचा, 'अवश्य मेरे घर में मुझ से भी बड़ा और बलवान कोई जानवर घुस गया है।' और वह क्रोधित होकर जोर-जोर से दहाड़ने लगा।

बाघ का दहाड़ना सुनते ही सियारनी ने सब बच्चों पर बिना कुछ कहे-सुने एक-एक चपत रसीद कर दी। अब तो बच्चे लगे एक साथ हू-हू कर रोने। बच्चों का रोना था कि सियार गरजा, "बच्चे क्यों रो रहे हैं?"

"वे बाघ का ताजा मांस मांग रहे हैं।" सियारानी ने गुस्से के लहजे में जवाब दिया।

सियार बच्चों को आश्वासन देते हुए बोला—"रोओ मत। अभी लाता हूं बाघ का ताजा मांस।"

बाघ ने सुना तो उसकी सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। वह सुनते ही मारे डर के पूंछ दबा कर भाग खड़ा हुआ। बाघ को भागता हुआ देख सियार मन ही मन बेहद खुश हुआ।

बाघ तो भाग गया, किन्तु सियार का भय नहीं भागा । वह भली भांति जानता-समझता था कि बाघ दोबारा आएगा और तब उस से पीछा छुड़ाना मुश्किल होगा । उस वक्त भेद ही नहीं खुलेगा, बल्कि वह सारे परिवार को चट कर जाएगा । दिन-प्रतिदिन उसका शरीर सूखने लगा ।

एक दिन सियार को एक विचित्र बात दीखी । बाघ के कंधे पर एक और बाघ चढ़कर आ रहा था । सियार तुरन्त पहचान गया । देखते ही उसके हाथ से मांस का टुकड़ा गच्च से जमीन पर गिर गया, भय के मारे उसका बुरा हाल हो गया । बाघ अपनी मदद के लिए एक और बाघ को अपने कंधे पर चढ़ाकर ला रहा था ।

लेकिन सियार ने भी धीरज नहीं खोया । मुकाबले के लिए तैयार हो गया । जैसे ही बाघ मांद के द्वार पर पहुंचा, सियार क्रोध में जोर से चिल्ला उठा, "हे अनमती की मां धनमती । लौ झट्ट तैं ढपलि फ्वड्दू छौं मि तै तौला बांघै कपलि ।।"

अर्थात हे अनमती की मां धनमती । जल्दी गंडासा ला । मैं इस नीचे वाले बाघ के सिर के खण्ड-खण्ड करता हूं ।

उस मांद के असली मालिक बाघ ने यह सुना तो भयभीत हो उठा । उसने सोचा इसने तो मुझे पहचान ही लिया है । अब तो जान बचने वाली नहीं है । घबरा कर उसने कंधे पर चढ़ाए बाघ को नीचे गिरा दिया और वहां से सिर पर पैर रख कर कूच कर गया । दूसरा बाघ भी उसके पीछे-पीछे भाग गया ।

बाघ से सियार को मुक्ति मिल गई । वह निश्चिंत हो कर बाघ की मांद में रहने लग गया ।

फूल दे राणी

एक था राजा। उसके सात लड़के थे। जब लड़के बड़े और विवाह योग्य हुए, तो एक-एक कर छह लड़कों की शादी कर दी गयी। जब सबसे छोटे लड़के की बारी आयी तो उसने विवाह करने से साफ इन्कार कर दिया। राजा सुनकर बड़ा दुखी हुआ। उसने छोटे लड़के को मनाने का काम सबसे बड़े लड़के की पत्नी को सौंप दिया।

एक दिन एकान्त पाकर भाभी ने अपने सबसे छोटे देवर को अपने पास बुलाया और कहा —"राजकुमार, अब तुम विवाह योग्य हो गये हो। पिता जी का कहना मान कर विवाह कर लो। हम तुम्हारे लिए मनपसन्द खूबसूरत राजकुमारी ला देंगे।"

यह सुन कर राजकुमार एक क्षण के लिए मौन रहा। फिर बड़े दर्प के साथ उसने जवाब दिया—"भाभी मैं ऐसी-वैसी राजकुमारी से शादी नहीं करूंगा। मैं तो उस राजकुमारी से शादी करूंगा, जिसके मुंह से हंसते वक्त हीरे और रोते वक्त आंखों से फूल झरें। है तुम्हारी नजर में कोई ऐसी राजकुमारी?"

भाभी को राजकुमार की यह ऊंची बात चुभ-सी गयी। व्यंग्य बाण छोड़ते हुए वह तपाक से बोली—"वे बन्दर और ही थे जो समुद्र लांघकर लंका में गये थे और ये भूखों मरने वाले बन्दर और ही हैं। ऐसी राजकुमारी तुम क्या खाकर लाओगे।" यह कहकर वह खिल-खिलाकर हँस दी।

राजकुमार का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा, किन्तु वह कुछ कहना नहीं चाहता था। कुछ देर तक सोचता रहा। फिर दृढ़ता के साथ बोला—"भाभी मैं आज ही फूल दे राणी की खोज में जाता हूं। फूल दे राणी को लाकर ही तुम्हें अपना मुंह दिखाऊंगा।" यह कहकर वह वहां से अपने महल की ओर चल पड़ा।



महल से राजकुमार ने अशरफियां अपने जेब में डालीं और उसी समय चल पड़ा।

चलते-चलते वह एक घनघोर जंगल में जा पहुंचा। उसने देखा कि जंगल के दूसरे छोर से भीषण आग की लपटें आसमान को छू रही हैं। वह ठिठक कर जहां का तहां खड़ा हो गया। उसे खड़े हुए अभी कुछ ही क्षण हुए थे कि कुछ चींटियां उसे देखकर भागती हुई उसके पास आयीं और बोलीं—"राजकुमार, जंगल में आग लग गयी है। हमारे प्राण संकट में पड़ गये हैं। किसी तरह हमारे प्राण बचा दो। हम जीवन भर तुम्हारा उपकार नहीं भूलेंगी।"

यह सुनकर राजकुमार एक क्षण सोचने लगा। फिर अगले ही क्षण उसने चीटियों को सुरक्षा का आश्वासन देकर विदा किया। इसके बाद उसने चीटियों के चारों ओर सुरक्षित जगह बना दी। संयोग से इसी बीच मूसलाधार पानी बरसने लगा। आग अपने आप बुझ गयी। चीटियों की खुशी का ठिकाना न रहा। वे राजकुमार के पास आयीं और बोलीं—"राजकुमार, जब कभी भी तुम हमारा स्मरण करोगे, हम फौरन तुम्हारे पास चली आएंगी।"

बारिश थम चुकी थी। राजकुमार ने चीटियों को विदा किया और फिर आगे चल दिया। चलते-चलते वह किसी दूसरे राज्य में पहुंच गया। कुछ और आगे चलने पर उसने अपने को एक गांव में पाया। वहां उसे एक जगह पर लड़कों की भारी भीड़ दिखाई दी। वह जिज्ञासा से उसी ओर चल पड़ा। भीड़ के पास पहुंचकर देखता क्या है कि लड़के एक चूहे के ऊपर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगाने वाले हैं। और चूहा टुकुर-टुकुर कर देख रहा है।

राजकुमार को चूहे की दयनीय दशा पर दया आ गयी। वह लड़कों से बोला —"एक अशरफी ले लो और इस चूहे को छोड़ दो।" लड़कों को क्या चाहिए था। वे तुरन्त तैयार हो गये। राजकुमार ने जेब से एक अशरफी

निकाल कर लड़कों के सरदार के हाथ में पकड़ा दी। उसने तुरन्त चूहे को रस्सी से खोल दिया।

खुलते ही चूहा स्नेहवश राजकुमार के पैरों से लिपटने लगा। साथ ही उसने राजकुमार से उसे साथ ले जाने का निवेदन भी किया। राजकुमार ने उसे बहुत कुछ समझाया-बुझाया, किन्तु वह नहीं माना। उसके हठ को देखकर राजकुमार भी पिघल गया। विवश होकर उसे साथ लेकर चल पड़ा।

शाम हो गयी थी। रात पड़ते-पड़ते राजकुमार किसी राज्य की राजधानी में पहुंच गया। रास्ते से हटकर उसे एक झोंपड़ी दिखाई दी। रात व्यतीत करने के इरादे से वह उधर ही चल पड़ा।

उस झोंपड़ी में एक बुढ़िया रहती थी। राजकुमार ने बुढ़िया से रात ठहरने के लिए जगह देने को कहा। बुढ़िया ने पहले तो साफ मना कर दिया, लेकिन राजकुमार के बहुतेरा कहने-सुनने पर वह राजी हो गयी। राजकुमार उसके साथ रहने लगा।

राजकुमार बुढ़िया को रोज एक अशरफी दिया करता था। और बुढ़िया उसके खाने-पीने की व्यवस्था करती थी। अब बुढ़िया उससे बहुत खुश थी। वह अपने भाग्य को सराहने लगी।

वह बुढ़िया राजकुमारी (फूल दे राजकुमारी) के लिए रोज एक फूलों का हार बनाया करती थी। राजकुमार ने एक दिन बुढ़िया की नजर बचा कर एक हार बनाया और बुढ़िया के बनाये हुए हार से बदल दिया। अगले दिन बुढ़िया ठीक समय पर महल में हार दे आयी।

राजकुमारी की अवस्था सोलह साल की थी। उसने इतनी उम्र तक पुरुष का दर्शन तो दूर रहा छाया तक नहीं देखी थी। उस दिन हार पहनते ही उसे अजीब गंध महसूस हुई। उसे समझते तनिक भी देर न लगी कि हार किसी और ने बनाया है। उसने इस बात की चर्चा अपनी अन्तरंग सहेलियों से की। सहेलियों ने बताया कि हार किसी पुरुष ने बनाया है। अब तो राजकुमारी

क्रोधित हो उठी। लेकिन उसने बुढ़िया को दण्डित करना उचित नहीं समझा। उसने सोचा, 'आगे की घटना की प्रतीक्षा करनी चाहिए।'

राजकुमार के साथ चूहा था। उसने चूहे से कहा कि बुढ़िया की झोंपड़ी से राजकुमारी के कमरे तक एक सुरंग बनाकर तैयार कर दे। चूहे ने आदेश पाते ही आनन-फानन में सुरंग बनाकर तैयार कर दी।

रात को राजकुमार ने बुढ़िया से खीर बनाने को कहा। बुढ़िया ने खीर बनाकर उसे दे दी। उसने थोड़ी-सी खीर बचाकर एक मिट्टी के बर्तन में एक ओर रख दी और शेष सब खा ली।

रात के तीसरे पहर वह चुपचाप उठा और खीर लेकर सुरंग के रास्ते राजकुमारी के कमरे की ओर चल पड़ा। कुछ देर बाद राजकुमार वहां पहुंच गया।

राजकुमारी एक रत्न जड़ित पलंग पर प्रगाढ़ निद्रा में सोई हुई थी। उसके पलंग के चारों ओर जमीन पर छह सहेलियां सोई हुई थीं। राजकुमार ने छहों सहेलियों के मुंह में जरा जरा खीर रख दी। थोड़ी सी खीर बच गयी, उसे उसने राजकुमारी की हथेली में रख दिया। इतना काम कर चुकने के बाद वह फुरती से दबे पांव वहां से चला आया।

अगले दिन सवेरे सहेलियां उठीं। सब अपने-अपने मुंह में खीर देखकर आश्चर्यचकित हुए बिना न रहीं। राजकुमारी अभी सोई हुई थी। सबने उसकी ओर देखा। उसकी हथेली में खीर थी। उन्होंने ,राजकुमारी को जगाया। यह देखकर उसके भी आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने सब सहेलियों को बहुत डांटा--फटकारा और कहा कि उनके उसके साथ सोने का कोई फायदा नहीं है। पिछले दिन हार बदल गया था। उससे भी राजकुमारी क्रोधित थी। सहेलियां नाराज होकर अपने अपने घर चली गयीं।

रात के तीसरे पहर राजकुमार फिर सुरंग से होकर राजकुमारी के कमरे में जा पहुंचा। उसे देखकर राजकुमारी हक्की-बक्की रह गयी। लेकिन वह

घबरायी नहीं। दोनों ने एक दूसरे को देखा। पहली भेंट में ही राजकुमारी उस पर मोहित हो गयी। उसने राजकुमार से आने का कारण पूछा तो राजकुमार ने संक्षेप में सारी आपबीती बता दी। यह सुनकर राजकुमारी के हर्ष का पारावार न रहा। बात करते करते समय तेजी के साथ कट गया। रात खुल गयी। दोनों ने विवाह सम्बन्ध के प्रमाण के तौर पर परस्पर अपनी अंगूठियां बदल लीं।

राजकुमार सुरंग के रास्ते वापस लौट आया।

अगले दिन राजकुमारी ने राजा से कहा कि मैंने स्वप्न में एक युवक देखा है। मैं उसी से विवाह करूंगी। इसके साथ ही उसने राजा को उसका सही-सही रूप रंग भी बता दिया।

राजकुमारी की बात सुनकर पहले तो राजा विचित्र द्रुविधा में पड़ गया। लेकिन कुछ देर सोचने के उपरान्त उसने राजकुमारी द्वारा बताये गये युवक की तलाश करने का निश्चय कर लिया। राजा का निश्चय सुनकर राजकुमारी के हर्ष का पारावार न रहा।

राजा ने उस युवक की तलाश में गुप्तचरों को राज्य भर में भेज दिया। शीघ्र ही गुप्तचर बुढ़िया के यहां से राजकुमार को बरामद कर राज दरबार में ले आये। राजकुमार के साथ चूहा भी आया। राजकुमार किन्हीं कारणों से अपना भेद छिपाये हुए था।

राजकुमार को अब गुप्तचरों ने राजा के सामने पेश किया और कहा कि यह हार बनाने वाली बुढ़िया का बेटा है, तो राजा मन ही मन बहुत क्रोधित हुआ। राजकुमारी उस समय वहां नहीं थी। राजा उस युवक से पीछा छुड़ाने की सोचने लगा। सहसा उसके मस्तिष्क में एक तरकीब कौंधी। उसने तुरन्त अपने वजीर को बुलाया और हुक्म दिया—"एक बर्तन में एक मन गेहूं, जौ, चावल और तिल मिला कर इस युवक के सामने रख दो। एक घण्टे में यदि यह चारों प्रकार के अन्नों को अलग-अलग कर देगा, तो मैं राजकुमारी का विवाह इसके साथ कर दूंगा। और यदि यह ऐसा न कर सका, तो इसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।"

वजीर ने राजा की आज्ञा का तुरन्त पालन करते हुए एक बर्तन में मिश्रित अनाज उस युवक के आगे रख दिया। राजा की शर्त युवक ने सुन ही ली थी। अब तो युवक बड़े धर्मसंकट में पड़ गया। सोचने लगा, 'चला तो था फूल दे राजकुमारी को रानी बनाने और अब जीवन ही खतरे में पड़ गया।' सहसा उसने चींटियों का स्मरण किया। देखते ही देखते वहां लाखों चीटियां आ पहुंची। चीटियों ने आनन-फानन में चारों अन्न अलग-अलग कर दिये। और तत्पश्चात वे देखते ही देखते अदृश्य हो गयीं।

ठीक समय पर राजा और वजीर उधर आ पहुंचे। चारों अन्नों को अलग-अलग किया देखकर राजा के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। राजा शर्त हार चुका था। शर्त तो वह हार गया था, लेकिन पुत्री का विवाह करने के लिए वह अभी भी दिल से राजी नहीं था। चतुरता से उसने उस युवक (राजकुमार) से कहा —"शर्त तो तुम जीत गये हो। इसलिए राजकुमारी का विवाह तुम से करना ही होगा। किन्तु क्यों न तुम इस राज्य के भी मालिक बन जाओ, ताकि आराम से जीवन बिता सको।"

युवक ने इसका प्रतिवाद किया तो राजा को गुस्सा आ गया। उसने आदेश दिया, "इस दुष्ट को ढोल के अंदर बंद करो।" सिपाहियों ने वैसा ही किया। अब राजकुमार तांबे के ढोल के अन्दर था। चूहा भी राजकुमार के साथ ही था कुछ ही देर में राजा की आज्ञा से ढोल को लोहार की धौंकनी से गरम किया जाने लगा। सारे दरबारी चुपचाप यह तमाशा देख रहे थे।

ढोल जैसे-जैसे गरम होता जा रहा था, राजकुमार को अपनी मौत नजदीक आती हुई नजर आ रही थी। ढोल जब लाल हो गया तो चूहे से न रहा गया। वह राजकुमार से बोला—"राजकुमार मुझे बड़े जोर की पेशाब लगी है, पर क्या करूं।" यह सुनकर राजकुमार बोला—"मेरी जान जा रही है और तुझे पेशाब की सूझ रही है। अरे! लगी है तो कर ले न। तेरी पेशाब से कौन सी बाढ़ आ जाएगी।"

"लेकिन भइया तुम्हारे ऊपर छीटें पड़ेंगे।" चूहे ने दबी आवाज में कहा।

"पड़ने दे छीटें। मैं कहता हूं पेशाब मत रोक।" राजकुमार ने तनिक गुस्से में कहा और अधिक सिकुड़ कर बैठ गया।

राजकुमार की आज्ञा सुनते न सुनते चूहा मूतने लगा। उसने मूतना शुरू किया, तो फिर बंद करने का नाम ही नहीं लिया। कुछ ही देर में ढोल ठंडा हो गया। लोहार की धौंकनी बेकार हो गयी। सब देखकर हक्के-बक्के रह गये। चूहे का मूतना रुका नहीं। कुछ ही देर में वहां सचमुच बाढ़ आ गई। देखते ही देखते समूचा राजमहल जलमग्न हो गया। राजा को समझते देर न लगी कि यह सब उस ढोल के अन्दर बंद युवक की करामात है।

राजा ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए तत्काल ढोल के अन्दर से युवक को बाहर निकलवाया। युवक के बाहर आते ही पानी बढ़ना रुक गया। राजा ने सब कुछ सोच विचार कर राजकुमारी का विवाह उस युवक के साथ कर दिया।

राजकुमार और राजकुमारी दोनों एक दूसरे को पाकर फूले न समाये। राजकुमार फूलदे राणी को प्राप्त करने में सफल हो गया था। अब उसे घर लौटने की जल्दी थी, ताकि अपनी ताना कसने वाली भाभी को फूल दे राणी बता सके।

अगले दिन राजकुमार ने राजा को अपना भेद सच-सच बता दिया। सुनकर राजा की खुशी का ठिकाना न रहा। उसी दिन राजकुमार राजा से आज्ञा और आशीर्वाद लेकर अपनी पत्नी को साथ ले घर की ओर चल पड़ा।

राजकुमार फूलदे राणी को साथ लेकर चलते-चलते अपने घर के पास पहुंच गया। सहसा उसके मन में विचार आया, "फूलदे राणी को एकाएक भाभियों के सामने नहीं ले जाना चाहिए। पहले उनकी प्रतिक्रिया और रुख जान-समझ लेना चाहिए। यह सोचकर उसने फूल दे राणी को कहीं छिपाने का निश्चय कर डाला।

राजकुमार ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। उधर कोई नहीं था। वहां पर एक कुंआ था। कुंए के पास एक बड़ा पेड़ था। उसने राजकुमारी को उस

पेड़ पर चढ़ा दिया। उसे कुछ देर बाद आकर ले जाने का आश्वासन देकर वह अपने घर की ओर चल पड़ा।

घर पहुंचा तो भाइयों और भाभियों ने उसे घेर लिया। सब लोग प्रश्नों की बौछार करने लगे। सबसे बड़ी भाभी व्यंग्यबाण छोड़ते हुए बोली—अरे! कहां है तेरी फूल दे राणी? राजकुमार कुछ देर तक सबकी खोटी-खरी बातें सुनता रहा। फिर उसने गर्व के साथ उन्हें बताया कि मैं फूल दे राणी को विवाह कर ले आया हूं। अब तो सबके हर्ष और आश्चर्य का ठिकाना न रहा। फिर क्या था। जो राजकुमार की हँसी कर रहे थे, वे भी चापलूसी से उसकी प्रशंसा के पुल बांधने लगे।

सब से यह कहते हुए कि मैं फूल दे राणी को अभी लाता हूं। राजकुमार पेड़ पर बैठाई हुई पत्नी को लेने के लिए चल पड़ा। घरवाले सोचने लगे कि उनको उल्लू बना रहा है।

उधर इस बीच सर्वथा विचित्र ही घटना घट गई। एक चमारिन कुएं पर पानी भरने आई। जैसे ही वह पानी भरने के लिए कुंए में झुकी, उसे कुएं के पानी में एक छाया दिखायी दी। छाया अद्भुत और अत्यन्त चित्ताकर्षक थी। वह छाया पेड़ पर चुपचाप बैठी फूल दे राणी की थी। छाया देखकर चमारिन विस्मय में डूबे बिना न रही। सहसा उसके मुंह से निकला—'हे रंग, रे रूप फुट्ट घोड़ी' अर्थात ऐसे रंग और रूप पर बलि जाऊं।' यह कहते हुए उसने अपना घड़ा वहीं कुएं की जगत पर फट्ट से चूर-चूर कर दिया। घड़ा टूटते ही उसे पानी ले जाने का ध्यान आया। घर में मेहमान खाने पर बैठे थे और पानी की एक बूंद नहीं थी। अब क्या था। वह दौड़ी-दौड़ी घर गयी और दूसरा घड़ा ले आयी। फिर उसे कुएं के पानी में वही छाया दिखाई दी। उससे न रहा गया। पहले की तरह उसने वैसा ही बोलकर फिर दूसरा घड़ा भी फोड़ दिया। इसी प्रकार उसने एक-एक करके चार घड़े फोड़ दिये। पेड़ में बैठी फूल दे राणी यह चुपचाप देख रही थी। वह किसी तरह अपनी हँसी रोके हुए थी।

चमारिन ने जब पांचवां घड़ा भी फोड़ दिया, तो फूलदे राणी से न रहा गया। वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसका हँसना था कि पेड़ से हीरों की

बरखा हो चली। चमारिन के ऊपर भी दो चार हीरे आ गिरे। उसने पेड़ पर दृष्टि डाली। देखती क्या है कि वहां एक परम सुन्दरी चुपचाप बैठी हुई है। अब तो चमारिन की आंखें फटी की फटी रह गईं।

चमारिन थी बड़ी चालाक। उसने फूल दे राणी के बारे में सुन रखा था। उसे बात समझते देर न लगी। बड़ी आत्मीयता से वह फूल दे राणी की ओर मुखातिब होकर बोली—"अरी बहन! तू यहां कब से और क्यों बैठी है? आ नीचे उतर आ, तू तो मेरी मौसी की लड़की है। लेकिन तुझे क्या पता। जब तेरी मां मरी थी, तू तो बहुत छोटी थी। आ बच्ची, नीचे तो आ।"

सचमुच फूल दे राणी की मां नहीं थी। उसे अपनी मां की याद भी नहीं थी। चमारिन की चालाकी का तीर ठीक लक्ष्य पर लगा। फूल दे राणी उसके बहकावे में आकर शीघ्रता से नीचे उतर आयी।

अब क्या था। चमारिन उसे भेंटने लगी। लेकिन इस काम में उसने बड़ी फुरती से काम लिया। इतना कर के वह रोते हुए कहने लगी–"बहन तेरे भाग्य बड़े हैं। मैं देख कैसी हालत में हूं। हम दोनों की माएं बहनें थीं। जरा देख तो सही तुझ में और मुझ में जमीन आसमान का अन्तर है। मैंने अपने जीवन में इतने सुन्दर गहने और कपड़े नहीं पहने हैं। पहने क्या देखे तक नहीं हैं। जरा कुछ देर मैं तेरे कपड़े पहन कर देखूं तो मैं कैसी लगती हूं।"

उसकी बात सुनकर फूल दे राणी को दया आ गयी। उसने तुरन्त एक-एक कर अपने सब कपड़े और गहने उसे पहना दिये और स्वयं उसके कपड़े पहन लिये।

अब चमारिन तेजी से कुंए की जगत पर जा चढ़ी। फिर बोली—"बहन अब देख तो मेरी छाया कुएं में कैसी दिखाई पड़ रही है?"

यह सुनकर फूल दे राणी उसकी बगल में झुक कर कुएं के पानी में देखने लगी। अवसर पाकर चमारिन ने सहसा एक जोर का धक्का दिया। फूल दे राणी कुएं में जा गिरी। कुएं में गिरते ही वह रोने-धोने लगी। उसके रोने के साथ फूल झरते गये। सारा कुंआ खूबसूरत रंग-बिरंगे फूलों से भर गया। कुछ देर बाद वह छटपटा कर मर गयी।

चमारिन उसे कुंए में धकेलकर तेजी के साथ पेड़ पर जा बैठी।

कुछ देर बाद राजकुमार वहां आया। पत्नी (चमारिन) को उसने नीचे उतरने का संकेत दिया। वह तुरन्त नीचे उतर आयी। राजकुमार उसे लेकर घर की ओर चल पड़ा। कुछ ही देर में दोनों घर पहुंच गये।

परिवार के सब लोग फूलदे राणी की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे। नकली फूल दे से सब को निराशा हुई। लेकिन कोई भी चमारिन को पहचान नहीं पाया। काली कलूटी और बदसूरत व फटे फटे पैरों वाली फूलदे राणी को देखकर सब नाक–भौं सिकोड़ने लगे। सबने उसकी परीक्षा के लिए उसे हँसाना चाहा, लेकिन वह बिल्कुल हँसी नहीं। हँसती तो एक ही पल में पोल खुल जाती और तब उसका जो हाल किया जाता उसकी उसे पूरी-पूरी शंका थी।

अब तो सब राजकुमार को खोटी खरी सुनाने लगे। यह देखकर वह भी सकते में पड़ गया। वह गुमसुम हो गया। विचित्र स्थिति में फंस गया था। उसे शक पड़ गया कि अवश्य किसी ने शरारत की है। किन्तु उसने मुंह नहीं खोला। क्योंकि उसकी बात का अब कौन विश्वास करता। लोग सुनकर उल्टे मजाक ही बनाते।

वह अपमान का कड़ुआ घूंट पीकर चुपचाप अपने महल की ओर चला गया। रात भर करवटें बदलता रहा। चिंता से उसका शरीर सूखकर कांटा हो गया। पत्नी उससे बात करती, किन्तु वह मौन ही रहने में हित समझता।

राजकुमार के लिए माली रोज ताजे फूलों का एक गुलदस्ता लाता था। संयोग से एक दिन मालिन कुएं पर पानी भरने गयी। पानी में अनोखे फूल देखकर वह उन्हें उठा लायी। अगले दिन माली उन्हीं फूलों का गुलदस्ता बनाकर राजकुमार के पास ले गया।

राजकुमार ने भी ऐसे अनोखे फूल पहले कभी नहीं देखे थे। उसने खुश होकर माली को अच्छा इनाम दिया और गुलदस्ता उठाकर अपने सिराहने रख दिया।

फूलों की तीव्र महक से कमरा महकने लगा। दो-तीन दिन बीत जाने पर भी गुलदस्ता मुरझाया नहीं। अब तो राजकुमार के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उधर रानी बनी चमारिन को शक ने धर दबोचा। उसने राजकुमार की नजर बचाकर माली को बुलाया और गुलदस्ते के फूलों के बारे में पूछताछ की। माली ने कुएं से फूल लाने वाली बात उसे बता दी। चमारिन समझ गयी कि ये फूल फूल दे राणी के रोते समय झरे होंगे। अब तो डर के मारे उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

रहस्य खुलने के भय से एकाएक उसने राजकुमार की अनुपस्थिति में फूलों का गुलदस्ता तोड़-मरोड़ कर महल के पिछवाड़े के बाग में फेंक दिया। और उसके स्थान पर दूसरा गुलदस्ता मंगवाकर रख दिया।

राजकुमार ने गुलदस्ता बदला हुआ देखकर पत्नी से पूछा। वह बोली फूल मुरझा गये थे, इसलिए मैंने उन्हें बाहर फेंक दिया है। राजकुमार को सन्देह हो गया। लेकिन उसने चुप रहना ही श्रेयस्कर समझा। अब तो वह और भी उदास और खोया-खोया-सा रहने लगा। उसे न भूख लगती और न नींद ही आती।

उधर बाग में गिरते ही गुलदस्ते के फूल पालक में बदल गये। बाग में हरा-हरा पालक उग आया।

एक दिन रसोइया उस पालक को तोड़ लाया। पालक बिलकुल विचित्र किस्म का था। बड़े-बड़े पत्तों वाला ऐसा सुगंधित पालक रसोइया ने पहले भी नहीं देखा था। काट कर उसने उसे चूल्हे पर चढ़ा दिया।

पालक जैसे-जैसे पकने लगा उसकी महक चारों ओर तीव्रता से फैलने लगी। महक चमारिन के नथुनों में भी पड़ी। वह रसोई घर में जा पहुंची। जैसे ही वह चूल्हे के पास गयी पतीली से आवाज फूट पड़ी, चमारिन रांड उदें, थुक...थुक थुक। चमारिन रांड उदें थुक ...थुक...थुक। अर्थात चमारिन को लानत है, चमारिन को लानत है। सुनते ही चमारिन के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गयी। उसने रसोइया को किसी काम के बहाने बाहर भेजा। फिर शीघ्रता से

पालक की कढ़ाई उठाकर बाहर फेंक दी और उसमें और पालक मंगवाकर पकाने रख दिया। वह काम उसने इतनी तेजी और समझ से किया कि रसोइये को इसकी तनिक भी खबर न लगी।

जहां उसने पालक फेंका था वहां शीघ्र ही एक बेल का पेड़ उग आया।

दिन बीतते गये। चमारिन एक दिन उधर गयी। एक बेल का खूबसूरत पेड़ देखकर उसे समझते देर न लगी कि पेड़ फूल दे राणी के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हैं। उसने उस पेड़ को कटवाने की सोची ताकि उसका भेद खुलने न पाये।

एक दिन राजकुमार की अनुपस्थिति में उसने राज ज्योतिषी को बुलाया। उसे काफी धन देकर उसने उसे अपनी तरफ कर लिया। ज्योतिषी बड़ा वफादार था, किन्तु लोभ से उसकी आंखें भी बंद हो गयीं। चमारिन ने ज्योतिषी से कहा कि जब राजकुमार मेरी बीमारी की बात तुमसे पूछें, तो कहना कि महल के पिछवाड़े बेल के वृक्ष के कारण यह सब उपद्रव हो रहा है। यह समझा बुझाकर उसने राज ज्योतिषी को विदा कर दिया।

अब जैसे ही राजकुमार के वापस आने का समय हुआ, वह पेट में भयंकर दर्द का बहाना बनाकर पलंग में लेट गयी। राजकुमार के कमरे में पैर रखते ही वह चीखने चिल्लाने लगी। पूछने पर उसने राजकुमार से पेट में भयंकर दर्द होने की बात कही।

राजकुमार ने तत्काल वैद्य बुलाये। एक से एक बढ़कर वैद्य गर्व के साथ पधारे, किन्तु अपना सा मुंह लेकर लौटते गये। कोई रोग होता तो इलाज करते बताते। बहाना रोग का भला क्या उपचार होता। राजकुमार घबरा गया। एक और ही मुसीबत आ खड़ी हो गयी थी।

जब सब हकीम और वैद्य हार गये, तो राजकुमार के शुभचिंतकों ने सलाह दी कि राज ज्योतिषी को रानी के ग्रह दिखलाये जाएं। तुरन्त राज ज्योतिषी बुलवाया गया।

ज्योतिषी को उपस्थित देखकर चमारिन मन ही मन खुश हुई। अब वह और भी जोर जोर से हाय-हाय करने लगी। चीखते चिल्लाते उसने सारा महल सिर पर उठा लिया।

ज्योतिषी तो पहले से ही पढ़ाया हुआ था। आते ही उसने रानी के पेट दर्द का कारण महल के पिछवाड़े में उगा बेल का पेड़ बता दिया। उसने बेल के पेड़ को तत्काल काटने की सलाह दी। सुनकर सब आश्चर्य में डूब गये।

राजकुमार ने तो बेल का पेड़ कभी देखा भी नहीं था। वह तुरन्त उस ओर गया। सचमुच वहां एक सुन्दर बेल का पेड़ था। ज्योतिषी की बात पर विश्वास करने के लिए ठोस आधार था। फिर बात की परख करनी भी आवश्यक थी। इससे भी बढ़कर किसी तरह रानी के दर्द को खत्म करना था।

राजकुमार ने बेल का पेड़ कटवाने का हुक्म दे दिया। कर्मचारियों ने देखते ही देखते पेड़ काट कर गिरा दिया। पेड़ के कटते ही रानी (चमारिन) का पेट दर्द छूमंतर हो गया। सब का शोक हर्ष और विस्मय में बदल गया। ज्योतिषी का सिक्का भी सब पर जम गया।

उस बेल के वृक्ष पर एक बेल लगा था। जब वृक्ष काटकर गिराया गया तब फल कच्चा ही था। पेड़ काटने वाले मजदूर बेल के वृक्ष को गिराकर चले गये। तभी कुछ देर बाद कुटणी (जो गांव में कूटने-पीसने का काम करती है) के दो छोटे-छोटे बच्चे खेलते-खेलते उधर आ पहुंचे। बेल का फल अभी वृक्ष से लगा था।

दोनों ने एक क्षण इधर-उधर देखा। वहां कोई पक्षी तक नहीं था। फिर उनमें से एक लड़के ने फुरती से बेल तोड़ा और अपनी अंटी में छिपा लिया। इसके बाद वे दोनों भाई अपने घर की ओर चल पड़े।

घर पहुंचकर उन्होंने बेल कुटणी (अपनी मां) को दिया। बेल कच्चा था पकने के इरादे से कुटणी ने उसे एक टोकरी में रख दिया। कुटणी के बच्चे बेल पकने की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगे। वे कुटणी की अनुपस्थिति में कभी भी टोकरी का ढक्कन उठाकर बेल देख लेते।

उत्सुकता को रोक कर बड़ी कठिनाई के साथ उन्होंने तीन दिन काटे। चौथे दिन दोनों बच्चों की उपस्थिति में कुटणी ने टोकरी खोलकर देखी। देखते ही वे सब के सब हक्के बक्के रह गये। उनकी खुशी का ठिकाना न था। वहां बेल के स्थान पर एक बहुत ही खूबसूरत लड़की थी। दोनों भाई उस लड़की को देखकर बहुत खुश हुए। उसे वे बहन कहने लगे।

कुटणी उस लड़की को कमरे से बाहर नहीं निकालती थी, उसे भय था कि कोई उसे छीन न ले। फिर इतनी सुन्दर लड़की उसके यहां कहां से आयी, यह आरोप लगाकर राजा भी उसे तंग कर सकता था। यही सब सोच विचार कर वह उसे लोगों की नजरों से बचाकर रखती थी।

वह लड़की चन्द्रमा की तरह तेजी के साथ बढ़ने लगी। यदा-कदा जब वह हंस देती तो हीरे झर जाते। कुटणी उन्हें उठा लिया करती। फिर दूर जाकर किसी जौहरी के यहां बेच आती। इस प्रकार कुटणी जल्दी ही धनवान हो गयी।

कुटणी और उसके दोनों बेटे काम पर इधर-उधर चले जाते थे। लड़की घर में अकेली रहती थी। उसे कुटणी मकान की दूसरी मंजिल की खिड़की के द्वार के पीछे बैठा जाती थी। उसके पास ढेर सारे छोटे छोटे पत्थर रख जाती थी जब कभी उनके घर के आस पास कोई ढोर डंगर साग-सब्जी चरने आता, तो वह छिप कर पत्थर फेंका करती थी। इससे जानवर वहां से हट जाया करते थे, बस, यही रखवाली का काम उसके जिम्मे था।

एक दिन राजा का एक सईस घोड़ा लेकर उधर आया। कुटणी के मकान के पास हरी-भरी घास देखकर उसने घोड़ा उधर छोड़ दिया। घोड़ा बाड़ तोड़कर साग-सब्जी की क्यारियों में जा घुसा। लड़की ने ऊपर से पत्थर बरसाने शुरू कर दिये। लेकिन घोड़े पर उनका जरा भी असर न पड़ा। वह मस्ती से हरी साग-सब्जी चरता गया। नुक़सान होता हुआ देखकर लड़की से न रहा गया। वह तुरन्त उठी और घोड़े को गरदन से पकड़कर अपने आंगन में ले आयी फिर उसने उसे अपनी गौशाला में बंद कर दिया और चुपचाप अपनी जगह पर बैठ गयी।

सईस उस छोटी और खूबसूरत लड़की की करामात चुपचाप छिपकर देख रहा था। जैसे ही वह लड़की घोड़ा लेकर गयी, सईस दौड़ता हुआ राजकुमार के पास गया और हांफते हुए उसने सारी बात उसे सच सच बता दी। राजकुमार को लगा कि उसने अपनी खोई हुई फूल दे राणी पुनः प्राप्त कर ली है। उसके चेहरे पर प्रसन्नता की चमक उतरने चढ़ने लगी।

शाम को जब कुटणी और उसके लड़के घर लौटे और गौशाला में उन्होंने घोड़ा बंधा हुआ देखा, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। लड़की ने पूछने पर सारा हाल उन्हें बता दिया। अब तो सब मारे भय के थर थर कांपने लगे। लेकिन अब क्या हो। उनको चिंतित देखकर लड़की ने उनको ढाढ़स बंधाते हुए कहा तुम चिंता न करो। मैं सब कुछ स्वयं निपट लूंगी। इसमें हम सब की भलाई छिपी हुई है।

राजकुमार सईस को लेकर कुटणी के घर की ओर चल पड़ा। जल्दी ही वह वहां पहुंच गया। वह सीधे कुटणी के घर के अन्दर घुस गया वहां कुटणी और उसके दो लड़के उस लड़की के साथ बैठे आग ताप रहे थे। राजकुमार को देखकर सब घबरा उठे। राजकुमार ने लड़की को देखते ही पहचान लिया। लड़की भी राजकुमार को पहचान गयी। देखते ही देखते वह अपनी पहले की आयु में बदल गयी। राजकुमार ने उसे गले लगा लिया।

राजकुमार ने उसे घोड़े पर अपने साथ बैठाया और घर की ओर चल पड़ा। साथ ही अपने अंगरक्षकों को हुक्म दिया कि कुटणी और उसके दोनों लड़कों को गिरफ्तार कर अगले दिन राजदरबार में पेश किया जाए। हुक्म का पालन करते हुए अंगरक्षक उन तीनों को बांधकर ले गये। तीनों फूट-फूट कर रोने लगे। उन्होंने कहना बहुत कुछ चाहा, किन्तु किसी ने उनकी एक भी न सुनी।

उधर जब नकली रानी ने सुना कि राजकुमार फूलदे राणी को ढूंढ कर ले आया है, तो भय के मारे उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी।

रात को राजकुमार ने फूल दे राणी से उसकी कुटणी के घर रहने के बारे में पूछा तो उसने रोते-रोते सारी रामकहानी सुना दी।

सवेरा होने पर उसने कुटणी और उसके दोनों लड़कों को अपने पास बुलवाया।

कुटणी को देखते ही राजकुमार उसके पैरों में पड़ा और बोला—"मां मुझे क्षमा करो। गलतफहमी में तुम को मैंने व्यर्थ ही कष्ट दिया है।"

अब राजकुमार ने नकली फूल दे राणी को बुलाया। सैनिकों को हुक्म दिया—"इसको नंगी कर पागल कुत्तों के हवाले कर दो।"

सैनिकों ने तत्काल राजकुमार की आज्ञा का पालन किया। देखते ही देखते कुत्तों ने उसकी बोटी-बोटी अलग-अलग कर दी।

राजकुमार असली फूलदे राणी को लेकर अपनी भाभियों के यहां गया। उसने सारी कहानी उनको सुनाई। इस बीच फूल दे राणी प्रसंगानुसार हँसती और रोती रही। हँसने और रोने के साथ हीरे और फूल झरते रहे। अब किसी को प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी।

लीसे की लड़की

किसी गांव में खुरपके की बीमारी फैल गयी। देखते ही देखते सारे गांव के ढोर डंगर रोगग्रस्त हो गये। कुछ ही दिनों के अन्दर गांव के इर्द गिर्द मरे हुए जानवरों के ढेर लग गये। चील और गिद्धों के लिए मानो त्योहार हो गया। सियार भी कब किसी से पीछे रहने वाले थे। वे भी जहां तहां पड़े मृत पशुओं से अपनी पेट पूजा करने लगे।

गरमी के दिन थे। कड़ाके की गरमी पड़ रही थी। एक सियार हाल ही में मरी हुई एक भैंस को मजे से खाने लगा। चील और गिद्धों ने पहले से ही भैंस के पेट को चीर रखा था। नहीं तो सियार भला कैसे भैंस को फाड़ सकता। खाते खाते सियार को इतना आनन्द आया कि वह सारा का सारा भैंस के पेट में घुस गया। इतने में उसका पेट भी पूरी तरह भर चुका था। उधर जैसे-तैसे वह मांस खाता गया। वैसे-वैसे चमड़ा सूखता गया। अन्त में स्थिति यहां तक पहुंच गई कि सियार अन्दर ही रह गया। अब तो अपने लोभ पर उसे बड़ा पश्चाताप होने लगा। लेकिन सियार था बड़ा होशियार। संकट में वह जरा भी नहीं घबराया और किसी उचित अवसर की प्रतीक्षा में चुपचाप अन्दर बैठा रहा।

ईश्वर को पता लगा कि सियार भैंस के पेट में फंस गया है। उन्होंने उसके साथ मजाक करने की सोची। वे हाथ में एक घंटी लेकर वहां जा पहुंचे। फिर लगे बजाने जोर जोर से घंटी। सियार ने घंटी की आवाज सुनी, तो उसे बड़ा सहारा मिला। उसे लगा कि वह भैंस के पेट से बाहर आ गया है। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने बड़ी चतुरता से पूछा—'बाहर कौन घंटी बजाता है।'

'नारायण': ईश्वर ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया।

यह सुनकर सियार व्यंग्य हंसी हंसता हुआ बोला—"नारायण। कैसा नारायण। भगवान तो यहीं बैठा है और तुम नारायण बाहर घूम रहे हो। अरे इतना सफेद झूठ तो मत बोल।"



अब तो सियार चुनौती देते हुए बोल पड़ा—'अच्छा दोनों की परीक्षा हो जाये। तू अपने को नारायण कहता है, तो तू मूसलाधार बारिश कर। मैं भगवान हूं। तब ऐसी धूप करूंगा कि तू देखता ही रह जाएगा। देखता नहीं, कितनी कड़ाके की धूप कर रखी है मैंने। मैं तो भगवान हूं। आराम से अन्दर बैठा हूं और तू धूप में परेशान होकर घंटी बजाता हुआ मेरी पूजा कर रहा है, ताकि मैं पानी बरसा दूं। नारायण होता तो बारिश के लिए मेरी पूजा क्यों करता।'

फिर क्या था। नारायण ने मूसलाधार पानी बरसा दिया। पानी पड़ने से मरी भैंस की खाल गीली हो गई। कुछ देर बाद सियार आसानी से बाहर आ गया। अब तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसे अपनी बुद्धिमत्ता पर बड़ा गर्व होने लगा। वह सोचने लगा कि वह तो नारायण अर्थात ईश्वर से भी ज्यादा बुद्धिमान है। नारायण तो सियार के बाहर आने से पहले ही छिप गये थे। सियार ने चारों ओर नजर दौड़ाई लेकिन उसे इधर कोई भी नहीं दिखाई दिया। अब तो वह ज़ोर-जोर से चिल्लाने लगा "नारायण छम, नारायण छम" अर्थात नारायण को खूब छकाया। इतना चिल्लाते-चिल्लाते वह जंगल की ओर जाने लगा। मारे खुशी के उसके पैर जमीन पर ही नहीं पड़ रहे थे।

ईश्वर तो सुन ही रहे थे। उन्होंने 'सोचा कहां तो इस सियार को मेरा अहसान मानना चाहिए था और कहां यह कमबख्त सोच रहा है कि नारायण को खूब छकाया।' ऐसा विचार कर उन्होंने उस चालाक सियार को सबक सिखाने की सोची। तुरन्त उन्होंने आदमी का रूप रखा और जिधर से सियार को जंगल में प्रवेश करना था। उधर के रास्ते में पहुंच गये। फिर उन्होंने अपने एक हाथ में लीसा और दूसरे में गुड़ रखा। यह करने के बाद वे जमीन पर मरे हुए आदमी की तरह चित लेट गये।

कुछ देर बाद सियार उधर से गुजरा। मरा आदमी देखकर वह ठिठक गया। उसके हाथ में गुड़ और लीसा देखकर सियार का माथा ठनका। उसे समझते देर न लगी कि यह जाल उसी को फंसाने के लिए रचा गया है। अब तो उसने किसी प्रकार भी लोभ में न आने का निश्चय कर लिया। साथ ही उसने सोचा कि इस चालाक आदमी को भी मालूम हो जाना चाहिए कि

सियार इससे भी चालाक होता है। यह सोच कर उसने व्यंग्य वाण छोड़ते हुए कहा "जैका हाथ पर लूंद और गोंद, वैकू होंदु, बन्न क्बी त, सची नि रोंद।" अर्थात जिस मरे हुए आदमी के हाथ में गुड़ और लीसा है, काश उसका कोई होता तो उसकी मृत्यु पर रोता।

यह कहते हुए सियार आगे बढ़ गया। उधर ईश्वर ने सोचा कि सियार सरलता से बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता। धूर्त सियार की चतुरता को देखकर वे आश्चर्य में डूबे बिना न रहे। उन्होंने मन ही मन विचार किया, 'एक साधारण सियार ने मुझे सचमुच छका दिया है।' वे शीघ्रता से सियार के आगे-आगे गये और उससे पहले एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गये। जब उन्हें पूरा भरोसा हो गया कि सियार उसी रास्ते से आ रहा है तो उन्होंने तुरन्त लीसे की एक खूबसूरत लड़की बनायी। उस पर अत्यन्त आकर्षक कपड़े और आभूषण पहनाये। फिर उसके एक हाथ में चार पूरियां और दूसरे में चार पकोड़ियां पकड़ा दीं। इतना करने के बाद वे फुर्ती से पेड़ की आड़ में छिप गये।

कुछ देर बाद सियार उधर से गुजरने लगा। उसकी नजर खूबसूरत लड़की पर पड़ी। लड़की के हाथों में उसने पूरी-पकोड़ियां देखीं। उसके मुंह में पानी आ गया। उससे न रहा गया। लालच ने उसके विवेक को दबोच लिया। वह साहस कर लड़की के नजदीक आ गया। फिर लड़की से उसने रोबीली आवाज में कहा, "लड़की मुझे भी पूरी पकौड़ी दे।" जवाब में उस लड़की ने सिर्फ सिर हिला दिया। सियार को इस पर बेहद गुस्सा आ गया। वह फिर धमकी भरे स्वर में बोला, "बड़ी बनती है। देती है तो दे, वरना एक थप्पड़ जमाऊंगा।" इस बार भी लड़की ने पहले की तरह सिर हिला दिया। चालाक सियार को अपनी उपेक्षा होती हुई नहीं देखी गई। उसने लड़की पर जोर का एक तमाचा जड़ दिया। लेकिन यह क्या। थप्पड़ मारते ही सियार का हाथ लड़की के गाल से चिपक गया। अपना हाथ चिपका हुआ देखकर सियार क्रोध में चीखा, "मेरा एक हाथ जल्दी छोड़ वरना तेरे दो गालों का अभी एक गाल कर दूंगा।" इस पर भी लड़की चुप रही। क्रोधित होकर उसने अपने दूसरे हाथ से उसके दूसरे गाल पर भी एक चपत मारी।

उसका दूसरा हाथ भी वहीं चिपक गया । अब तो सियार के क्रोध का ठिकाना न रहा ।

अपने को छुड़ाने के उद्देश्य से उसने एक-एक कर दायें और बायें पैर से लात मारी । दोनों पैर उसके वहीं चिपक गये । हाथ और पैर चिपक जाने के उपरान्त उसने चेतावनी देते हुए कहा, "छोकरी मेरे हाथ पैर छोड़ दे । नहीं तो सिर से ऐसी चोट मारूंगा कि तेरा कचूमर ही निकल जाएगा ।"

लड़की फिर भी मौन रही । एक क्षण सियार चुप रहा। फिर अगले क्षण ही उसने बड़े जोर से लड़की पर अपना सिर दे मारा । सिर भी हाथ-पैरों की तरह वहीं चिपक गया। अब तो सियार धर्मसंकट में पड़ गया। वह मन में सोचने लगा कि संसार में उसके समान मूर्ख कोई नहीं होगा ।

सियार को लीसे की लड़की से बुरी तरह चिपका देखकर पेड़ की आड़ में छिपे नारायण मनुष्य के रूप में तत्काल वहां प्रकट हो गये । उन्होंने सियार से पूछा, "भगवन् आप लीसे की लड़की से कैसे चिपक गये हो।" यह सुनकर सियार फूट-फूट कर रोने लगा। और लगा भगवान से क्षमा मांगने लगा । नारायण ने उसे क्षमा करते हुए मुक्त कर दिया। तब से उस सियार ने फिर कभी अपनी चतुरता की डींग नहीं हांकी ।

गरीब लड़का और भूत

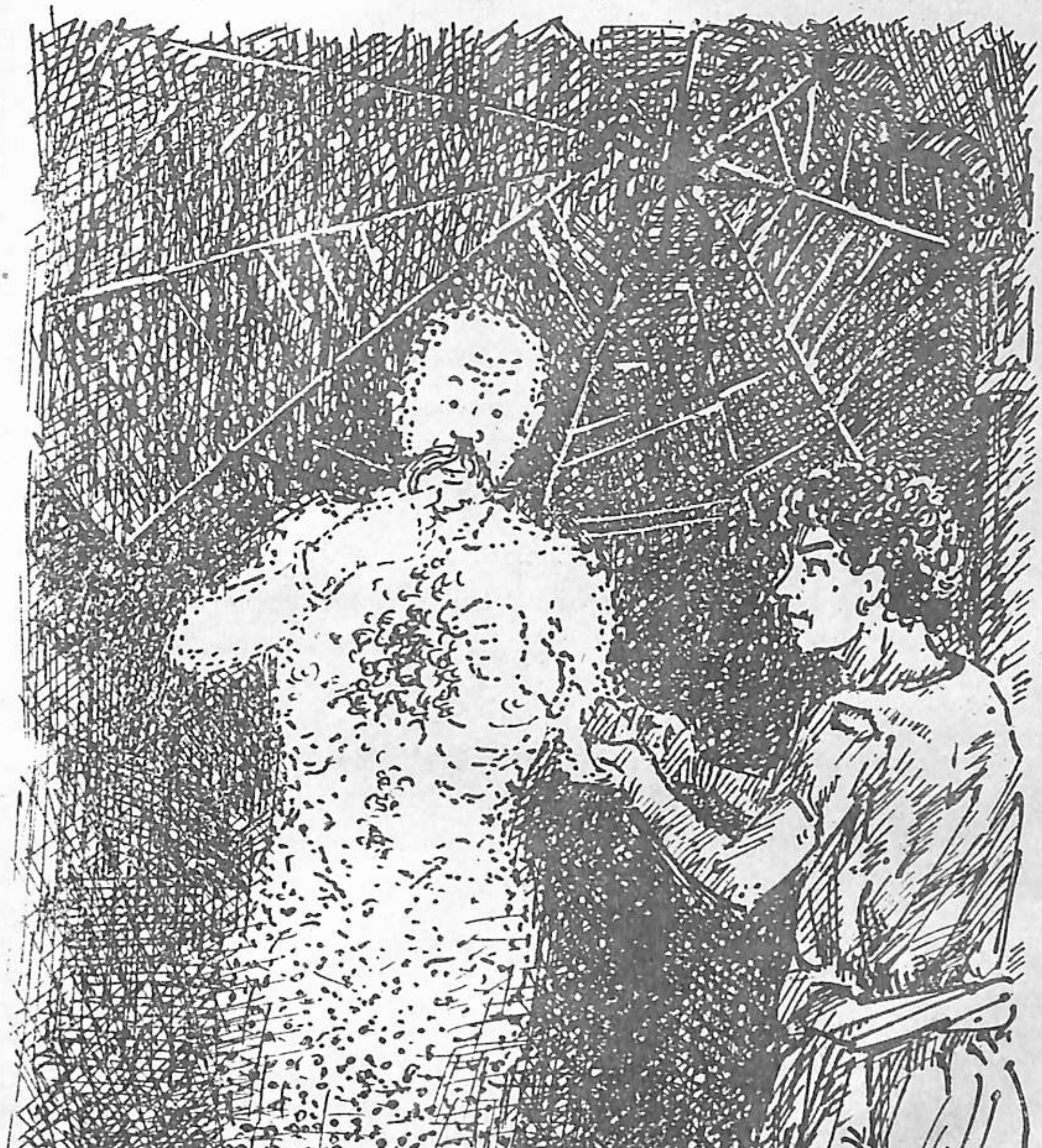
एक था बूढ़ा किसान । उसका एक बेटा था । एक दिन किसान ने अपने बेटे को बुलाया और कहा—"बेटा, अब मैं बहुत बूढ़ा हो गया हूं । तुम शहर जा कर अपने लिए कोई काम तलाश कर लो, ताकि परिवार का पालन-पोषण होता रहे ।" लड़के ने पिता की बात ध्यानपूर्वक सुनी । फिर उसने शहर जाने की तैयारी शुरू कर दी। आटा, दाल, चावल आदि की उसने अलग-अलग पोटलियां बांधी । सारा प्रबन्ध कर वह सो गया ।

अब अगले दिन बहुत सवेरे ही लड़का नौकरी की तलाश में शहर की ओर चल पड़ा। शहर गांव से काफी दूर था । चलते-चलते रास्ते में रात हो गयी। रात बिताने के उद्देश्य से वह समीप के एक गांव में चला आया। गांव में पहुंच कर उसने रात ठहरने के लिए जगह मांगी । लेकिन किसी ने भी उसे ठहरने की जगह नहीं दी।

उस गांव में एक भुतहा मकान था। बरसों से वह खाली पड़ा था। रात को वहां भूत आया करता था । मकान की हालत ठीक थी, किन्तु भूत के भय से ही कोई वहां रहने का साहस नहीं कर पाता था।

लड़का जब गांव में जगह के लिए भटक रहा था, तभी किसी ने उसे वह भुतहा मकान बता दिया। मकान देख कर वह उसी ओर चल पड़ा। अब उसने आराम से वहां अपना डेरा डाल दिया । वह निडर होकर वहां टिक गया। उसे मालूम भी नहीं था कि मकान भुतहा है।

रात पड़ी। उसने आग जलाई। फिर प्रेम से खाना बनाने लग गया। कुछ ही देर में उसने खाना बनाकर तैयार कर लिया। हाथ-मुंह धोने के बाद वह पालथी मार कर खाना-खाने बैठ गया। जैसे ही वह रोटी का एक कौर मुंह में रखने वाला था । एक दैत्याकार आकृति उसके सामने प्रकट हुई। उसे देख कर उसका हाथ का कौर हाथ में ही रह गया। वह भूत था।



लड़का अपलक उसे देखने लगा। अगले ही पल भूत बोलने लगा--- "मैं बहुत दिन से भूखा हूं । मुझे भी भोजन चाहिए ।" . . .फिर वह एक क्षण रुकने के बाद आगे बोला. . . . "आह । ऐसा स्वादिष्ट भोजन तो मुझे एक लम्बे अर्से से मिला ही नहीं है। सचमुच तुम कितने भाग्यशाली हो ।"

लड़का समझ गया कि उसके आगे कोई आदमी नहीं भूत खड़ा है। पहले तो वह डर गया, किन्तु उसकी आदमी जैसी बात सुन कर उसमें धैर्य आ गया। वह भूत से बोला, "आओ भाई, हम दोनों साथ-साथ भोजन करें।" यह कहते हुए उसने तुरन्त कुल भोजन के दो बराबर-बराबर हिस्से कर दिये। फिर एक हिस्सा उस भूत की ओर बढ़ाते हुए बोला. . . "लो भाई, प्रेम से भोजन करो।"

भूत और लड़के दोनों ने प्रेमपूवर्क भोजन किया। भूत को भोजन बहुत अच्छा लगा। वह प्रसन्न हो गया। उसकी आत्मा तृप्त हो गयी। भोजन करने के बाद वह लड़के से बोला, "मैं तुम्हें दो रुपये रोजाना दिया करूंगा और तुम मेरे लिए रोज ऐसा ही स्वादिष्ट भोजन बना दिया करो।" यह कहते हुए उसने लड़के के आगे चांदी के दो रुपये रख दिये। रुपये रखते ही वह तत्काल गायब हो गया ।

रुपये पाकर लड़का फूला न समाया। वह मन में सोचने लगा, इससे बढ़कर नौकरी और फायदे का काम भला क्या हो सकता है। रोज दो रुपये मिलेंगे, तो मैं शीघ्र ही धनी हो जाऊंगा। यह सोचते हुए न जाने कब उसे नींद ने आ घेरा और वह सो गया ।

अगले दिन रात को उसने और भी अच्छा भोजन बनाया। ठीक समय पर भूत आया। और उसने भोजन किया । फिर दो रुपये लड़के को दिये और पहले दिन की तरह ही गायब हो गया ।

यह सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा । लड़के के पास काफी रुपये जमा हो गए। अब वह अपने गांव जाने की सोचने लगा। एक रात को उसने भोजन करते समय साहस कर भूत से कहा. . . "भाई, मुझे घर छोड़े काफी

दिन हो गये हैं। घर में मेरे बूढ़े माता-पिता के अलावा कोई नहीं है। यदि तुम आज्ञा दो, तो मैं कुछ दिन के लिए घर हो आऊं।"

भूत लड़के की खिदमत से बहुत खुश था। वह बोला..."लड़के मैं तुझ से बहुत खुश हूं। तुम खुशी के साथ अपने घर जा सकते हो।" यह कहते हुए उसने अपनी मूंछ का एक बाल निकाला और लड़के को देते हुए कहा... "यह लो मेरी मूंछ का बाल। इसे सम्भाल कर रखना। जब कभी तुम पर कोई मुसीबत पड़े तो इस बाल को अपनी हथेली में रख कर रगड़ना।"

लड़के ने भूत से उसकी मूंछ का बाल लेकर अपनी अंटी में रख लिया। कुछ देर बाद भूत खाना समाप्त कर वहां से गायब हो गया।

लड़के के पास काफी रुपये जमा हो गये थे। उसने सोचा घर रुपये ले जाने के बजाय कुछ सामान खरीद कर ले जाया जाए। राज्य की राजधानी वहां से नजदीक ही थी। उसने राजधानी जाने का निश्चय कर लिया।

अगले दिन सवेरे उसने अपना सामान समेटा और राजधानी की ओर चल पड़ा। चलते-चलते दोपहर तक वह राजधानी में पहुंच गया। राजधानी उसे उजड़ी-उजड़ी सी नजर आयी। पहले भी उसने राजधानी देखी थी। इस बार वहां न पहले जैसी चहल-पहल थी और न पहले की तरह भीड़-भड़ाका। सड़कों पर इक्का-दुक्का लोग ही नजर आ रहे थे। अधिकांश दुकानों के दरवाजे बन्द पड़े थे। यह देख कर वह सकते में आ गया। उसने राह चलते एक आदमी से इसका कारण पूछा। उस आदमी ने सहमते-सहमते कहा--"लगता है तुम बाहर से आये हो। तुम्हें नहीं मालूम कि पिछले कुछ दिनों से राजधानी में एक राक्षस ने आतंक मचा रखा है। राक्षस अब तक सैंकड़ों स्त्री-पुरुष और बच्चों को अपना ग्रास बना चुका है। राजा ने विवश होकर घोषणा कर रखी है कि जो कोई भी राक्षस को मार देगा उसे आधा राज-पाट पुरस्कार में दिया जाएगा।" एक क्षण के लिए वह रुका। फिर आगे बोला--" अब तक इस घोषणा का कोई परिणाम नहीं निकला है।

भला राक्षस से कौन भिड़ सकता है। मारना तो एक तरफ रहा।" कहते हुए वह चुप हो गया। फिर लड़के से विदा लेकर वह अपने गन्तव्य की ओर चल दिया।

यह सुन कर लड़का मन ही मन बहुत खुश हुआ। उसे भूत के दिए हुए मूंछ के बाल पर विश्वास था। उसे लगा कि वह सहसा आधा राज-पाट का स्वामी बन गया है। खुशी से उछलता हुआ राजमहल की ओर चल पड़ा। कुछ ही देर बाद में वह राजमहल के द्वार पर जा पहुंचा।

सूरज छिप गया था। शाम हो गयी थी। अंधेरा तेजी के साथ अपने कदम बढ़ा रहा था। लड़के ने द्वारपालों को बताया कि वह राक्षस को मारने के उद्देश्य से यहां आया है। द्वारपालों ने तुरन्त उसे राजा के पास हाजिर किया। उन्हें राजा की ओर से ऐसा ही आदेश था।

राजा के सामने पहुंच कर लड़के ने फौरन अंटी से भूत की मूंछ का बाल निकाल कर अपनी हथेली में रख दिया। फिर उसने दूसरे हाथ की अंगुली से बाल को तनिक रगड़ा। जैसे ही उसने बाल रगड़ा, तत्काल वहां भूत प्रकट हो गया। हाथ जोड़ कर वह लड़के से बोला....."कहो, क्या हुक्म है ?"

"राक्षस ने राज्य में तबाही मचायी हुई है। बस, उस का अन्त करना है।" लड़के ने आदेश के लहजे में कहा।

आदेश पाकर भूत वहां से तत्काल गायब हो गया। यह कारनामा देख कर सब उपस्थित लोग आश्चर्य से मुंह फाड़ते हुए लड़के को देखने लगे। सब एक दूसरे को देखने लगे। इससे पहले कि कोई कुछ कहता-पूछता, भूत राक्षस को मारकर दरबार में हाजिर हो गया। अब तो सब के आश्चर्य की सीमा न रही। अपना काम समाप्त कर भूत लड़के से विदा लेकर फिर गायब हो गया।

राक्षस की मौत की खबर सुन कर राजधानी में खुशी की लहर दौड़

गयी । अपनी घोषणा के अनुसार राजा ने आधा राज-पाट लड़के को पुरस्कार स्वरूप दे दिया।

राज-पाट पा कर लड़के के हर्ष और विस्मय का पारावार न रहा । उसने अपने बूढ़े माता-पिता को भी अपने पास बुला लिया। तब से तीनों के तीनों प्रसन्नता के साथ जीवन यापन करने लगे।



तलवार का ब्याह

हजारों साल पहले की बात है। किसी राज्य में एक राजा राज करता था। उसके दो बेटे थे। राजा दोनों बेटों को प्राणों से भी अधिक प्यार करता था। दोनों भाई भी परस्पर एक-दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

राजा की मृत्यु के बाद परम्परा के अनुसार बड़े भाई ने राजकाज सम्भाला। छोटे भाई ने भी राज-काज में सुचारु रूप से चलाने में उसको पूरा-पूरा सहयोग दिया।

उस समय समाज में बहुपत्नी रखने का प्रचलन था। विशेषकर राजा लोग तो अनेक रानियां रखा करते थे। विवाह योग्य होने पर रिवाज के अनुसार दोनों राजकुमार अपने-अपने लिए सात-सात राजकुमारियों को ब्याह कर ले आये।

काफी समय बीत गया। किन्तु किसी भी रानी की सन्तान नहीं हुई। सब रानियां सन्तान की चिंता में दिन पर दिन दुबलाने लगीं। रानियां ही नहीं, दोनों भाई भी यह देखकर सदा चिंतित रहने लगे। जो जैसा कहता वह वैसा ही करते। किन्तु कोई आशा नहीं बंधी।

एक दिन दरबार में एक साधु आया। राजा साधु-सन्तों का बड़ा आदर सम्मान किया करता था। उस साधु का भी राजा ने खूब स्वागत-सत्कार किया। बातचीत चली। साधु के पूछने पर राजा ने साधु से अपनी व्यथा कह डाली। साधु ने तुरन्त अपनी झोली से एक सूखा फल निकाला और राजा को देते हुए कहा—"राजन, यह फल अपनी सबसे छोटी रानी को खिला देना। आज से ठीक पन्द्रह दिन बाद वह भगवान की कृपा से गर्भवती हो जाएगी।"

यह सुनकर राजा की प्रसन्नता का पारावार न रहा। उसे लगा कि मानो उसको पुत्र रत्न हो गया। उसने साधु के चरण स्पर्श किये और फिर

उसका दिया हुआ फल लेकर अपने पास रख लिया। कुछ देर इधर-उधर की बातचीत करने के बाद साधु राजा से विदा लेकर अपने गन्तव्य की ओर चल दिया।

साधु के जाते ही राजा सीधे सबसे छोटी रानी के महल में गया। साधु का दिया हुआ फल रानी को देते हुए उसने उसे सारी बात बताई। बात सुनकर रानी भी फूली न समाई। उसने तुरन्त फल खा लिया। राजा रानी को अपने सामने फल खिलाकर वापस दरबार में आ गया।

समय बीतता गया। राजा साधु की कही हुई बात का हर समय चिन्तन करता रहता। कुछ दिनों के बाद एक दिन रानी ने राजा को बताया कि उसको गर्भ है। अब तो राजा की खुशी का ठिकाना न रहा।

गर्भवती रानी ने एक दिन राजा से हिरन का ताजा मांस खाने की इच्छा प्रकट की। राजा के राज्य में जो जंगल पड़ते थे, वहां हिरन नहीं होता था हिरन का शिकार करने के लिए राजा को दूसरे राज्य के जंगल में जाना पड़ता। यह शिकार करना अत्यन्त कठिन था। इसके लिए राजा को अपनी जान की बाजी लगानी पड़ती। यह सोचकर राजा ने रानी को सारी कठिनाई समझाते हुए कहा कि हिरन की जगह वह बकरे का मांस खा ले। किन्तु वह नहीं मानी। और कोई रानी कहती तो राजा इतना बड़ा खतरा न उठाकर उसकी बात टाल जाता। किन्तु इस रानी की बात वह न टाल सका और उसने हिरन का ताजा मांस लाने का वायदा कर लिया।

अगले दिन दोनों भाई अपने साथ कुछ सैनिक और सेवकों को लेकर हिरन का शिकार करने के लिए चल पड़े। चलते-चलते वे हिरनों वाले जंगल में जा पहुंचे।

यह जंगल किसी दूसरे राज्य में पड़ता था। उस राजा की इनसे घोर शत्रुता थी। दोनों चोरी-छिपे हिरन की तलाश करने लगे। अपरिचित जंगल में उन्हें भारी कठिनाई का सामना करना पड़ा। लेकिन फिर भी वे जान को हथेली पर रखकर हिरन की तलाश करने लगे।

कई दिनों तक लगातार वे जंगल-जंगलों की खाक छानते रहे, किन्तु उन्हें हिरन के दर्शन तक न हुए। खाली हाथ लौटना भी उन्होंने ठीक नहीं समझा। इधर उनके पास जो खाने-पीने का सामान था, वह भी समाप्त हो गया। अब तो वे विवश होकर लौटने की सोचने लगे।

दुर्भाग्य से राजा को उनके जंगल में होने की खबर मिल गयी। राजा सुनते ही तुरन्त अपने सशस्त्र सैनिकों को साथ लेकर उधर चला आया। शत्रु राजा को अपने जंगल में शिकार खेलते देखकर राजा की आंखों में खून उतर आया। उसने देखते ही उन पर आक्रमण कर दिया।

दोनों दलों में काफी देर तक जम कर संघर्ष होता रहा। अन्त में दोनों भाई लड़ते-लड़ते मार डाले गये। राजा के मरते ही जो सेवक किसी तरह बच गये थे, सिर पर पैर रख कर भाग गये।

घर पहुंचने पर सेवकों ने रानियों को यह दुखद समाचार सुनाया। सुनकर रानियां रोने लगीं। फिर गर्भवती रानी को छोड़कर शेष तेरह रानियों ने तेरह चितायें बनायीं और वे एक साथ खुशी-खुशी सती हो गयीं।

सारे राज्य में हाहाकार मच गया। राज्य का बूढ़ा मन्त्री बड़ा स्वामीभक्त और ईमानदार था। उसने राज्य की बागडोर गर्भवती रानी के हाथ में सौंप दी। स्वयं वह सब काम करता रहा।

समय बीतता गया। राज-काज सुचारु रूप से चलता रहा। समय आने पर रानी ने एक पुत्र-रत्न को जन्म दिया। रानी के पुत्र पैदा होने की खबर सारे राज्य में विद्युत की भांति फैल गयी। सारे राज्य में खुशियां मनाई जाने लगीं।

शिशु राजकुमार के नामकरण-संस्कार के दिन दरबार में राज ज्योतिषियों की भीड़ लग गयी। राजकुमार के ग्रह आदि देख ज्योतिषियों ने बताया कि राजकुमार बड़ा प्रतापी एवं पराक्रमी होगा, किन्तु यदि पांच वर्ष की आयु में

इसका विवाह न किया गया, तो वह जीवित नहीं रहेगा। इसके अलावा सबने एक वयोवृद्ध ज्योतिषी के सुझाव पर सर्वसम्मति से राजकुमार का नाम सुमेरू रखा।

उस दिन से सुमेरू के नाम से राज-काज चलने लगा। राजकार्य तो चलता ही रहा, किन्तु ज्योतिषियों की भविष्यवाणी को दृष्टि में रखते हुए बूढ़े मंत्री ने तभी से रानी की आज्ञा से राजकुमार के लिए सुयोग्य राजकुमारी तलाश करने की दौड़-धूप भी शुरू कर दी।

आखिर मंत्री एक दिन अपने काम में सफल हो ही गया। राजकुमार के योग्य एक सर्वगुण सम्पन्न राजकुमारी उसने तलाश कर ली। राजकुमारी के पिता ने जब राजकुमार को देखने की इच्छा प्रकट की, तो वजीर ने उसे बताया कि हमारे यहां विवाह पहले तलवार के साथ होता है और विवाह के पहले राजकुमार को दिखाना अपशगुन समझा जाता है।

वह राजा बड़ा भोला था। वजीर की बात वह मान गया। उसने अपनी बेटी देने का वचन दे दिया। बात पक्की हो गयी और विवाह का दिन भी निश्चित हो गया।

वापस लौटकर मंत्री ने रानी को राजकुमार के ब्याह की सारी बात बताई। रानी ने खुश होकर बूढ़े मंत्री की पीठ खूब थपथपाई, और उसे बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।

निश्चित तिथि को बड़ी धूम-धाम के साथ राजकुमार की बारात चल दी। पालकी में राजकुमार की जगह एक चमचमाती तलवार रख दी गयी।

राजकुमारी के फेरे (भांवर) भी तलवार के साथ ही पड़े। निश्चित समय पर वजीर राजकुमारी को ब्याह कर बरात लेकर वापस लौट आया। बहू पाकर रानी की प्रसन्नता का पारावार न रहा।

राजकुमार की आयु अभी सिर्फ चार साल की ही थी। उसे देखकर राजकुमारी ने समझा कि यह सौतेला पुत्र है। उसे बड़ा दुख हुआ। किन्तु

जब उसे पता चला कि जिसको वह सौतेला पुत्र समझ रही है वह तो उसका पति है, तब तो उसके दुःख और आश्चर्य की सीमा न रही। वह अपना सिर पीटकर रह गयी। विवाह हो चुका था। अब वह कर भी क्या सकती थी। रहस्य खोलने से बदनामी के सिवाय कुछ हाथ आने वाला नहीं था। यही सब सोच-समझ कर वह चुप रह गयी। उसने सोचा कि जो भाग्य में बदा है वही होगा। इसलिए भगवान की इच्छा को स्वीकार कर लेने में ही भलाई छिपी हुई है।

राजकुमारी को अपने पिता पर इतना क्रोध आया कि उसने मन ही मन मायके न जाने का निश्चय कर डाला। विवाह के दो-चार दिन बाद राजा के यहां के एक के बाद एक बुलावे आये, किन्तु राजकुमारी ने पिता के यहां जाने की हामी नहीं भरी। इतना ही नहीं उसने कोई दुखसुख का सन्देश तक भी नहीं भेजा। विरोध व्यक्त करने का उसके पास यही तो एक मात्र हथियार था।

ससुराल वालों ने समझा कि उसे मायके में अवश्य कोई कष्ट होता होगा, तभी तो वह वहां जाना ही नहीं चाहती। उधर उसके मायके वालों ने सोचा कि ससुराल में राजकुमारी को बड़ा सुख व आराम है, इस कारण वह यहां आना पसंद नहीं करती। बेचारी राजकुमारी इन दोनों विचारों के बीच में पिसती हुई घुटघुट कर दिन काटती रही।

समय बीतता गया। एक दिन पड़ोसी शत्रु राजा के कानों में इस विचित्र विवाह की बात पड़ी। उसने राजकुमारी की अनुपम सुन्दरता का बखान भी सुना। सुनते ही वह राजकुमारी को पाने के लिए लालायित हो उठा। उसने तत्काल राजकुमारी को प्राप्त करने का निश्चय कर डाला।

उसके महल में एक कुटणी (धान कूटने वाली स्त्री) रहती थी। वह बड़ी धूर्त थी। जोड़ने के बजाय तोड़ने के कामों में बड़ी दक्ष थी। राजा कुटणी की करतूतों से भली-भांति परिचित था। उसने इस काम में कुटणी की सहायता लेना ठीक समझा। यही सोचकर उसने कुटणी को बुलाया।

फिर पड़ोसी राजकुमार की शादी की सारी बात विस्तार से सुना समझाकर कहा, "कुटणी, यदि तुम किसी तरह उस अप्सरा राजकुमारी को उसके राज्य के उत्तर दिशा में पड़ने वाले धारे (पानी का प्राकृतिक स्रोत) पर ले आओ तो मैं तुझे मालामाल कर दूंगा।"

कुटणी ने सुनकर एक लम्बी सांस खींची। फिर वह मन में सोचने लगी, 'यदि ना कहती हूं तो राजा जीवित नहीं छोड़ेगा। हां भरती हूं तो मौत के मुंह में जाना है। एक तरफ कुआं और दूसरी तरफ खाई है। फिर अभी मरने से तो बाद में मरना अच्छा है। कौन जानता है कि मैं मालामाल हो जाऊंगी।' यह सोचकर उसने जवाब दिया—"राजन मैंने इतने सालों से आपका नमक खाया है। अब भला मैं आपके काम को मना कैसे करूं? मैं अभी वहां जाती हूं। भगवान ने चाहा तो मैं अपने काम में सफल होऊंगी...।"

यह सुनकर राजा ने कुटणी की पीठ थपथपाई। फिर उसे बहुमूल्य वस्त्र और आभूषण देकर वहां से विदा कर दिया। कुटणी खुशी-खुशी वहां से लौट आयी।

घर पहुंचकर कुटणी ने राजा के दिये हुए बहुमूल्य वस्त्र पहने। फिर गले में रत्नजटित सोने की माला डाली और हाथ में एक थैला लेकर पड़ोसी राजा के राज्य की ओर चल पड़ी।

चलते-चलते वह राज्य में पहुंच गयी। रास्ते में जो कोई उसे मिलता, बिना पूछे वह कहती—"मैं राजकुमारी की बूआ हूं, दूर देश से चल कर आयी हूं।"

कुटणी के गले में बहुमूल्य हार देखकर लोगों को विश्वास करते देर न लगी कि सचमुच वह राजकुमारी की बूआ है। पूछते-पूछते वह राजमहल में जा पहुंची। द्वारपालों ने उसे रानी से मिलवाया। रानी उससे मिलकर बड़ी प्रसन्न हुई। वह उसे सीधे अपनी बहू के पास ले गयी।

राजकुमारी को देखते ही कुटणी उसको छाती से लगा कर रोने लगी।

फिर सुबकते हुए बोली—"आज कितने वर्षों बाद मैं अपनी फूल-सी राजकुमारी को देख रही हूं। तब यह चार-साल की थी। तभी तो मुझे पहचान भी नहीं रही है। ये क्या पहचानेगी, जब मैं ही इसे नहीं पहचान पा रही हूं।"

राजकुमारी को भी विश्वास हो गया कि वह उसकी सगी बूआ है। अब राजकुमारी ने बूआ से अचानक आने का कारण पूछा। कुटणी तो इस सवाल के जवाब के लिए पहले से ही पूरी तरह तैयार थी। उसने बड़ी चतुरता से कहा—"भाई राजा ने ही मुझे भेजा है। मैं तेरे शिशु पति की देखभाल करने के लिये आयी हूं। जब पति कुछ बड़ा हो जाएगा, तो मैं वापस चली जाऊंगी। मेरा यहां रहने का क्या काम? घर पर लड़के, बहू और पोते-पोतियां हैं। भाई को यह सुनकर सदमा लगा है। लेकिन अब हो ही क्या सकता है। विधाता को यही मंजूर था। तेरे भाग्य में यही बदा था।" यह कहते-कहते वह आंचल से मुख ढककर जोर-जोर से सुबकने लगी।

अब तो राजकुमारी को पूरा विश्वास हो गया कि बुढ़िया उसकी सगी बूआ है और उसे उसके पिता ने ही भेजा है। फिर तो वह कुटणी को अपनी सगी बुआ समझकर स्नेह करने लग गयी।

राजकुमारी के साथ उसकी बुआ रहे, इसमें रानी को भी भला क्या आपत्ति हो सकती थी। वह भी खुश होकर सोचने लगी कि बहू के पिता ने अपनी बहन को सेवा-सुश्रुषा के लिए भेजा है। अब वह भी निश्चित हो गयी।

धूर्त कुटणी सम्मान के साथ राजमहल में रहने लगी। राजकुमारी की बूआ होने से सब उसका बड़ा आदर-सत्कार किया करते और हर प्रकार से उसे खुश रखने की कोशिश करते थे। अच्छा-अच्छा खा-पीकर कुछ ही दिन में उसके पिचके हुए गाल भर गये और चेहरे पर रौनक आ गयी। वह अपने भाग्य को सराहने लगी।

इसी तरह कुछ दिन बीत गये। कुटणी ने जल्दी ही भोली-भाली राजकुमारी का दिल जीत लिया। अब वह राजकुमारी को किसी तरह धारे तक ले जाने की योजना बनाने लगी।

एक दिन वह राजकुमारी को बहका, फुसलाकर धारे तक ले जाने में सफल हो गयी। इसकी सूचना उसने गुप्त रूप से पहले ही अपने राजा को भिजवा दी थी। राजा वेश बदल कर वहां प्रतीक्षा कर रहा था। जैसे ही वह राजकुमारी को लेकर धारे के पास पहुंची, राजा तुरन्त प्रकट हो गया। उसने तेजी के साथ राजकुमारी को पकड़कर घोड़े पर बैठाया और फिर सरपट अपने राज्य की ओर भाग खड़ा हुआ। कुटणी का काम समाप्त हो गया था। वह भी अपने घर की ओर चल पड़ी।

राजकुमारी के अपहरण की खबर आनन-फानन में राज्य भर में फैल गयी। रानी और मंत्री का दुख और शोक से बुरा हाल हो गया। उनके पास ताकत होती तो वे शत्रु राजा को परास्त कर अपनी बहू को वापस लाते। किन्तु कमजोर होने के कारण वे अपना मन मसोस कर रह गये।

उधर राजा राजकुमारी को लेकर सीधे अपने महल में पहुंचा। उसने राजकुमारी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। राजकुमारी बड़ी समझदार थी। उसने सोच-समझकर जवाब दिया—"राजा मैंने बारह वर्ष के लिए ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हुआ है। दो साल बीत गये हैं और दस साल शेष हैं। मुझे व्रत पूरा कर लेने दो। फिर मैं खुशी से आपके साथ विवाह रचा लूंगी।" एक क्षण रुकने के बाद वह आगे बोली, "यदि आपने जोर-जबर्दस्ती की तो मैं विवश होकर आत्महत्या कर लूंगी।"

राजा को मजबूर होकर उसकी शर्त स्वीकार करनी पड़ी। उसने सोचा कि राजकुमारी मेरे कब्जे में है। इसे अब कौन ले जा सकता है। फिर दस साल का समय कटते देर ही क्या लगती है। यह सोचकर उसने राजकुमारी को एक एकान्त महल में रख दिया, ताकि उसका व्रत बिना किसी अड़चन के पूरा हो जाए। राजकुमारी का प्रबन्ध कर राजा निश्चित होकर रहने लगा। राजकुमारी भी अपनी तरकीब सफल होती देखकर मन-ही-मन बड़ी प्रसन्न हुई।

उधर रानी और मंत्री ने राजकुमारी को राजा के चंगुल से छुड़ाने के लिए काफी कुछ दौड़-धूप की। किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। शत्रु

राजा से लड़ाई मोल वे ले नहीं सकते थे। क्योंकि राजा के पास अपार सैनिक शक्ति थी और वह उसके बल पर उनको कुचल सकता था।

सूमेरू चांद की तरह बढ़ने लगा। धीरे-धीरे आठ साल बीत गये। सुमेरू बारह साल का पूरा हो गया। बारह साल का सूमेरू अठारह साल का गबरू जवान जैसा लगता था। शेर की तरह उसका गठा हुआ शरीर था और वह जिंदा शेर भी पकड़ कर ले आता था। जल्दी ही उसकी वीरता की खबर चारों ओर फैल गयी।

सयाना होने पर किसी तरह सुमेरू के कानों में पत्नी की बात पहुंच गयी। अब क्या था। वह अपनी मां से पत्नी के बारे में पूछने लगा। पहले तो उसकी मां उसे नाना प्रकार से समझा-बुझा कर टालती रही, मगर जब वह अपनी जिद्द पर अड़ा रहा, तो विवश होकर उसने सारी बात सच-सच उसे बता दी।

पत्नी के अपहरण और अपने पिता तथा चाचा के वध की करुण कहानी सुनकर सुमेरू का खून खौलने लगा। वह क्रोध से कांपने लगा। तत्काल उसने मां के सामने प्रतिज्ञा की—"जब तक मैं उस दुष्ट राजा को तलवार के घाट उतारकर अपने पिता व चाचा के खून का बदला न ले लूंगा, तब तक घर पर चैन से नहीं बैठूंगा।"

यह प्रतिज्ञा कर वह तुरन्त घर छोड़कर चल पड़ा। उसकी मां ने उसे समझाने की लाख कोशिश की, रोकने के हजार उपाय किये, किन्तु वह नहीं माना।

घर से दूर जा कर सुमेरू ने साधु का वेश बनाया और उस दुष्ट राजा के राज्य की ओर चल पड़ा। साधु वेश में कई दिनों तक वह राजमहल के इर्द-गिर्द चक्कर काटता रहा।

राजमहल के निकट एक धारा (पानी का प्राकृतिक स्रोत) था। राज-कुमारी की निजी दासी रोजाना बड़े सबेरे धारा से ताजा पानी भरकर ले जाया करती थी। सुमेरू को इस बात का पता चल गया।

एक दिन उसने राजकुमारी के नाम एक गुप्त पत्र लिखा। फिर पत्र

लेकर वह धारे के पास बैठकर दासी के आने की प्रतीक्षा करने लगा। निश्चित समय पर दासी आयी। सुमेरू ने दासी को एक अशरफी दी और कहा—"यह पत्र अपनी राजकुमारी को दे देना। यदि तुम कल इसी समय इसका जवाब लेकर आ जाओगी, तो तुम्हें पांच अशरफ़ियां और दूंगा। लेकिन यह सारी बात अपने तक ही रखना।"

अशरफी पाकर दासी बहुत खुश हुई। जीवन में उसने इससे पहले कभी अशरफी देखी भी नहीं थी। वह सुमेरू का पत्र लेकर जल्दी-जल्दी महल की ओर चल पड़ी। उसके जाते ही सुमेरू भी वहां से गायब हो गया।

महल में पहुंच कर दासी ने वह पत्र राजकुमारी को दे दिया। पत्र पढ़कर राजकुमारी सारी बात समझ गयी। वह दासी से भी यह बात छिपाकर रखना चाहती थी। दासी की नजर बचा कर उसने उसी कागज पर पत्र का जवाब भी लिख दिया। फिर दासी को बुलाकर उसने डांटते हुए कहा—"तू ऐसे पत्र कहां से और क्यों लाती है? खबरदार जो आज से ऐसी हरकत की। इसे ले जाकर कल उसी के सिर पर दे मारना।"

यह कहकर उसने पत्र दासी को सौंप दिया। दासी ने सोचा कि राजकुमारी नाराज हो गयी है। लेकिन आदेश पालन के अलावा उसके सामने चारा ही क्या था।

अगले दिन निश्चित समय पर दासी पत्र को लेकर पानी लेने को चल पड़ी। सुमेरू तो वहां पहले से ही बैठा प्रतीक्षा कर रहा था। सुमेरू को देखते ही दासी ने राजकुमारी की आज्ञा के अनुसार क्रोध में भरकर वह पत्र उसके सिर पर दे फेंका। सुमेरू दासी की हरकत देख कर हक्का-बक्का रह गया। फिर वह बिना कुछ कहे-सुने चुपचाप जल्दी से पानी भरकर वापस महल को चल पड़ी।

सुमेरू ने समझा कि बना बनाया खेल बिगड़ गया है। उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। कांपते हुए हाथों से उसने पत्र उठाकर खोला। एक दो सांस में वह सारा पत्र पढ़ गया। पत्र पढ़कर उसकी जान में जान आयी। राजकुमारी ने पत्र में राजमहल से निलकने की सारी योजना संक्षेप में गुप्त

भाषा में लिखकर भेजी थी। सुमेरू तुरन्त योजना को सफल बनाने के लिए काम करने में जुट गया।

समय बीतता गया। राजकुमारी के ब्रह्मचर्य व्रत की अवधि पूर्ण हो गयी। राजा ने उसके सामने पुनः विवाह का प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव सुनकर उसने मुस्कराते हुए कहा—"राजा, आपकी बात सहर्ष स्वीकार है। किन्तु मेरी एक छोटी-सी शर्त है। व्रत की शान्ति करनी आवश्यक है। इसके लिए कुछ साधु-सन्तों को जिमाना पड़ेगा।"

राजा ने उसकी बात खुशी-खुशी मान ली। अगले ही दिन राजा ने साधु-सन्तों को भोजन कराने की घोषणा करवा दी।

निश्चित तिथि को निश्चित समय पर राजमहल में साधु-सन्तों का आना शुरू हो गया। देखते-ही-देखते वहां साधु-सन्तों की एक अच्छी खासी पलटन जमा हो गयी।

राजा की ओर से इन साधु सन्तों के लिए शानदार भोजन का प्रबन्ध किया गया था। राजा खुशी से मद्यपान कर दासियों के हाथों में खेल रहा था। राजकुमारी छिपकर सारे कार्य-क्रम को देख रही थी।

साधु-सन्तों के वेश में सुमेरू और उसके चुने हुए सैनिक थे। उन्होंने अपने लम्बे-लम्बे लबादों के नीचे दुधारी तलवारें छिपा कर रखी हुई थीं। यही नहीं लबादों के अन्दर उन्होंने लोहे के मजबूत कवच भी पहने हुए थे।

साधु-सन्तों ने खूब डटकर भोजन किया। फिर वे कीर्तन भजन करने में जुट गये। अंधेरा घिर आया। रात पड़ने लगी। उचित अवसर देखकर सूमेरू के इशारे पर वे राजमहल और राजा के अंगरक्षकों पर टूट पड़े।

अचानक आक्रमण होता देखकर राजा के विश्वासी सैनिकों और अंगरक्षकों ने आत्मसमर्पण कर दिया। जिन्होंने मुकाबला करने का साहस किया खूंखार सैनिकों ने उन्हें आनन-फानन में तलवार के घाट उतार दिया।

राजा को हमले की खबर मिली तो वह हक्का-बक्का रह गया। वह सीधे राजकुमारी के महल की ओर लपका। किन्तु राजकुमारी महल मे नहीं थी। वह तो वहां से निकल कर कभी की अन्यत्र छिप गयी थी। वहां साधु के वेश में सूमेरू राजा का इन्तजार कर रहा था। राजा को देखते ही वह उस पर भूखे चीते की भांति टूट पड़ा। राजा ने भी तलवार निकालकर उसका सामना करना शुरू कर दिया। काफी देर तक दोनों में द्वन्द युद्ध चलता रहा। अन्त में सुमेरू ने राजा के तलवार से टुकड़े टुकड़े कर डाले।

राजा के मारे जाने का समाचार सुनकर दरबारी और सैनिक सबके सब भौंचक्के रह गये। बचने का कोई चारा न देखकर सबने सुमेरू के आगे आत्मसमर्पण कर दिया।

सुमेरू ने अपनी प्रतीज्ञा पूरी कर ली थी। अब उसने राजकुमारी को अपने साथ घोड़े पर बैठाया और अपने राज्य की ओर चल दिया। विश्वासी सेवक और सैनिक भी उसके पीछे-पीछे चल पड़े। उसके जाते ही राजा के छोटे भाई ने राजगद्दी सम्भाल ली।

घर पहुंच कर उसने अपनी मां के चरणों में सिर रख दिया। मां ने स्नेह से सूमेरू व बहू को गले से लगा लिया। सबकी आंखें खुशी के आंसुओं से सजल हो उठीं।

इसके बाद सुमेरू ने राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली। वर्षों तक उसने आराम से राज किया।

बांध-बांध पैगुड़ी, मार-मार सोटा

किसी गांव में एक विधवा रहती थी। उसका एक लड़का था। बड़ी कठिनाई से वह मेहनत-मजदूरी कर अपना और अपने लड़के का पेट पाला करती थी।

कुछ साल बाद जब वह सयाना हुआ, तो उसकी मां ने उससे कहा—"बेटा, अब अकेली मेरी मेहनत से ही हमारी गुजर-बसर नहीं हो सकती है। तू भी शहर जाकर कोई काम तलाश कर ले।"

लड़का मां का बड़ा भक्त था। उसने मां की बात मान ली। स्वीकृति में उसने सिर्फ अपना सिर हिला दिया।

अगले दिन बड़े सवेरे मां ने चार मोटी-मोटी रोटियां बनाकर एक कपड़े में लपेट कर बेटे को देकर शहर की ओर रवाना कर दिया। लड़का खुशी के साथ शहर की ओर चल पड़ा।

चलते चलते दोपहर होते-होते वह एक घनघोर जंगल में जा पहुंचा। थकान और भूख से उसका बुरा हाल हो गया था। वह एक भारी भरकम पत्थर के ऊपर बैठ गया। भूख उसे बड़ी जोर की लगी हुई थी। उसने रोटियों की पोटली खोली और फिर खाना शुरू करने लगा। तभी उसे न जाने क्या ख्याल आया। वह कहने लगा—"एक खाऊं, दो खाऊं, तीन खाऊं या चारों को खा जाऊं?"

उस पत्थर के नीचे एक गुफा थी। वहां चार अछरियां (परियां) रहती थीं। अछरियों ने जब सुना तो वे भयभीत हो उठीं। उन्होंने सोचा कि ऊपर बैठा कोई शक्तिशाली व्यक्ति है और हम सब को खा जाना चाहता है। अब क्या था। सबने परस्पर विचार विमर्श किया। अगले ही पल उनमें से एक अछरी लडके के सामने आयी और बोली—"लड़के, हम तुम्हें एक ऐसी पतीली देंगे, जिससे तुम मनचाहा खाना मांग सकोगे। लेकिन शर्त सिर्फ यह है कि तुम हमें न खाओ।"

लड़का सुनकर मन ही मन बेहद खुश हुआ। वह तुरन्त उस अछरी की बात मान गया। अगले ही क्षण अछरी ने उसे एक पतीली लाकर दे दी। पतीली सौंप कर वह अन्तर्धान हो गयी।

लड़के ने चुपचाप रोटियां खायीं और फिर पतीली को बगल में दबाकर वह शहर जाने के बजाय वापस घर की ओर चल दिया।

जाड़ों के दिन थे। जल्दी ही रात हो गयी। अंधेरा तेजी के साथ डग बढ़ाने लगा। अभी वह घर से काफ़ी दूर ही था कि घुप अंधेरा हो गया। रात को अकेला चलना उसने ठीक नहीं समझा। वह रात ठहरने के लिए रास्ता चलते-चलते कोई आश्रय तलाश करने लगा।

कुछ दूर चलने पर उसे रास्ते से तनिक हटकर एक छोटी-सी झोंपड़ी दिखाई दी। झोंपड़ी में धुंधली सी रोशनी हो रही थी। आशा के साथ वह उसी ओर चल पड़ा। झोंपड़ी के दरवाजे पर पहुंच कर उसने दस्तक दी। कुछ देर बाद दरवाजा खुला। उसके सामने एक बुढ़िया खड़ी थी। बुढ़िया से उसने रात-भर ठहरने के लिए जगह मांगी तो बुढ़िया ने उससे कहा कि मैं बहुत गरीब हूं। ठहरने को तो झोंपड़ी के एक कोने में पड़े रहना, मगर खाने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है।

लड़के के सामने सिर्फ ठहरने की समस्या थी। उसने बुढ़िया से कहा—"खाने की तुम चिंता न करो। केवल ठहरने की जगह दे दो।"

अब बुढ़िया ने उसे अन्दर बुला लिया। अन्दर पहुंचकर लड़के ने पतीली अपने सामने रखी और फिर कहा—"पतीली में खीर आ जाए।" उसके कहने की देर थी कि पतीली खीर से लबालब भर गयी। बुढ़िया तो यह देखकर दांतों तले अंगुली दबाये बिना न रही।

दोनों ने भरपेट खीर खायी। फिर लड़का झोंपड़ी के एक कोने में सो गया। लड़का तो सो गया, किन्तु बुढ़िया को नींद नहीं आयी। वह उसकी चमत्कारी पतीली हथियाने की योजना बनाने लगी। बुढ़िया के पास वैसी ही एक साधारण पतीली थी। वह चुपचाप उठी फिर उसने लड़के की जादुई पतीली के स्थान पर अपनी पतीली रख दी और तानकर सो गयी।



रात खुली। लड़के ने मुंह हाथ धोया और फिर वह पतीली को बगल में दबाये खुशी-खुशी अपने घर की ओर चल पड़ा।

घर पहुंचकर उसने अपनी मां को पतीली दिखाई और कहा—"मां मैं जादुई पतीली लाया हूं। इस पतीली से जो भी भोजन हम चाहेंगे, वह तत्काल मिल जाएगा।"

मां लड़के के मुंह से यह सुनकर आश्चर्यचकित हुए बिना न रही। उसके चेहरे पर प्रसन्नता की रेखाएं उभर आयीं। अगले ही पल लड़के ने कहा—"पतीली में खीर आ जाए।" लेकिन उसमें खीर न आयी। वह प्रतीक्षा करता रहा। पर पतीली खाली की खाली ही रही। काफी देर तक वह ऐसा ही कहता रहा और इन्तजार करता रहा। लेकिन पतीली में खीर नहीं आयी। लड़के को बड़ी हैरानी हुई। मां की भी सारी खुशी उदासी में बदल गयी। लड़के को समझते देर न लगी कि अछरी ने उसे ठगा है। यह समझकर उसने अगले दिन फिर अछरी के यहां जाने का निश्चय कर डाला।

पहले की तरह एक पोटली में चार रोटियां बांध कर वह शहर की ओर चल पड़ा। इस बार उसका ध्येय शहर जाना नहीं था, बल्कि अछरी की तलाश करना था। दोपहर होते-होते वह उसी स्थान पर पहुंच गया, जहां उसने अछरी से जादुई पतीली ली थी। पहले की तरह वह कहने लगा—"एक खाऊं, दो खाऊं, तीन खाऊं या चारों को खा जाऊं।"

चारों अछरियों के कानों में जब लड़के के ये शब्द पड़े तो वे सहम गयीं। उन्हें लगा कि आज तो लड़का अवश्य ही उन्हें खा डालेगा। अगले ही पल उन्होंने परस्पर विचार विमर्श किया। फिर उनमें से एक अछरी साहस कर बाहर आई लड़के को बैठा दखकर वह नम्रता से बोली—'कल ही तो हमने तुम्हें जादुई पतीली दी है। अब तुम हमें क्यों खाना चाहते हो?'

"जादुई पतीली। तुम मुझे बहला रही हो। वह तो साधारण पतीली थी।" लड़के ने तनिक गुस्से में कहा।"

अछरी समझ गयी कि जादुई पतीली किसी ने ठग ली है। एक क्षण वह चुप रही। फिर बोली—"अच्छा फिकर मत करो। अब की बार हम तुम्हें झड़-झड़ खंता और सोने की लंका देंगे। इससे तुम मन चाहा सोना मांग सकते हो। जब तुम्हें सोने की जरूरत पड़े इसे झाड़ना।" यह कहते हुए वह तुरन्त नीचे गयी और 'झड़-झड़ खंता' (कटी फटी रजाई) को ले आयी। फिर लड़के को थमाकर वह अन्तर्धान हो गयी।

लड़के ने झड़-झड़ खंता बगल में दबाई और घर की ओर चल पड़ा। इस बार भी उसे रास्ते में रात हो गयी। वह उसी बुढ़िया के यहां जा पहुंचा।

बुढ़िया लड़के को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। वह समझ गयी कि अवश्य वह इस बार भी कोई चमत्कारी चीज लेकर आया होगा। उसने जादुई पतीली से लड़के को प्रेमपूर्वक भोजन कराया। फिर उस कटी फटी रजाई (झड़-झड़ खंता) के बारे में पूछा। लड़के ने झड़-झड़ खता की विशेषता बुढ़िया से साफ-साफ बता दी। अब तो बुढ़िया के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह झड़-झड़ खंता को भी हथियाने की सोचने लगी।

रात जब लड़का गहरी नींद में सोया था तो बुढ़िया ने चुपके से उसकी झड़-झड़ खंता चुरा ली और उसकी जगह अपनी कटी-फटी रजाई रख दी। फिर वह चुपचाप सो गयी।

अगले दिन रात खुलते ही लड़के ने रजाई बगल में दबाई और घर की ओर चल पड़ा।

घर पहुंच कर उसने अपनी मां से झड़-झड़ खंता की विशेषता बताई। सुनकर मां के हर्ष और विस्मय का पारावार न रहा। उसने कमरा बन्द किया। फिर झड़-झड़ खंता को झाड़ा। लेकिन उससे धूल झड़ने के अलावा कुछ न झड़ा। अब तो उसकी मां को उस पर क्रोध आ गया। उसने उसे काफी बुरा भला कहा। लड़के को भी अछरी पर बड़ा क्रोध आया। उसने समझा कि अछरी ने इस बार भी उसे मूर्ख बनाया है।

अगले दिन उसने फिर चार रोटियां पोटली में बांधी और पोटली को लेकर शहर जाने के बहाने अछरी के ठिकाने की ओर चल पड़ा।

पहले की जगह पर बैठ कर उसने फिर कहना शुरू किया—"एक खाऊं, दो खाऊं, तीन खाऊं या चारों को खा जाऊं।"

अछरियों ने सुना तो वे भय से थर-थर कांपने लगीं। कुछ देर बाद चारों अछरियां निकलकर बाहर आयीं? फिर उनमें से एक अछरी ने लड़के से पूछा—"क्यों लड़के, हमने तुम्हें जो झड़-झड़ खंता दी थी वह कहां गयी?"

"तुमने मुझे धोखा दिया है। वह तो साधारण सी फटी हुई खंता (रजाई) थी। मैं इतना भोला नहीं हूं जितना तुम समझती हो।" लड़के ने शिकायत के स्वर में कहा।

अछरियों को समझते देर न लगी कि लड़के से किसी ने झड़-झड़ खंता भी ठग ली है। उनके पूछने पर लड़के ने बुढ़िया के यहां रात को ठहरने वाली बात साफ-साफ बता दी। अछरियां समझ गयीं कि बुढ़िया ने लड़के की दोनों चीजें हथियाई हैं। उन्होंने तुरन्त बुढ़िया को सबक सिखाने का निश्चय कर डाला। इसके बाद उन्होंने लड़के को एक जादुई सोटा (डंडा) और एक जादुई पैंगुड़ी (रस्सी) देते हुए कहा—"इस सोटा और पैंगुड़ी को लेकर उस बुढ़िया के यहां ठहरना। जब वह इसके बारे में पूछे तो कहना —'बांध-बांध पैंगुड़ी, मार-मार सोटा।' इसके बाद तुम्हें फिर यहां नहीं आना पड़ेगा। सारा जीवन सुख से बीतेगा।"

लड़के ने सोटा और पैंगुड़ी ली और घर की ओर चल पड़ा।

पहले की तरह वह सीधे बुढ़िया के यहां पहुंचा। बुढ़िया ने भी पहले की तरह उसका खूब आदर-सत्कार किया। जादुई पतीली से लड़के की नजर बचाकर उसने अच्छा-अच्छा खाना उसे खिलाया। खाना खिलाने के बाद उसने लड़के से पूछा कि इस बार यह सोटा और पैंगुड़ी क्यों लाया है। लड़के ने तत्काल जवाब में कहा 'बांध-बांध पैंगुड़ी, मार-मार सोटा।' उसके कहने की देर थी कि पैंगुड़ी (रस्सी) बुढ़िया को लपेटने लगी और सोटा (डंडा) उसे तड़ातड़ मारने

लगा। यह देखकर बुढ़िया चीखने-चिल्लाने लगी। भय से उसका पसीना छूटने लगा। उसने फौरन कहा—"मैं अभी तेरी पतीली और झड़-झड़ खंता देती हूं। मुझे मत बांध और मार।"

लड़के ने कहना बन्द कर दिया। बुढ़िया ने चुपचाप उसकी दोनों चीजें लाकर उसे दे दीं। अपनी करामाती चीजें पाकर लड़के की खुशी का ठिकाना न रहा। उसी समय वह अपने घर की ओर चल पड़ा।

रात खुलते-खुलते वह घर पहुंच गया। घर पहुंच कर उसने अपनी मां को दोनों चीजें दिखाई और दोनों चीजों के चमत्कार बताये। मां के तो आश्चर्य की सीमा न रही। उसकी आंखों में खुशी के आंसू छलछलाने लगे। तब से दोनों मां बेटे आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करने लगे।

चूहे और बिल्लियों की कथा

चूहों और बिल्लियों का एक गांव था। बिल्लियां मौज से चूहों का शिकार किया करती थीं। एक बार बिल्लियों ने बेचारे चूहों पर ऐसा जुल्म ढाया कि उनमें भारी आतंक छा गया।

एक दिन सब चूहों ने मिल बैठ कर इस समस्या पर विचार-विमर्श किया। एक बूढ़े चूहे ने सुझाव दिया कि बिल्लियों को मजा चखाने का एक ही उपाय है। हमें कुछ दिन तक अपने बिलों से बाहर नहीं आना चाहिए। फिर देखते हैं बिल्लियां कैसे गांव में रहती हैं। उस बूढ़े चूहे का सुझाव सबको जंच गया। सबने स्वीकृति में अपना सिर हिला दिया।

उस दिन से सबके सब चूहे अपने परिवारों के साथ बिलों में दुबक कर रहने लग गए। संकरे बिलों में बिल्लियों की पहुंच नहीं थी। किसी तरह चूहे वहां अपनी गुजर बसर करने लगे।

दिन, सप्ताह और महीना बीत गया। लेकिन क्या मजाल कि एक भी चूहा घड़ी भर के लिए भी अपने बिल से बाहर निकला हो।

चूहों के इस तरह गुप्त वास लेने से बिल्लियों की जान के लाले पड़ने लगे। उनका आहार तो वे चूहे और उनके सगे सम्बन्धी व लाड़ले लड़के-बच्चे ही थे। जब चूहों के बिलों से बाहर निकलने के कोई आसार नजर नहीं आए, तो बिल्लियों के परिवारों ने भी एक सभा बुलाई। सभा में इस गंभीर स्थिति पर विचार-विमर्श किया गया। अन्त में एक बड़ी बिल्ली ने सूझाव देते हुए कहा कि हमें किसी तरह चूहों से वैवाहिक सम्बन्ध कायम करने चाहिएं। क्योंकि वे हमसे अत्यधिक भयभीत हो गए हैं। इसलिए सिवाय इसके उनको बिलों से बाहर निकालने का कोई चारा नहीं है। सब बिल्लियों और बिलावों को उसकी बात जंच गई। उन्होंने एक स्वर से उसकी बात का समर्थन किया।



अब क्या था। अगले दिन वह बूढ़ी बिल्ली चूहों के बिल के पास गई और बोली, "भाइयो, इस तरह से कटुता बनाए रखने में कोई फायदा नहीं है। हमनें तुम पर अब तक बहुत जुल्म किए हैं। हम इसके लिए क्षमा मांगते हैं। साथ ही हम प्रस्ताव रखते हैं कि तुम्हारे हमारे मधुर सम्बंध कायम हो जाएं। अच्छा हो कि तुम हमारे बिलाव से विवाह के लिए एक चुहिया दे दो। फिर हम सब हमेशा मिल-जुल कर रहेंगे।

चूहों ने बिल्लियों का प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया। उनके लिए भला इससे ज्यादा सुखद आश्चर्य क्या हो सकता था। शादी का दिन निश्चित हो गया। बिल्लियों की तो प्रसन्नता का पारावार ही न रहा।

निश्चित तिथि को बिल्लियों की एक बड़ी बारात बड़े धूम-धड़ाके के साथ चूहों के यहां चल दी।

उधर चूहों ने भी बिल से बाहर आकर विवाह की तैयारियां पूर्ण कर दी थीं। जैसे ही बारात चूहों के यहां पहुंची, चूहों ने उनका स्वागत किया। दोनों ओर के गाजे-बाजों से आसमान गूंजने लगा। दोनों पक्षों की खुशी का ठिकाना न रहा। बिल्लियां और बिलाव तो अवसर की तलाश में थे। उन्होंने अपनी कूट भाषा में ढोल-दमाऊ बजाने शुरू कर दिए--"एक-एक को चार-चार--एक-एक को चार-चार"--अर्थात एक-एक बिल्ली या बिलाव के हिस्से में चार चार चूहे आएंगे। यह विचार कर वे खुशी से और भी तेज रफ्तार से नाचने-कूदने लग गए।

चूहे भी कम चालाक नहीं थे। उन्हें बिल्लियों की कूट भाषा समझते देर न लगी। फौरन से उन्होंने जवाब में ढोल-दमाऊ बजाए-"नाचो-कूदो बिल भी खोदो--नाचो-कूदो बिल भी खोदो"--अर्थात नाचते गाते हुए बिल्लियों से बचाव करने के लिए बिल खोदकर जितनी जल्दी हो सके बिलों में छिप जाओ। अब क्या था। इससे पहले कि बिल्लियां चूहों को अपना शिकार बनाकर चट करतीं, चूहे एक-एक कर देखते ही देखते बिलों में घुस गए। बिल्लियां यह देखकर हाथ मलती रह गईं। उनके सुखद सपने चूर-चूर हो गए।

बिल्लियों ने फिर भी आशा नहीं छोड़ी । बूढ़ी बिल्ली ने अत्यंत चालाकी से पुकारा "झांसा-मूसा, जगत का रहू, एक बात कहूं जरा भैर त अऊ—अर्थात हे जगत प्रसिद्ध चूहो, तनिक बिलों से बाहर आकर एक जरूरी बात तो सुन लो ।

बिल्ली कह भी न पाई थी कि फौरन बिल से व्यंग्य भरी आवाज आई—"बिल्ली-सिल्ली तू जगत की दुन्दर, कहले तू बाहर से हम सुणले अन्दर"—अर्थात हे संसार की धूर्त बिल्ली, तू बाहर से कह ले । हम अन्दर से सुन लेंगे ।

इस जवाब से बिल्लियों की रही-सही आशा पर भी पानी पड़ गया । वे समझ गईं कि चूहों से पार-पाना बड़ी टेड़ी खीर है ।

निराश होकर बिल्लियों की बारात बिना चुहिया को ब्याहे ही खाली हाथ लौट गई । तब से चूहों ने कभी बिल्लियों की चिकनी-चुपड़ी बातों पर विश्वास नहीं किया । विवश होकर बिल्लियों के परिवार उस गांव को छोड़-छोड़ कर अन्यत्र चले गए ।

लड़का और चुड़ैल परी

किसी गांव में एक जमींदार रहता था। उसका खेती और पशु-पालन का बहुत बड़ा कारोबार था। उसकी चार पत्नियां थीं। तीन बड़ी पत्नियों की कोई सन्तान नहीं थी। सबसे छोटी पत्नी का एक लड़का था।

एक दिन की बात है। जमींदार पड़ोस के गांव से घर लौट रहा था। शाम का समय था। उसे रास्ते में एक अधेड़ औरत मिली। यह एक चुड़ैल-परी थी, जिसने अधेड़ उमर की औरत का रूप धारण किया हुआ था। उसने जमींदार को देख कर उससे निवेदन के स्वर में कहा——"मेरा इस संसार में कोई नहीं है। मैं गरीब हूं, मुझे कोई काम देकर क्या आप मेरी सहायता कर सकते हैं।"

जमींदार को उस पर दया आ गयी। वह उसे लेकर घर आ गया। घर पहुंच कर उसने उसे खाना खिलवाया और फिर सुलवा दिया।

अगले दिन जमींदार ने उसे भेड़ चराने भेजा। वह खुशी-खुशी भेड़ों को लेकर जंगल की ओर चल दी। भेड़ों को पाकर उस चुड़ैल-परी की बांछें खिल उठीं। अब क्या था। उसने एक-एक कर भेड़ें चट करनी शुरू कर दीं। शाम होते-होते उसने आधी भेड़ें चट कर दीं। फिर शाम को वह शेष भेड़ों को लेकर वापस घर चली आयी।

सिर्फ आधी भेड़ें घर वापस आते देखकर जमींदार के दुख और आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने चुड़ैल–परी को डांटते-फटकारते हुए भेड़ों के गायब होने के बारे में पूछा। लेकिन वह बिल्कुल खामोश रही। जमींदार ने समझा भेड़ों को जंगली जानवर खा गया होगा। इसमें इस बेचारी का क्या दोष है। यह सोचकर वह अपना नुकसान सहकर चुप रह गया। लेकिन उसने उसे भविष्य में सतर्क रहने की चेतावनी दे दी।

अगले दिन चुड़ैल-परी फिर उसी तरह भेड़ों को लेकर जंगल को चल दी।



भेड़ों का खून तो उसके मुंह लग ही चुका था। उस दिन तो उसने जंगल पहुंचने से पहले ही भेड़ों को चट करना शुरू कर दिया। सब भेड़ें चट करने के बाद वह वहीं एक पेड़ की छाया में लम्बी तान कर सो गयी।

शाम ढलने पर वह घर की ओर चल पड़ी। उसे बिना भेड़ों का अकेला आता देख कर गुस्से से जमींदार के तन बदन में आग लग गई। इस बार इतना बड़ा नुकसान जमींदार से न सहा गया। उसने आव देखा न ताव और चुड़ैल-परी को लाठी से पीटना शुरू कर दिया। मार पड़ती देखकर रोती हुई सिर पर पैर रख कर वह वहां से भाग खड़ी हुई। कुछ दूर तक जमींदार ने उसका पीछा किया, किन्तु जब वह हाथ न आयी, तो जमींदार अपना गुस्सा पीकर वापस लौट आया। इसके अलावा वह चुड़ैल परी का कर भी क्या सकता था।

बहुत दिन बीत गये। एक दिन उस चुड़ैल-परी ने एक खूबसूरत युवती का रूप धारण किया और जमींदार के गांव की ओर चल पड़ी। संयोग से रास्ते में उसकी भेंट जमींदार से हो गयी। उसे देखते ही जमींदार उस पर मोहित हो गया। बात करने के उद्देश्य से जमींदार ने उस से पूछा—"तुम किस गांव की रहने वाली हो। इस तरह एक दम अकेली कहां जा रही हो?"

चुड़ैल-परी तो इस अवसर की तलाश में निकली थी। उसने फौरन जवाब दिया, "मेरा भाग्य फूट गया है। मेरा पति अचानक मर गया है। अब मैं एक दम अनाथ हो गयी हूं। विवाह हुए अभी एक महीना भी नहीं हुआ है।" यह कहते कहते वह आंचल में मुख छिपाकर सुबकने लगी।

यह सुन कर जमींदार ने तनिक ठिठकते हुए कहा—"यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें अपने यहां रख सकता हूं। इससे भी ज्यादा अगर चाहो तो तुम्हें अपनी पांचवीं पत्नी बना सकता हूं।"

चुड़ैल-परी की मानो साध पूरी हो गयी हो। उसने स्वीकृति में अपना सिर हिला दिया। अब क्या था। जमींदार उसे अपने साथ लेकर घर की ओर वापस लौट चला। कुछ ही देर में वह उसे लेकर घर पहुंच गया। चुड़ैल-परी अब जमींदार की पत्नी बनकर रहने लगी।

उसकी चार सौतें और थीं। चुड़ैल-परी की अपनी चार सौतों से बिल्कुल नहीं बनती थी। मौका पाकर सब की नजर बचाकर उसने एक-एक कर तीन सौतों को चट कर दिया।

चौथी सौत के कान में चुड़ैल-परी के कुकृत्य की भनक पड़ गयी। वह उससे चौकन्नी रहने लगी। साथ ही वह अपने बेटे को भी उससे बचाकर रखती। चुड़ैल-परी ने उस बेचारी की नींद हराम कर दी। विवश होकर वह बिना जमींदार से कुछ कहे-सुने चुपचाप एक दिन रात को अपने लड़के को लेकर घर छोड़ कर भाग गयी। लगातार कई दिन तक चलते रहने के बाद वह एक गांव में पहुंच गयी। फिर वहीं रहकर किसी तरह मेहनत-मजदूरी कर अपना और बेटे का पेट पालने लग गयी।

इसी तरह गांव में रहते-रहते उसे कुछ साल हो गये। इस बीच लड़का भी कुछ सयाना हो गया। एक दिन उसने लड़के को अपनी सारी राम कथा सुनायी। सुन कर लड़के की भुजाएं क्रोध से फड़क उठीं। उसने तत्काल चुड़ैल-परी से बदला लेने का निश्चय कर डाला।

उधर चुड़ैल-परी ने जमींदार को भी चट कर लिया। फिर धीरे-धीरे उसका आतंक गांव भर में छा गया। कुछ ही समय में वह गांव उजाड़ हो गया। वही गांव नहीं, आसपास के गांवों में भी उल्लू बोलने लगे।

एक दिन लड़का अपनी मां को बिना बताये अपने गांव की ओर चल दिया। रास्ते में पूछने पर राहगीरों ने उसे चुड़ैल-परी की काली करतूतें बतायीं। लेकिन वह डरा नहीं। बिना किसी भय से लगातार आगे बढ़ता ही गया। चलते-चलते वह एक कस्बे में पहुंच गया।

कस्बे में एक बुढ़िया रहती थी। चुड़ैल-परी उस बुढ़िया के यहां आया-जाया करती थी। संयोग से लड़का बुढ़िया के यहां जा पहुंचा। उसने बुढ़िया से रात ठहरने की जगह मांगी। पहले तो बुढ़िया ने साफ मना कर दिया, किन्तु जब लड़के ने बहुत अनुनय विनय की; तो वह मान गयी। अब लड़के ने वहीं डेरा डाल दिया।

लड़का अपने साथ अच्छा भोजन बनाकर लाया था। उसने अपनी पोटली खोली फिर जब खाने बैठा तो बुढ़िया को भी उसमें बराबर हिस्सा दिया। उसके इस विनम्र व्यवहार से बुढ़िया बेहद खुश हो गयी। खाना खाते-खाते उसने चुड़ैल-परी का सारा राज़ लड़के को बता दिया। सुन कर लड़का मन ही मन बहुत खुश हुआ।

सुन्दर मौका देखकर उसने बुढ़िया से चुड़ैल-परी की मौत का रहस्य पूछा। बुढ़िया उसका आग्रह टाल न सकी। बोली—"इस चुड़ैल-परी के प्राण सात समंदर पार तोते में हैं। यह जादू की जूतियां पहन कर सात समंदर पार जाया करती है। यह कहते-कहते उसने फौरन जूतियां निकाल कर लड़के के आगे रख दीं।

बातों बातों में लड़के ने जूतियां अपने पैरों में पहन लीं। जूतियां पहनते ही वह आसमान में उड़ने लगा। यह देखकर बुढ़िया हक्की-बक्की रह गयी। लेकिन वह कर ही क्या सकती थी।

लड़का कुछ ही समय में सात-समंदर पार हो गया। वहां उसने एक पेड़ की डाल पर एक बदसूरत तोता बैठा देखा। उसे समझते देर न लगी कि इस तोते में ही चुड़ैल-परी के प्राण हैं। उसने पैरों से जादुई जूतियां निकाल दीं। अब वह जमीन पर आ गया। उसने लाठी के एक ही वार से उस तोते की एक टांग तोड़ डालीं। तोता गच से आकर जमीन पर गिर गया। अब वह उड़ नहीं सकता था। पीड़ा से वह कराहते लगा। लड़के ने तोते को पकड़ कर अपनी बगल में दबा लिया। फिर उस ने जूतियां पहनीं। जूतियां पहनते ही वह आसमान में हवा से बातें करने लगा। कुछ देर बाद वह उड़ते-उड़ते सात समंदर पार कर वापस बुढ़िया के घर आ पहुंचा।

घर पहुंचते ही उसने जादुई जूतियां उतार कर अपने पास रख लीं। वहां पहुंच कर उस ने जो कुछ देखा उससे उसके रोंगटे खड़े हो गये। बुढ़िया बेहोश पड़ी थी। चुड़ैल-परी लाल पीली आंखें किये बैठी बुरी तरह कराह रही थी। उसकी एक टांग टूट चुकी थी। हुआ यह था कि जैसे ही लड़के ने उस तोते की टांग तोड़ी इधर-चुड़ैल-परी की एक टांग भी टूट गयी। क्योंकि उसके प्राण तोते में थे।

लड़के को देख कर चुड़ैल परी उसके पैरों में पड़ गयी। गिड़गिड़ाते हुए बोली—— "लड़के, मैं तुझे बहुमूल्य हीरे-जवाहरात और सोना-चांदी दूंगी, पर तू इस तोते को मुझे दे दे।"

लड़का समझदार था। वह जानता था कि तोते को चुड़ैल-परी को सौंपने का मतलब है स्वंय को मौत के मुंह में झोंकना। वह चुड़ैल-परी की चिकनी-चुपड़ी बातों में नहीं आया। उसने देखते ही देखते चुड़ैल-परी के सामने उस तोते की दूसरी टांग भी तोड़ दी। उसकी टांग टूटते ही चूड़ैल-परी की दूसरी टांग भी टूट गयी। अब तो वह मारे दर्द के जोर-जोर से चीखने लगी। कुछ देर बाद लड़के ने तोते की गरदन भी मरोड़ दी। गरदन टूटते ही तोते के प्राण-पखेरू उड़ गये। उसके साथ ही चुड़ैल-परी ने भी दम तोड़ दिया। इस प्रकार लड़के ने सता-सताकर चुड़ैल-परी का अंत कर डाला।

इसके बाद लड़का अपने गांव गया। वहां जाकर उसने अपना उजड़ा हुआ घर फिर से बसाया। तब से दोनों मां-बेटे जीवन पर्यन्त सुख के साथ रहे।

चतुर किसान

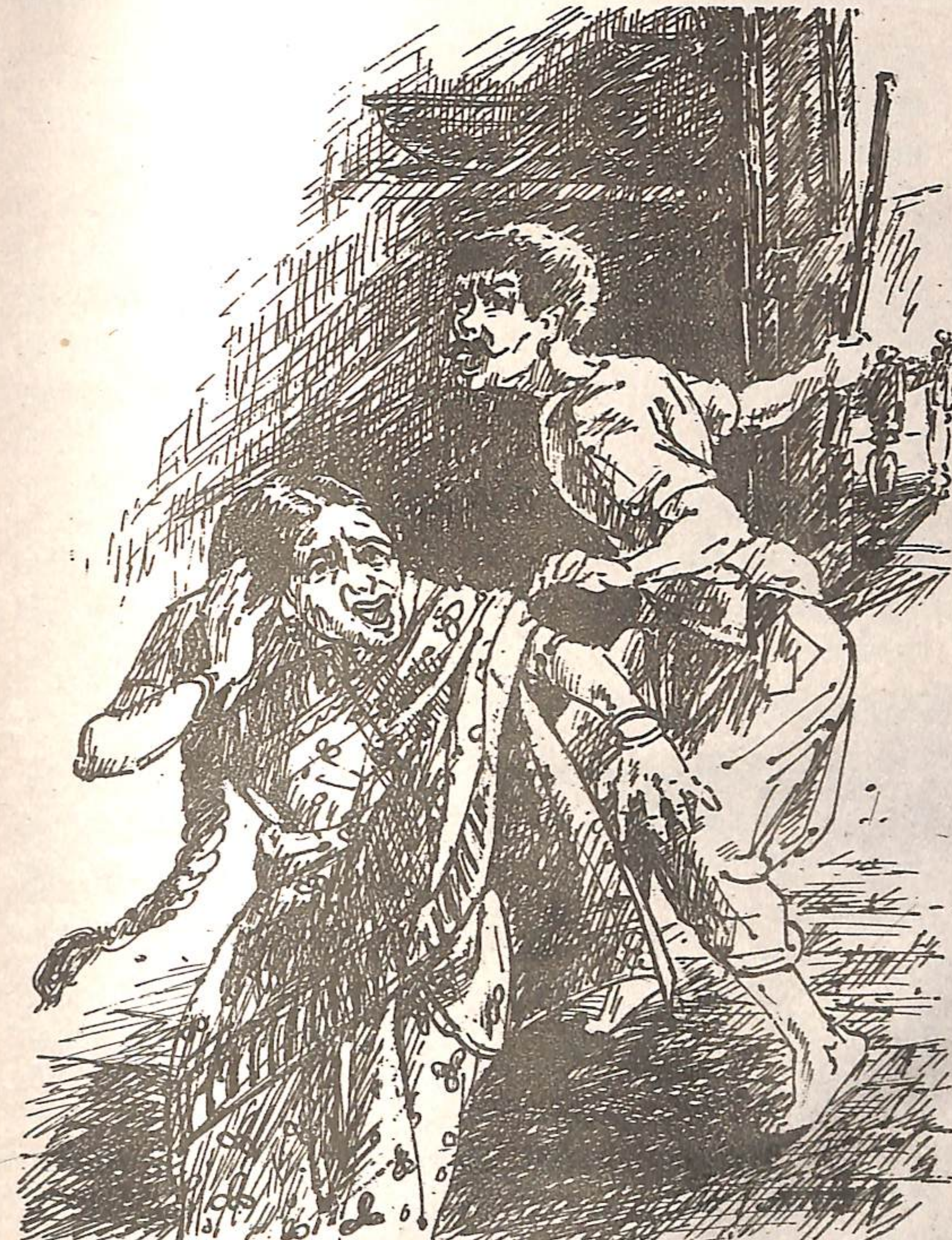
एक था किसान। उसके परिवार में पत्नी के अलावा और कोई नहीं था। किसान के पास धन–सम्पत्ति काफी थी। खेती से अनाज इतना हो जाता था कि उसे खाने-पीने की कोई चिंता नहीं रहा करती थी।

किसान को सब तरह से तो आनंद–ही–आनंद था, मगर उसकी पत्नी बड़ी कर्कशा थी। चौबीसों घंटे वह किसान से लड़ती झगड़ती रहती थी। जरा–जरा-सी बात पर वह सारा घर सिर पर उठा लिया करती थी। किसान ईमानदार और समझदार था। वह पत्नी के मुंह अधिक नहीं लगा करता था। लेकिन पत्नी से वह पूरी तरह छुटकारा भला कैसे पा सकता था। सब तो ठीक था, किन्तु उसमें एक कमी थी। वह आंख से कुछ कम देखता था। उधर पत्नी चाहती थी कि पति अंधा हो जाता तो कितना अच्छा होता। यही सोच-विचार कर किसी के कहने पर उसने शिव जी की पूजा करनी शुरू कर दी। अब शिवजी के नाम के वह सप्ताह में व्रत भी रखने लगी। व्रत के दिन वह पानी चढ़ाने के लिए शिव मन्दिर जाया करती।

किसान ने जब उसे ऐसा करते देखा तो उसका माथा ठनका। उससे चुप न रहा गया। वह पूछ बैठा। पूछने पर पत्नी बोली ...."मैं शिवजी के व्रत तुम्हारे आंखों की ज्योति वापस लौटाने के निमित्त रख रही हूं।"

किसान बड़ा चतुर था। वह समझ गया कि पत्नी झूठ बोल रही है। उसने पत्नी की परीक्षा लेने का मन में निश्चय कर लिया। अब वह चुपचाप मौके की तलाश करने लगा।

व्रत का दिन आया। किसान ने रात को ही शरीर पर राख पोत कर और नकली केश लगा कर शिवजी का वेश बनाया। फिर वह उस पीपल के पेड़ के नीचे पालथी मार कर बैठ गया, जहां उसकी पत्नी पानी चढ़ाने जाया करती थी।



अगले दिन मुंह अंधेरे उसकी पत्नी पानी चढ़ाने के लिए वहीं आयी। पेड़ के नीचे किसी को ध्यान मग्न बैठा देख कर पहले तो वह सहम गयी, लेकिन अपना समूचा साहस बटोर कर वह उसे गौर से देखने लगी। उसने क्या देखा कि पेड़ के नीचे साक्षात शिव ध्यान मग्न बैठे हैं। वह डरने के बजाय अपने भाग्य को सराहने लगी। शिवजी को देखकर वह चुपचाप खड़ी हो गयी। किसान ने तो उसे चोर नजर से देख ही लिया था। पत्नी को पानी का लोटा हाथ में लिए हुए अविचल खड़ा देखकर किसान ने आवाज़ बदल कर कहा...... "भक्तिन क्या चाहिए ? मांग जो भी चाहिए। भोलेनाथ तेरी हर इच्छा और अभिलाषा पूर्ण करेंगे।"

साक्षात शिवजी को प्रसन्न होकर बोलता हुआ देखकर उसका शरीर रोमांचित हो उठा। वह सोचने लगी 'क्या मांगूं'। मगर उसने सोचने में अधिक समय लगाना ठीक न समझा। उसकी तो इच्छा ही एक थी। फिर क्या था तत्काल धीमे स्वर में याचना करने लगी ... "हे परमेश्वर महाराज, यदि तुम सचमुच मुझ पर प्रसन्न हो तो मेरे मालिक को अंधा कर दो।"

यह सुन कर शिवजी बना किसान खिलखिलाकर हंसा और फिर गम्भीर होकर बोला "ऐसा ही होगा।" फिर एक क्षण रुकने के बाद वह आगे बोला "लेकिन इसके लिए तुझे एक उपाय करना होगा। तभी तेरी मनोकामना पूर्ण हो सकती है।"

"परमेश्वर महाराज, तुम जो भी उपाय बताओगे मैं करूंगी। अपनी तरफ से मैं कोई कोरकसर नहीं छोड़ंगी।" ...वह हाथ जोड़ कर अत्यन्त विनय के स्वर में बोली।

"अच्छा, ध्यान से सुन। आज से अपने मालिक को इतना दूध–घी खिलाओ कि उसकी आंखों में चरबी भर जाए। फिर तेरी मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण हो जाएगी।"

"ऐसा ही करूंगी परमेश्वर महाराज।" यह कहकर उसने शिवजी को फिर सिर झुका कर प्रणाम किया और खुशी के साथ अपने घर की ओर चल पड़ी।

जैसे ही पत्नी वहां से गयी, किसान सिर पर पैर रखकर सीधे घर की ओर दौड़ चला। पत्नी के घर पहुंचने के पहले ही वह घर पहुंच गया। घर पहुंच कर चट से स्नान कर वह चुपचाप रजाई ओढ़ कर मुंह ढक कर सो गया।

कुछ देर बाद पत्नी भी घर आ गयी। घर आकर उसने आग जलाई और गरम पानी चूल्हे पर चढ़ा दिया। फिर दूध दुहने के लिये गौशाला में चली गयी। कुछ देर बाद वह बाल्टी भर कर दूध दुह कर ले आयी। दूध लाकर उसने चूल्हे पर चढ़ा दिया। दूध गरम हुआ तो उसने खूब शक्कर मिलाई फिर उसे घी के साथ औटाया और लोटा भर कर पति के पास जा पहुंची।

पति तो बनावटी नींद सोया हुआ था। वह पत्नी की सारी खुसर-फुसर चुपचाप सुन रहा था। वह समझ रहा था कि पत्नी उसी के कहने के अनुसार कर रही है। मन ही मन वह पत्नी की मूर्खता पर हंस रहा था। साथ ही अपनी चतुरता पर भी उसे गर्व हो रहा था।

दूध जमीन पर रखकर उसने धीरे से पति के मुख से रजाई हटाते हुए अत्यन्त मधुर स्वर में कहा..."लो, गरम–गरम दूध का एक घूंट पी लो। जब से खेती के काम काज की भीड़ पड़ी है, तब से तुम्हारी सेहत ही गिर गयी है।" यह कहते हुए उसने लोटे से दूध गिलास में उंडेला और पति को थमा दिया।

किसान ने सोचा अब पत्नी उसके जाल में फंस गयी है। उसने दूध का गिलास पकड़ते हुए कहा..."अरी मेरी आंखों से तो आज कुछ दिखाई ही नहीं पड़ रहा है। न जाने क्या हो गया है। आज सुबह से ही आंखें झिलमिल–झिलमिल कर रही हैं। कल तो ऐसा नहीं था। कमजोरी से ज्योति मंद पड़ती नजर आ रही है। वैसे तो मैं दूध पीता नहीं हूं, पर जब तू प्रेमपूर्वक ले ही आयी है, तो पी लेता हूं।" यह कहते-कहते वह गटागट गरम–गरम दूध पीने लगा।

सारा लोटा दूध पीने के बाद वह फिर लेट गया। यह देख कर पत्नी मन ही मन बड़ी खुश हुई। उसे लगा कि शिवजी ने उसकी प्रार्थना सुन ली है। तभी तो वरदान मांगते ही किसान आंखों की ज्योति मंद होने की शिकायत

कर रहा है। अब क्या था। शिवजी के कहने के अनुसार पति को घी, दूध और दही अधिक से अधिक मात्रा में खिलाना शुरू कर दिया। अब वह जो भी खाना बनाती, घी से ही बनाती। सुबह शाम वह दूध, हल्वा और खीर ही पति को खिलाने लग गयी।

किसान की तो पौ बारह हो गयी। उसने सोचा वैसे तो वह खिलाती थी नहीं चलो इसी बहाने खा लो। यह सोच कर उसकी प्रसन्नता का पारावार न रहा।

किसान का सिर्फ खाने का काम था ——खा-पीकर वह चारपाई पर लेटा रहता। अंधा जो बन गया था। दो चार दिन खूब छक कर घी-दूध खाने के बाद एक दिन वह सहसा चिल्ला उठा...."आह, आज तो मेरी नजर बिल्कुल चली गयी है।" उस समय पत्नी उसके पास ही खड़ी थी। वह बोल पड़ी ..! "भगवान के लिए ऐसा न कहो।"

यह सुन कर किसान पत्नी को अंधों की तरह टटोलने लगा। फिर एक क्षण चुप रहने के बाद बोला ....."न जाने पूर्व जन्म में कौन से पाप कर्म किये थे, जो इस जन्म में जवानी में ही आंखों से हाथ धोना पड़ा है। हे भगवान, अब तो जल्दी से जल्दी चोला बदल कर दे।"

पत्नी उसे बनावटी ढाढस बंधाने लगी। अब वह उसे और भी घी, दूध खिलाने-पिलाने लग गयी।

उधर किसान अंधा होने का स्वांग रचकर टट्टी—पेशाब भी घर में ही करने लगा। विवश होकर पत्नी को उसकी टट्टी पेशाब साफ करनी पड़ती। यदि कभी वह बाहरी दिल से कहता कि मुझे टट्टी पेशाब के लिए बाहर ले जाया कर तो पत्नी प्रपंच करती हुई कहती कि अंधे हो, घर में ही करने में कोई हर्ज व शर्म की बात नहीं है। इतना ही नहीं,वह कहती कि पत्नी का तो धर्म ही पति की सेवा करना है। किसान को तब क्या चाहिए था। वह तो पत्नी को खूब सताना चाहता ही था। वह जहां मरजी आती, वहां बिगाड़ देता। पत्नी परेशान हो गयी। लेकिन करती क्या।

किसान के अंधा होते ही पत्नी ने अपने मित्रों को घर पर खूब खिलाना पिलाना शुरू कर दिया । किसान सब चुपचाप देखता रहता था । वह जब काम पर घर से बाहर जाती तो किसान को घर की चौकीदारी पर बैठा जाती । उसके पास पत्थर जमा कर रख जाती और जाते समय कह जाती—"जब इधर चौक में किसी ढोर-डंगर के आने की आहट सुनो, तो अंदाज से पत्थर फेंक देना डंगर भाग जाएंगे ।"

एक दिन पत्नी के कुछ मित्र उसकी अनुपस्थिति में वहां आ टपके । किसान उन्हें पहचानता था । उन्हें देखते ही उसने पत्थर बरसाने शुरू कर दिये । किसी के पैर पर पत्थर लगा तो किसी का सिर फूट कर खून बहने लगा । पत्थर बरसते देख कर वे वहां से रफू चक्कर हो गये ।

सारे गांवों में यह बात फैल गयी कि अन्धे किसान ने कुछ लोगों को पत्थरों से मारा पीटा है । उसकी पत्नी ने भी यह खबर सुनी । उसे बड़ा दुख हुआ । लेकिन वह अब कर भी क्या सकती थी । उसने सफाई देते हुए लोगों को बताया कि ढोर-डंगरों की गलतफहमी में उसके पति ने पत्थर फेंके हैं ।

उस दिन से कभी भी पति को ऐसा काम नहीं सौंपा । अब वह बाहर का काम मजदूरों से करवाने लगी और स्वयं घर पर ही रहने लगी ।

इसी तरह समय बीतता गया । एक दिन पत्नी ने अपने तीन–चार मित्रों को एक साथ जाफत (दावत) पर बुलाया । उनके लिए उसने खूब स्वादिष्ट भोजन बनाया । किसान के लिए साधारण सा खाना बना कर उसे पहले ही खिला कर निबटा दिया । किसान चुपचाप उसकी सारी हरकतें देख रहा था । बस किसी उचित मौके की तलाश में सब-कुछ चुपचाप सहन किये जा रहा था ।

मित्र अभी भोजन करने बैठे ही थे कि तभी पड़ोसिन का लड़का भागता हुआ उनके घर आकर बोला ,"तुम्हारा बछड़ा रस्सी तोड़कर पीज रहा (दूध पी रहा) है ।"

सुन कर पत्नी किसान से बोली . . ."मैं बछड़ा बांध कर अभी आती हूं । तुम तब तक जरा इधर भी ध्यान रखना । कहीं बिल्ली तुम्हारे हिस्से का दूध न पी जाए ।"

यह कहते हुए वह तेजी के साथ गौशाला की ओर चल पड़ी।

किसान तो ऐसे मौके की तलाश में बैठा ही था। फिर क्या था। पत्नी के जाते ही उसने दरवाजे के पीछे पहले से ही छिपा रखा बांस का डंडा निकाला और आव देखा न ताव, मौज से भोजन कर रहे उन आदमियों पर टूट पड़ा। मार पड़ती देख कर वे सब के सब देखते देखते ही खाना छोड़ कर वहां से भाग खड़े हुए।

कुछ ही देर में पत्नी भी गौशाला से लौट आयी। उसने जो कुछ देखा उससे उसके हाथ के तोते उड़ गये .! . "वह ठगी सी रह गयी। उसे भौंचक्की देख कर किसान ने चतुरता से कहा . . . "मैं तो आंखों से देखता हूं नहीं। न जाने आज कितनी बिल्लियां यहां रसोई घर में घुस आयी थीं। मैंने जब सुना कि वे चप–चप कर दूध पी रही हैं, तो डंडा उठा कर अंदाज से उनको मारना शुरू कर दिया। भाग्य से दो–चार डंडे पड़ते ही वे भाग गयीं। यदि मुझे डंडा न मिलता तो वे सारा दूध–दही चट कर गयी होतीं।

"चलो, कोई बात नहीं है।" . . पत्नी धीरे से बोल उठी। उसका इतना कहना था कि किसान ने उसी को डंडे से पीटना शुरू कर दिया। अब तो उसे समझते देर न लगी कि पति वास्तव में अंधा नहीं है बल्कि अंधा होने का अभिनय कर रहा है। दो-चार डंडे खाते ही वह उसके पैरों में पड़ कर रोते हुए माफी मांगने लगी।

किसान ने उसे डंडे मारते हुए पूछा . . . "बोल शिवजी से तूने क्या वरदान मांगा था ?" अब तो पत्नी को समझते देर न लगी कि जिसे साक्षात शिवजी समझ कर उसने पति की आंखें फोड़ने का वर मांगा था वह उसके पति के सिवाय कोई नहीं था। यह जान कर वह शर्म से पानी-पानी हो गयी।

किसान ने उसे क्षमा कर दिया। उस दिन से उसने कभी भी पति के साथ छल-प्रपंच करने का साहस तक नहीं किया। पति ने भी नादान समझ कर उसकी सारी काली करतूतों को भुला दिया। तब से दोनो जीवन पर्यन्त मिल-जुल कर बड़े प्रेमपूर्वक रहे।

स्याल और तितरा (तीतर)

किसी जंगल में एक स्याल और एक तितरा रहते थे। दोनों की परस्पर गहरी दोस्ती थी। स्याल स्वभाव से ही बड़ा चालाक था और समय–समय पर वह तितरे को अपनी तीव्र बुद्धि से बेवकूफ भी बना दिया करता था। तितरा भोला-भाला और सीधा-सच्चा था। वह जानता था कि स्याल उसका सच्चा मित्र नहीं है, फिर भी वह उसी के मन की किया करता था।

एक दिन की बात है। स्याल ने तितरा से कहा कि हंसाने वाली कोई ऐसी बात कर जिससे-हंसते हंसते पेट में बल पड़ जाएं। यह सुन कर तितरा बेहद खुश हुआ। अब वह मौके की तलाश करने लगा।

संयोग से कुछ देर बाद उधर एक कुत्ते का आना हुआ। कुत्ते को देख कर तितरा ने स्याल को पास ही घनी झाड़ियों में छिपा दिया। फिर वह स्वयं उड़कर कुत्ते के एकदम-समीप गया। जैसे ही कुत्ता उस पर झपटने लगा, वह फुर्र से उड़ कर उससे कुछ दूर जा पहुंचा। कुत्ता फिर उसके पीछे भागा। तितरा फिर उड़ कर कुछ दूर जा बैठा। कुत्ता फिर भागा। काफी देर तक यही होता रहा। तितरा ने कुत्ते को खूब थका दिया, लेकिन वह कुत्ते की पकड़ में न आया। कुत्ता थक कर चूर–चूर हो गया। क्रोध और थकान से वह बेतहाशा हांफने लगा। हार कर उसने तितरा का पीछा करना छोड़ दिया और चुपचाप पेड़ की छाया में लेट गया।

स्याल छिप कर यह देख रहा था। वह हंसे बिना न रहा। हंसते–हंसते वह लोट–पोट हो गया। सचमुच उसके पेट में बल पड़ गये। यह देखकर तितरा उसके पास गया और बोला... "अब तो तुम्हारे पेट में हंसते–हंसते बल पड़ गये हैं न।"

स्याल को लगा कि तितरा को अपनी तरकीब पर घमंड हो गया है। उससे तितरे का ज्यादा बुद्धिमान होना न सहा गया। वह उसे हराने की युक्ति



सोचने लगा। अगले ही पल उसने चालाकी से कहा, "तितरा, हंसते–हंसते तो पेट में बल पड़ गये हैं। अब कोई ऐसी बात कर जिससे रोते-रोते नानी याद आ जाए।"

यह सुन कर तितरा बड़ी परेशानी में पड़ गया। रोने की भला कौन-सी बात करे। इसी सोच में वह डूब गया। कुछ देर चुप बैठा रहा। उसे चुप देख कर स्याल ने समझा कि वह हार मान रहा है। अब क्या था। स्याल उसे हिला-हिला कर रोने की बात करने के लिए विवश करने लगा।

तितरा ने कच्ची गोलियां नहीं खेली थीं। स्याल के विचित्र व्यवहार से वह तंग आ गया आखिर उसने एक तरकीब सोच ही ली। उसने फिर स्याल को एक झाड़ी में छिपा दिया। स्वयं वह वहां से उड़ कर उसी कुत्ते के पीछे चल पड़ा।

कुछ दूर उड़ने पर वह कुत्ते के बिल्कुल समीप जा पहुंचा। कुत्ता तितरा को देख कर उसकी ओर लपका। तितरा बचकर एक ओर हो गया। कुत्ते ने उसका पीछा किया। तितरा फुदक–फुदक कर अंत में कुत्ते को लेकर उस झाड़ी के पास आ पहुंचा, जहां स्याल छिपा हुआ था। कुत्ते की नजर स्याल पर पड़ गई। वह तितरा को छोड़ कर स्याल पर जा धमका। कुत्ते को अपनी ओर झपटता देख कर स्याल वहां से सिर पर पैर रख कर भाग खड़ा हुआ। अब क्या था। कुत्ते ने स्याल का पीछा करना शुरू कर दिया। स्याल किसी तरह जान बचाकर फिर कुत्ते की नजर से ओझल होकर एक झाड़ी में जा छिपा।

तितरा स्याल को देख रहा था। वह फुदक–फुदक करके फिर कुत्ते के आगे गया। कुत्ता उसे देखकर उस पर झपटा। वह फुदक–फुदक कर आगे निकल गया। कुत्ता उसका पीछा करने लगा। तितरा इस तरह फुदक–फुदक करता हुआ कुत्ते को फिर उसी झाड़ी के पास ले आया, जहां स्याल भयभीत हुआ छिपा था। स्याल को देख कर कुत्ता फिर तितरा को छोड़ कर उस पर झपटा। स्याल फिर जान बचाकर भागा। अब कुत्ता उसका पीछा करने लगा। स्याल अधिक दूर न जाकर पास ही कुत्ते की नजर बचाकर एक झाड़ी में दुबक गया।

कुत्ता उसकी घात लगा कर बैठ गया । तभी तितरा फुदक–फुदक कर कुत्ते के पास आया । तितरा को देख कर कुत्ता उस पर झपटा । तितरा उड़ता हुआ उस झाड़ी के पास पहुंचा, जहां स्याल छिपा हुआ था । कुत्ते ने स्याल को देख लिया । वह देखते ही उस पर टूट पड़ा । अब तो स्याल को छटी का दूध याद आ गया । साक्षात मौत को देख कर रोते–रोते उसे नानी याद आ गयी ।

जब कुछ देर तक तितरा ने स्याल को इसी तरह रुलाया, तो हार मान कर उसने तितरा से प्रार्थना की कि कुत्ते से उसकी रक्षा करे । रोते हुए स्याल को देख कर तितरा को तरस आ गया । वह फुदक–फुदक करता हुआ फिर कुत्ते के सामने आया । कुत्ता उस पर झपटा । वह बच निकला । इस बार वह कुत्ते को इसी तरह बहुत दूर ले गया । फिर वह उड़ कर वापिस स्याल के पास आ गया । तितरा को अपने पास देख कर स्याल की जान में जान आ गयी ।

उस दिन से स्याल ने कभी भी तितरा को सताने और नीचा दिखाने की कोशिश नहीं की । सचमुच चालाक अपनी ही चालाकी का शिकार हो जाया करता है ।

एक था काला (बेवकूफ)

किसी गांव में एक किसान रहता था। उसका एक लड़का था। लड़का देखने में तो काफी हृष्ट–पुष्ट था, किन्तु था बड़ा ही बेवकूफ। उसके माता–पिता ने लाख उसे पढ़ाने–समझाने की कोशिश की, किन्तु उसकी बेवकूफी बढ़ती ही चली गई। यह देख कर माता–पिता को बड़ी चिंता सताने लगी।

एक दिन की बात है। किसान ने अपने लड़के के बारे में गांव के मुखिया से चर्चा की। मुखिया ने उसकी बात ध्यानपूर्वक सुनी। फिर उसे सुझाव दिया कि वह अपने बेवकूफ लड़के की यदि शादी कर दे तो जिम्मेदारी पड़ने से वह होश्यिार हो जाएगा। मुखिया का सुझाव किसान को बहुत अच्छा लगा। वह मुखिया को धन्यवाद देकर वापस घर लौट आया।

घर आकर किसान ने अपनी पत्नी को मुखिया का दिया हुआ सुझाव सुनाया। पत्नी फूली न समायी। वह अपने बेवकूफ बेटे का विवाह करने के लिए तुरंत तैयार हो गई।

कुछ ही दिन में किसान ने गांव के मुखिया की मदद से किसी तरह रुपया पैसा लगाकर अपने बेवकूफ बेटे की शादी करदी। शादी हो गयी तो किसान दम्पति की खुशी का पारावार न रहा। उन्हें लगा कि उन्होंने जग जीत लिया है। मगर उनके बेटे के व्यवहार में कोई अंतर नहीं आया। वह बेवकूफ का बेवकूफ ही रहा। उसकी बेवकूफी की खबर उसकी नई दुल्हन को भी हो गई। वह उसकी बोलचाल और व्यवहार बर्ताव को देख–सुनकर अपना माथा पीटकर रह गई। बेवकूफ के पल्ले बंधकर वह अपने भाग्य को कोसने लगी। किन्तु अब वह कर ही क्या सकती थी।

शादी के कुछ दिन बाद एक दिन उसके मायके से बुलावा आया। अगले ही दिन सास ने उसे मायके भेज दिया।

अपने माता-पिता के पास पहुंचकर उसने ससुराल के बारे में बताया और साथ ही फूट-फूट कर रोने लगी। उसके माता-पिता भी असलियत सुनकर तिलमिला कर रह गए। वे रिश्ता पक्का कराने वालों को कोसने लगे, किन्तु उससे भी अब क्या बनने–बिगड़ने वाला था। गुस्से में आकर उन्होंने अपनी बेटी को कुछ दिन अपने ही यहां रखने का निश्चय कर लिया।

दिन, सप्ताह और महीने बीतते गए। बहू न स्वयं आई और न उसकी ओर से कोई खबर ही मिली। किसान दम्पति को संदेह हो गया। सोचने लगे अवश्य किसी दुश्मन ने उनका बना-बनाया घर उजड़वा दिया है। दोनों ने इस बारे में मिल-बैठ कर सलाह-मशविरा किया। फिर अपने बेटे को ही बहू लिवाने के लिए भेजने का उन्होंने फैसला किया।

अगले दिन सवेरे किसान ने बेटे को एक रुपया दिया और समझाते हुए कहा . . "देख, काला (बेवकूफ) यह एक रुपया अपनी जेब में संभाल कर रख ले। इस इलाके में माता हो रही है। इसलिए यहां से कुछ ससुराल ले जाना ठीक नहीं है। बाजार से कुछ खरीद कर ससुराल ले जाना। फिर जितनी जल्दी हो सके ससुराल से बहू को लेकर लौट आना। वहां जाकर किसी से लड़ना–झगड़ना नहीं।"

लड़के ने एक रुपया अपने जेब में रखा और अपनी ससुराल की ओर चल पड़ा। चलते–चलते रास्ते में उसे एक दुकान दिखाई पड़ी। वह दुकानदार के पास गया और उसे एक रुपया देते हुए उससे "कुछ" मांगने लगा। पहले तो दुकानदार की समझ में उसकी बात आई ही नहीं। लेकिन उसके बार–बार पूछने पर भी जब वह "कुछ" ही मांगता रहा तो दुकानदार को समझते तनिक भी देर न लगी कि उसका पाला किसी बेवकूफ से पड़ गया है। फिर क्या था दुकानदार ने एक रुपये के पिंडालु (घुयां) उसके थैले में भर दिए। लड़का पिंडालु लेकर खुशी–खुशी अपनी ससुराल की ओर चल दिया। चलते–चलते वह थक कर चूर हो गया। सुबह से उसने कुछ खाया पिया भी नहीं था। भूख-प्यास से भी उसका बुरा हाल होने लगा। खाली पेट पानी पीना भी उसने अच्छा नहीं समझा।

सोच-विचार कर वह एक पेड़ की छाया में सुस्ताने लगा। फिर उसने थैले से एक पिंडालु निकाला और उसे खाने लगा। पिंडालु खाते ही उसके गले में भयंकर खरास लग गई, जी मितलाने लगा। सिर में चक्कर-सा आने लगा। पास ही पानी का सोता बह रहा था। उसने पानी पिया। अब तो उसकी हालत और भी बिगड़ गई। कुछ देर तक वह वहीं छटपटाता रहा।

उस स्थान से उसकी ससुराल थोड़ी ही दूर पर थी। इसलिए वापस घर लौटने का वह साहस न कर पाया। विवश होकर ससुराल की ओर चल दिया।

रात पड़ने तक वह किसी तरह ससुराल पहुंच गया। ससुराल पहुंचकर उसने अपने सास–श्वसुर से भूखा होने की बात कही। सुनकर सास ने अपनी बेटी से कहा––"बेटी, जल्दी से जंवाई के लिए कुछ बना। बेचारे ने सुबह से कुछ नहीं खाया है।"

लड़के ने कुछ का नाम सुना तो घबरा उठा। सोचने लगा कुछ खाने से तो उसकी यह हालत हो गयी है। और सास कहती है कि कुछ नहीं खाया है, कुछ बनाओ। यदि यहां भी रोटी की जगह कुछ ही खाया तो मर ही जाऊंगा। यह सोचकर उसने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि मैं "कुछ" हरगिज नहीं खाऊंगा।

सास ने समझा कि जंवाई की तबीयत शायद खराब है। अब क्या था। उसने बिस्तर बिछाया और जंवाई को भूखा प्यासा सुला दिया।

आधी रात को जब पिंडालू की क्यूकाली (गले में लगी खराश) उतरी और काला की तबीयत ठीक हुई तो उसे बड़ी जोर की भूख लगी। उससे चारपाई पर लेटा हुआ न रहा गया। घर एकदम सुनसान था। सब सुख की नींद सोये हुए थे। शर्म के मारे उसने किसी को जगाना भी ठीक नहीं समझा। कुछ देर तक तो वह भूख को दबाता रहा। लेकिन आखिर उससे रहा न गया। वह उठा और अंधेरे में कमरे में टटोलने लगा। संयोग से उसके हाथ शहद की हंडिया लग गई। शहद हाथ लगते ही उसकी बांछें खिल उठीं। उसने हंडिया में हाथ डाल–डाल कर शहद खाना शुरू कर दिया।

अंधेरे में शहद उसके कपड़ों पर गिर गया। कपड़े खराब हो गए। हाथ-मुंह भी शहद से भर गया। जब उसने छक कर शहद खा लिया तो हाथ-मुंह साफ करने की समस्या उसके सामने खड़ी हुई। कमरे में पानी नहीं था। अब वह कमरे में कोई फटा पुराना कपड़ा तलाश करने लगा ताकि उससे हाथ-मुंह पोंछ ले।

कमरे में एक टोकरे में रूई रखी हुई थी। अंधेरे में उसके हाथ रूई लग गई। कपड़ा समझ कर उसने उसी से .हाथ-मुंह पोंछना चाहा। जैसे ही उसने रूई के टोकरे में हाथ डाला, रूई उसके शरीर व कपड़ों से चिपक गई। उसकी सास कमरे से लगे बरामदे में सोई हुई थी। कमरे के अंदर बड़ी देर से हो रही खुसर-फुसर को वह सुन रही थी। उसे शक हुआ। उसने कमरे में झांक कर देखा। चारपाई खाली थी। अब तो उसका शक भय में बदल गया। उसने कमरे में नजर दौड़ाई। उसे सफेद-सफेद आकृति दिखाई दी। उसने समझा भूत है। फिर क्या था। वह जोर-जोर से भूत-भूत कहकर चीखने चिल्लाने लगी। उसका चीखना सुनकर घर और आस-पड़ौस के सब लोग जाग गए। भूत-भूत सुन कर सब वहां जमा हो गए। फिर कुछ साहसी आदमी उस भूत की लाठियों से मरम्मत करने लग गए। मार पड़ता देख काला वहां से सिर पर पैर रखकर भाग खड़ा हुआ। लोगों ने समझा कि भूत भाग गया है। इसलिए उसका पीछा नहीं किया।

ससुराल वालों ने समझा कि जंवाई के रूप में उनके यहां भूत आया था और काला बेचारा ससुराल से सिर फुड़वाकर बिना दुल्हन को लिए ही खाली हाथ वापस लौट आया।

चालाक लोमड़ी

किसी जंगल में एक लोमड़ी रहती थी। जब तक वह जवान थी, तब तक तो आराम से शिकार कर लिया करती थी। किन्तु जब बूढ़ी हुई तो पेट भरने की समस्या उसके सामने खड़ी हो उठी।

एक दिन की बात है। लोमड़ी चिंता में डूबी एक पेड़ के नीचे चुपचाप मुंह लटकाए बैठी थी। संयोग से उस ओर एक भालू आया। लोमड़ी को उदास बैठा देखकर उसने पूछा —"बहन, आज उदास क्यों बैठी हो?"

"भालू भाई, जब हाथ-पैरे बेकार हो जाते हैं तो उदास ही होना पड़ता है। सहारा न रहे तो कोई क्या करे?"—लोमड़ी ने बड़ी चतुरता से जवाब दिया।

उसकी बात सुनकर भालू को दया आ गई। उसने उसकी सहायता करने का मन ही मन निश्चय कर डाला। फिर तो दोनों में बातों-बातों में गहरी दोस्ती हो गई और दोनों साथ-साथ रहने लगे।

साथ तो रहने लगे, किन्तु खाएं क्या। दोनों ने विचार-विमर्श कर एक तरकीब सोच निकाली।

अगले दिन दोनों पड़ोस के गांव से एक दुधारू भैंस चुरा लाए। अब एक दिन भालू भैंस चराने जाता और एक दिन लोमड़ी को खूब भरपेट दूध पीने को मिलता, लेकिन जिस दिन लोमड़ी भैंस चराकर लाती, उस दिन भालू को नाम मात्र दूध मिला करता। इसका परिणाम यह हुआ कि लोमड़ी तो दिन-पर-दिन मोटाने लगी और भालू लगा दुबलाने।

लोमड़ी जब भैंस को चराने जाया करती थी तो दूध निकाल कर पी जाया करती और फिर दिन भर छाया में सोई रहती। भालू बेचारा पेड़ों से पत्ते तोड़-तोड़ कर भैंस को खिलाया करता था।



यह सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा। लोमड़ी दूध पीते-पीते ऊब गई। उसके शरीर में जवानों जैसी शक्ति पुनः लौट आई। अब उसे दूध से नफरत सी हुई। उसकी इच्छा भैंस का मांस खाने की होने लगी।

एक दिन लोमड़ी भैंस को चराते-चराते एक ऊंचे टीले पर ले गई। रास्ता बहुत संकरा था। जाते वक्त तो भैंस किसी तरह ऊपर चढ़ गई, किन्तु आते वक्त उसके पैर फिसल गए और वह लुढ़क गई। भैंस लुढ़क कर एक भारी-भरकम पेड़ पर अटक गई। अब लोमड़ी दौड़ी-दौड़ी भालू के पास आई और रोती हुई बोली –"भालू भाई, हमारा भाग्य फूट गया है। भैंस फिसलकर गिर गई और पेड़ पर अटकी हुई है। चलो, जल्दी करो।"

भालू लोमड़ी के साथ हो लिया। कुछ ही देर में भालू को लेकर लोमड़ी उस टीले पर जा पहुंची। भैंस को पेड़ से अटकी हुई देखकर भालू की आंखों में भी आंसू आए बिना न रहे। अब क्या होता। दोनों भैंस की पूंछ पकड़कर ऊपर को खींचने लगे। लेकिन भैंस टस-से-मस न हुई। भला उन दोनों से भी कभी भैंस ऊपर खींची जा सकती थी। भालू बेचारा तो भोला था, किन्तु लोमड़ी यह सब जानती थी। लेकिन वह तो अपनी योजना को सफल बना रही थी। भालू बेचारा उसके कहने के अनुसार करता जा रहा था। उसे क्या मालूम था कि धूर्त लोमड़ी उसी से छल कर रही है। काफी देर तक कोशिश करने पर भी भैंस जब जहां की तहां रही, तो लोमड़ी बोली—"भालू भाई, इस तरह से तो भैंस ऊपर खिचने से रही। एक तरकीब और है। उसे भी आजमा लिया जाए। मैं ऊपर से खींचती हूं और तुम नीचे से भैंस को ऊपर धकेलो। ऐसा करने से भैंस निश्चित ही ऊपर आ जाएगी।"

भालू को लोमड़ी का सुझाव बहुत तर्क संगत लगा। वह तुरंत नीचे की ओर गया और भैंस को ऊपर की ओर धकेलने लगा। उचित अवसर पाकर लोमड़ी ने भैंस को ऊपर खींचने की बजाए पूरी ताकत के साथ नीचे धकेलना शुरू कर दिया। अब भैंस ऊपर आने के बजाए नीचे सरकने लगी। भालू भैंस के नीचे दब गया। अपने प्राण संकट में देख कर वह सहायता के लिए आर्तनाद करने लगा। उधर लोमड़ी भालू की चीख-पुकार पर बिना कान दिए भैंस को नीचे धकेलती चली

जा रही थी। कुछ देर बाद भैंस भालू सहित नीचे खड्ड में जा गिरी। नीचे गिरते ही दोनों का प्राणान्त हो गया।

लोमड़ी दौड़ती हुई नीचे खड्ड में गई और भैंस को नोचने लगी। लेकिन भैंस की मोटी खाल भला उससे कब कट सकती थी। लाख कोशिश करने पर भी वह भैंस की मोटी खाल जरा भी नहीं हटा पाई। किन्तु वह हिम्मत हारने वाली नहीं थी। अगले ही पल उसने एक तरकीब सोच निकाली।

पास में चमारों का गांव था। लोमड़ी तेज़ी के साथ फिर टीले पर जा चढ़ी। फिर पूरी ताकत के साथ चिल्लाती हुई आवाज़ देने लगी।—"गांव वालो, यहां भैंस मरी पड़ी है। जल्दी-जल्दी आओ, नहीं तो गिद्ध उसे खा रहे हैं।"

गांव के चमार सुन–सुन कर उधर भागे-भागे आने लगे। अपने साथ वे हथियार भी लेते आए। सचमुच भैंस मरी पड़ी देख कर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। अब क्या था। वे मिल-जुलकर भैंस की खाल उतारने लगे। देखते-ही-देखते उन्होंने भैंस की खाल उतारकर उसकी बोटी-बोटी अलग-अलग कर दी।

लोमड़ी पास ही पेड़ के पीछे छिपकर यह सब देख रही थी। वह इस प्रतीक्षा में थी कि कब चमार भैंस की खाल उतार दें। जैसे ही चमारों ने भैंस की खाल उतारी, वह दौड़ती हुई उनके गांव में जा पहुंची। फिर उसने उनकी झोपड़ियों में एक एक कर आग लगा दी। आग लगाकर वह सिर पर पैर रख कर वहां से वापस लौट आई।

कुछ ही देर में चमारों की झोंपड़ियां धू-धू कर जलने लगीं। गांव में स्त्री बच्चों का हो-हल्ला सुनकर चमार कटी हुई भैंस को छोड़-छाड़ कर वहां से गांव की ओर दौड़े।

उधर लोमड़ी कब की वापस आ गई थी। कटी–कटाई भैंस को वह चाव के साथ खाने लग गई।

चमारों को जब धूर्त लोमड़ी की चालाकी और अपनी मूर्खता का आभास हुआ तो वे बहुत पछताए। क्रोधित होकर लोमड़ी को मारने के लिए वे लाठियां लेकर उस ओर चल पड़े। लेकिन लोमड़ी उनको कहां मिलने वाली थी। वह तो भरपेट मांस छक कर कभी वहां से नौ-दो ग्यारह हो गई थी।

राजा पारसमणि

एक छोटा-सा राज्य था । उस राज्य में एक गांव था। गांव में एक गरीब किसान रहता था। किसान के पास खेती योग्य भूमि बहुत ही थोड़ी थी। वह बड़ी कठिनाई से अपने परिवार का भरण-पोषण कर पाता था।

किसान के गांव से राज्य की राजधानी अधिक दूर नहीं थी । एक समय की बात है कि किसान की पत्नी ने गांव में किसी से सुना कि राजा पारसमणि होता है। अर्थात धातु की जो भी चीज़ राजा के शरीर से स्पर्श कर जाती है, वह सोने में बदल जाती है । फिर क्या था । शाम को खाना परोसते हुए उसने अपने पति से कहा––"मैंने गांव के लोगों से सुना है कि राजा पारसमणि होता है। वे कह रहे थे कि पारसमणि से यदि कोई भी धातु स्पर्श कर जाती है, तो वह सोना बन जाती है।" फिर कुछ देर तक रुक कर वह आगे बोली––"यदि तुम भी किसी तरह कोई धातु का टुकड़ा राजा से स्पर्श करा सकते, तो कितना अच्छा होता हमारी गरीबी धुल जाती और जीवन के शेष दिन हम आराम से गुजारते।"

पत्नी की बात सुनकर किसान मन-ही-मन खुशी से नाच उठा । खाना समाप्त करते हुए वह बोला––"यह बात तो मैंने बहुत पहले से सुनी हुई है, किन्तु राजा तक पहुंचने का साहस मैं कभी नहीं जुटा सका । साहस तो एक तरफ रहा, मैंने कभी ऐसा सोचा भी नहीं है । लेकिन तुम्हारी बात सुनकर मुझे भी लग रहा है कि इस बात में वजन है, सत्यता है । कौन जानता है कि इसी बहाने हमारा भाग्य सितारा चमक उठे। मगर एक बात है। राजा के शरीर से स्पर्श कराने के लिए हमारे पास कोई ऐसी-धातु का टुकड़ा है ही कहां । जब मैं यह बात सोचता हूं और घर में देखता हूं कि टूटे–फूटे एकमात्र तवे के अलावा कोई धातु का बर्तन है ही नहीं, तो मेरी सारी सुखद कल्पना सहसा दम तोड़ देती है । अब तुम ही बताओ कैसे क्या करें ?"

पति का विचार सुनकर पत्नी की बांछें खिल उठीं । उसे लगा कि उसने



जो कुछ सुना है वह अक्षरश: सत्य है। अब उसने बड़े धैर्य के साथ जबाव दिया— "क्यों न तुम इस तवे को लेकर राजदरबार में चले जाते हो । जैसे ही एक बार तवा राजा से स्पर्श कर जाएगा, फौरन सोने में बदल जाएगा। फिर टूटे फूटे से क्या होता है। सोने का टूटा-फूटा तवा भी तो कीमती ही होगा । सोना तो सोना ही है। एक बार यदि तुम साहस जुटा कर यह काम कर डालो, तो रोज-रोज का रोना खत्म ही हो जाएगा।"

किसान को लगा कि पत्नी जो कुछ सलाह दे रही है, उसमें भलाई छिपी हुई है। उसने भी तुरन्त तवे को लेकर राज दरबार में हाजिर होने का निश्चय कर डाला। अगले ही पल उसने अपने निश्चय से पत्नी को भी अवगत करा दिया। अब तो पत्नी की प्रसन्नता का पारावार न रहा । रोटियां तो वह बना ही चुकी थी। तुरन्त उसने उस टूटे-फूटे तवे को राख से मांजा और फिर इस सावधानी से रख दिया जैसे कि वह लोहे का न होकर सोने का ही हो।

अगले दिन किसान मुंह अंधेरे ही उठा। नित्य कर्म से निवृत्त होकर उसने पूजा-पाठ किया। फिर गौशाला में जाकर उसने गाय का मुख देख और तवे को बगल में दबा कर वह उत्साह के साथ राजधानी की ओर चल पड़ा।

लगातार चलता हुआ दोपहर ढलते-ढलते किसान राजधानी में जा पहुंचा। उस दिन राजधानी में चहल-पहल थी । पूछने पर उसे पता चला कि उस दिन राजकुमार के जन्म दिन के उपलक्ष्य में शहर में उत्सव मनाया जा रहा था। चारों तरफ चहल-पहल थी । राजधानी का कोना—कोना नृत्य और गान से जगमगा रहा था। लोगों की इतनी बड़ी भीड़ भी किसान ने इससे पहले कभी नहीं देखी थी। देखी क्या उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी। एक साथ एक ही जगह इतने लोगों को देखकर वह हक्का-बक्का रह गया । सोचने लगा व्यर्थ ही पत्नी के कहने पर विश्वास कर अपना घर छोड़कर यहां चला आया। यह सोचकर वह वापस लौटने का मन बनाने लगा। तभी उसे अपनी पत्नी का स्मरण हो आया । अब तो उसने वापस लौटने का बिचार बिल्कुल छोड़ दिया। इतना ही नहीं उसने राजा से मिलने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

राजधानी में इधर–उधर घूमते–घामते शाम हो गयी। अब रात बिताने की समस्या उसके सामने उठ खड़ी हुई। राजधानी में न उसका कोई सम्बन्धी था और न ही चिर-परिचित ही था। यदि पैसा उसके पास होता, तो वह कहीं भी आराम से ठहर जाता। अब तो वह और भी धर्म संकट में पड़ गया। राजदरबार तक उस दिन पहुंच पाना टेढ़ी खीर थी। फिर राजा से तवा स्पर्श करने की तो वह कल्पना भी नहीं कर पा रहा था। उसे भरोसा था कि अगले दिन जब उत्सव समाप्त हो जाएगा और भीड़ भड़ाका खत्म हो जाएगा तो किसी तरह वह राजदरबार तक पहुंच कर राजा से भेंट कर ही दम लेगा। बस इसी आशा के बल पर वह राजधानी से वापस लौटने का विचार मन में नहीं आने दे रहा था।

उस दिन राजधानी में स्थान-स्थान पर राज्य की ओर से मुफ्त खाने और ठहरने का इन्तजाम किया हुआ था। संयोग से किसान की भेंट एक घास बेचने वाले से हो गयी। वह घास बेचने वाला उसका जान-पहचान का था। किसान उसी के साथ हो लिया। वो घास बेचने वाला उस दिन घास लेकर तो आया था, किन्तु वो रात घर वापिस नहीं लौट रहा था। पूछने पर उसने किसान को बताया—"आज राजा की तरफ से सारी राजधानी में खुशियां मनाई जा रही हैं। अमीर-गरीब सबके लिए मुफ्त खाने और ठहरने का इन्तजाम है। यह देख कर मैंने सोचा कि रोज-रोज ऐसे मौके मिलते नहीं हैं फिर क्यों न आज यहीं ठहरकर मौज ली जाए।"

यह सुनकर किसान की खुशी का पारावार न रहा। उसे लगा कि उसका भाग्य उसका साथ दे रहा है। जो विकट समस्या उसका दिन–भर-से-पीछा कर रही थी, वह सहसा अन्तर्ध्यान हो गयी। अब वे दोनों एक शिविर में चले गये। शिविर में दोनों ने भरपेट भोजन किया और फिर वहीं सरकारी बिस्तरों में लेट गये।

अगले दिन घास बेचने वाला बड़े तड़के ही किसान से विदा लेकर अपने गांव की ओर चल पड़ा। जाते समय उसने किसान से भी वापस लौटने को कहा। लेकिन किसान ने अपने राजधानी आने का प्रयोजन बताये बिना ही उसे चलता कर दिया।

— —

सूर्य निकला। मुंह हाथ धोकर किसान ने अपना तवा बगल में दबाया और राजमहल की ओर चल पड़ा। रास्ता चलते लोगों से पूछता-पूछता वह किसी तरह राजमहल के द्वार पर पहुंच गया। द्वार पर सख्त पहरा लगा हुआ था। चमकीले-भड़कीले वस्त्र पहने और अस्त्र-शस्त्रों से लैस द्वारपालों को देखकर एक बार तो किसान सकपका गया और अपने आने का प्रयोजन ही भूल-सा गया। किन्तु अगले ही पल उसका धैर्य मानो लौट आया। वह अपना समूचा साहस बटोर कर द्वारपालों के समीप गया और बोला-"मैं महाराज से भेंट करना चाहता हूं।" द्वारपालों ने मिलने का कारण जानना चाहा तो किसान ने उन्हें अपना टूटा-फूटा तवा दिखाते हुए सारी रामकहानी सच-सच बता दी। उसकी रामकहानी सुनकर वे सब ठहाका मारकर हंस पड़े। फिर उनमें से एक द्वारपाल बोला—"अरे तुझ जैसा मूर्ख ढूंढने पर भी न मिलेगा। यदि ऐसा होता तो हम लोग कभी के लखपती हो गये होते। ये बातें तो सुनने-सुनाने की हैं। यदि राजा के छूने से लोहा सोना बन जाता तो यह लोहे का विशाल द्वार कभी का सोने का हो गया होता। लगता है तुझे किसी ने मूर्ख बनाया है। या फिर तेरे साथ तेरा भाग्य मजाक कर रहा है।

अब तो किसान के हाथ के मानो तोते उड़ गये। उसकी सारी आकांक्षाओं पर पानी फिर गया। उसका चेहरा फक्क पड़ गया। बगल में दबाया तवा खट्ट से नीचे ज़मीन पर आ गिरा।

उन द्वारपालों में एक बूढ़ा द्वारपाल भी था। वह किसान की मनस्थिति को भांप गया। किसान के भोलेपन को देख कर उसका हृदय पिघल गया। उसने किसान की बात राजा को बताने का निश्चय कर डाला। फिर वह किसान से बोला—"आओ भाई यहां बैठ जाओ। मैं अभी राजा साहब को तुम्हारे बारे में खबर देता हूं। फिर यदि वह चाहेंगे तो हम तुम्हें उनसे मिलने देंगे।" इतना कहकर वह महल की ओर चला गया। किसान अपने तवे को बगल में दबाये वहीं बैठकर उस द्वारपाल के वापस लौटने की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लग गया।

सुबह का दरबार लग गया था । राजा दरबार में बैठा था । द्वारपाल राजा के पास गया और अभिवादन कर बोला—"महाराज, द्वार पर एक निर्धन किसान आया है और आपके दर्शन करना चाहता है।" फिर उसने किसान की इच्छा और राजा के पारसमणि होने की बात, जो कि किसान ने बतायी थी, राजा को संक्षेप में कह सुनायी। सुनकर राजा भी ठठाकर हंस पड़ा। राजा हंसा तो मंत्री और सब सभासद भी अपनी हंसी न रोक सके । सबको हंसता देख द्वारपाल के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गयी । उसे लगा कि उसने उस गरीब किसान की फरियाद राजा तक पहुंचा कर कोई अपराध कर डाला है। उसका चेहरा मुरझा गया। वह नीची गरदन कर चुपचाप खड़ा हो गया ।

राजा बहुत बुद्धिमान और उदार था। वह द्वारपाल के बताने पर समझ गया कि आज पहली बार उससे कोई सच्चा और नेक इन्सान भेंट करने आया है। वह जानता था कि सच्चा इन्सान भगवान का प्रतिरूप होता है। उसे लगा कि आज भगवान ही उससे साक्षात भेंट करने आये हैं। राजा ने द्वारपाल को आदेश दिया कि उस किसान को तुरन्त दरबार में हाजिर किया जाए।

अब कहीं द्वारपाल की जान में जान आई । वह तत्काल उल्टे पांव वापस लौट आया। द्वार पर पहुंच कर उसने किसान से कहा कि राजा उससे मिलना चाहता है। किसान को पहले तो अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ, किन्तु जब उसे द्वारपाल ने दो-तीन बार यही बात दोहराई, तो तब जाकर कहीं उसे विश्वास हुआ। अब तो किसान को लगा कि उसका टूटा-फूटा लोहे का तवा सचमुच सोने का हो गया है। तवे को बगल में दबाये वह द्वारपाल के पीछे-पीछे चल दिया। कुछ देर बाद द्वारपाल किसान को लेकर राजा के सामने उपस्थित हो गया।

राजा शान्त और प्रसन्न मुद्रा में था। सभासद और दूसरे उपस्थित लोग भी सांस रोके हुए इस अजीबोगरीब दृश्य को देख रहे थे । किसान को देखकर राजा भांप गया कि सचमुच वह एक भोला-भाला इन्सान है । राजा ने अपने अंगरक्षकों को संकेत किया कि मुलाकाती को उसकी बगल में आसन दें । अंग-रक्षकों ने तत्काल राजा के आदेश का पालन करते हुए उस फटेहाल किसान को राजा की बगल में सादर बैठा दिया गया।

एक फटेहाल आदमी को राजा का अपनी बगल में बैठाना देख कर सब दरबारी आश्चर्य से आंखें फाड़ कर देखने लगे। चाटुकार और खुशामदी सभासद मन–ही–मन जल भुन कर राख हो गये। राजा की बगल में बैठकर किसान ने इधर–उधर नजर दौड़ाई फिर धीरे से उसने तवा निकालकर राजा से छुवाना चाहा। राजा उसके मन की बात ताड़ गया था। उसने तुरन्त उसके सिर पर हाथ रख दिया। किसान चिंचित लगा गया। वह तवा छुआ ना पाया। उधर राजा ने उसके विश्वास को बनाये रखने के लिए तवा अपने से स्पर्श न होने दिया। क्योंकि राजा जानता था कि तवा उससे छूने से सोना होने वाला नहीं है। और किसान जिस विश्वास को संजोए हुए था, उसका साहस टूटना उस गरीब के हित में नहीं था। जब किसान चुपचाप बैठ गया। लेकिन उसके मन में केवल यही विचार रह रह कर चढ़–उतर रहा था कि कैसे तवे को राजा के शरीर से स्पर्श कर दें।

सभासदों को अब समझते तनिक भी देर नहीं लगी कि चिथड़ों में लिपटा हुआ यह आदमी कोई साधारण नहीं बल्कि प्रकांड पंडित है। तभी तो राजा उसे अपनी बगल में आसन दिये हुए हैं। यह सोच–सोच कर उनकी ईर्ष्या का धीरे–धीरे लोप होने लग गया। दरबार चलता रहा और किसान चुपचाप बैठा रहा।

ठीक समय पर दरबार उठ गया। राजा के आदेश से किसान को मंत्री ने शाही अतिथि भवन में ठहरा दिया। शाही अतिथि भवन की चकाचौंध देख कर किसान की भूख–प्यास हवा हो गयी। रह रहकर उसे अपनी टूटी–फूटी झोंपड़ी की याद आने लगी।

किसान का अतिथि भवन में कदम रखना था कि वहां राज्य के नामी गरामी सेठ-साहुकार और व्यापारियों का तांता लग गया। वे अपने साथ बहुमूल्य भेंट ला रहे थे और उस गरीब किसान को उपहार में दे रहे थे। उनके ऐसा करने का कारण यह था कि वे राजा से कोई न कोई काम निकलवाना चाहते थे और किसान को साधन के रूप में इस्तेमाल करना चाहते थे। फिर तो देखते–देखते वहां चांदी–सोने, हीरे–जवाहरात और अशरफियों के ढेर लग गये। जब मंत्री

ने किसान को बताया कि ये सब उपहार उसी के लिए हैं, तो उसके हर्ष और विस्मय की सीमा न रही। उसे लगा कि वह स्वप्न देख रहा है। अब उपहारों का रहस्य धीरे–धीरे उसकी मोटी बुद्धि में घुसने लगा। उसे लगा कि लोहे का तवा ही धीरे–धीरे सोने का हो रहा है। यह सब राजा पारसमणि का ही चमत्कार है जिस विश्वास के सहारे वह घर से चल कर राजदरबार तक आ पहुंचा था मानो इन उपहारों ने उसकी रक्षा कर ली थी।

राजा को उपहारों की खबर मिल गयी थी। राजा तो ऐसा समझता ही था। अगले दिन प्रातः वह अतिथि भवन की ओर आया। राजा को देखते ही किसान उसके पैरों में पड़ गया। किसान को स्नेह से उठाते हुए राजा ने बड़े सहज भाव से पूछा––"अरे भाई, तुम्हारा वह लोहे का तवा कहां है?"

किसान मानो उत्तर के लिए पहले से ही तैयार था। उसने तपाक से जवाब दिया, "सरकार, वह लोहे का टूटा–फूटा तवा तो पारसमणि का स्पर्श पाकर कभी का सोने का बन चुका है।"

किसान का तर्क सम्मत उत्तर सुनकर राजा गद्गद् हो गया। वह मुस्कराते हुए बड़ी आत्मीयता से बोला––"अब जान गये हो न कि राजा कैसे पारसमणि होता है। पारसमणि से छूकर तो धातु केवल सोना ही बनता है, किन्तु राजा का स्पर्श और सम्पर्क पाकर तो क्या कुछ बन जाता है। अब तुम यह सारा धन–माल लेकर खुशी से वापस जा सकते हो।"

उसी दिन किसान सारा–धन–माल घोड़े–खच्चरों पर लादकर अपने घर को वापस चल दिया।

किसान को अपने सीधे और सच्चे स्वभाव तथा ईमानदारी का भरपूर पुरस्कार प्राप्त हो गया। सचमुच सच्चे और ईमानदार व्यक्ति के सब स्वमेव सहायक बन जाते हैं।



घोड़ी के अण्डे

किसी गांव में एक साहूकार रहता था। साहूकार मक्खीचूस तो था ही, किन्तु निपट मूर्ख भी था। आसपास के गांवों में साहूकार के बहुत से कर्जदार थे।

वह अपने कर्जदारों को तरह-तरह से तंग किया करता था। कभी किसी कर्जदार की व्याही भैंस खोल कर ले आता तो कभी किसी की गाभिन गाय लेकर चलता बनता। कभी किसी के बैल बेच कर रकम डकार जाता तो कभी किसी के खलिहान से बिना पूछे अनाज के बोरे बैलगाड़ी में लाद कर चलता बनता। इतना ही नहीं कर्जदार के फलों के वृक्षों को वह अपने वृक्ष समझता था और उसकी खड़ी पकी फसल पर वह अपना पूर्ण अधिकार जताया करता था।

गांव-गांव के कर्जदार उस दुष्ट साहूकार के अमानवीय व्यवहार से अत्यन्त दु:खी थे। वे उससे छुटकारा पाना चाहते थे, किन्तु मजबूर थे। साहूकार का व्यवहार और रवैया उन्हें उसके पास जाने से रोकता था, तो गरीबी बार-बार साहूकार का दरवाजा खटखटाने के लिए विवश करती थी। बस, इसी कारण सब कर्जदार उस साहूकार के अत्याचारों को चुपचाप सहते चले जा रहे थे। उनके कष्टों और साहूकारों के अत्याचारों का अन्त न था।

एक दिन की बात है। साहूकार अपने किसी कर्जदार के यहां तकाजा करने के लिए गया। कर्जदार उस समय किसी काम से बाहर गया हुआ था। उसकी पत्नी घर में अकेली थी। वह अत्यन्त चतुर थी। साहूकार के कारनामों से वह भी तंग आ चुकी थी। वह बहुत दिनों से साहूकार को सबक सिखाने की सोच रही थी। उचित अवसर देख कर उसने साहूकार को बेवकूफ बनाने का निश्चय कर डाला। अब क्या था। जैसे ही साहूकार ने उन के

आंगन में पैर रखा, उसने चाय तमाखू पेश कर उसका आदर सत्कार किया और फिर आने का कारण पूछा ।

आव-भगत से साहूकार कुछ पिघल गया । किंतु दुष्ट जो था । अपने इरादे से टस-से-मस न हुआ । साहूकार ने उसे उसके पति के बारे में पूछा, तो वह बड़ी मायूसी से बोली—'वे तो कल सुबह से घर में नहीं हैं । मेरी एक सौतेली मां थी । उसकी मौत की खबर सुन कर अपनी ससुराल गये थे, लेकिन अभी तक नहीं लौटे हैं । कल तक तो वे लौट ही आएंगे । भगवान जाने क्या कुछ है ।"

यह सुन कर साहूकार का पारा चढ़ गया । वह क्रोधित हो कर बोला—"तुम्हारी सौतेली मां मरे या असली मां । मुझे इस से क्या लेना-देना है । मुझे तो अपनी रकम चाहिए । मेरी रकम नहीं मरनी चाहिए । बस मैं इतना जानता हूं ।" फिर उसने जल्दी जल्दी हुक्के के चार पांच बड़े-बड़े कश खींचे । हुक्के से नली अलग की और गला खखारता हुआ आगे बोला—"जो कुछ भी इस वक्त तुम्हारे घर में हो, मेरे हवाले कर दो । मेरे आने का मान तो रखो । मैं जानता हूं कि तुम औरत जात हो पर मैं भी मजबूर हूं । शराफत की भी हद हुआ करती है । मैं घर से फालतू तो हूं नहीं कि जब चाहूं तुम्हारी चाकरी में हाजिर हो जाऊं । तुम्हारा आदमी घर पर नहीं है तो इस से क्या हुआ । ढोर डंगर लेकर तो वह गया नहीं है । अनाज पानी सब तुम्हारे ही पास तो है या वह भी साथ लेकर गया है ? बातें तो खूब बनाती हो ।" कर्जदार की पत्नी बड़ी समझदार थी । उसने न धैर्य खोया और न सन्तुलन । वह तनिक भी घबरायी नहीं। वह अपने निश्चय पर दृढ़ थी । निवेदन के स्वर में बोली—"शायद आप को मालूम होगा कि हमारी एक सफेद घोड़ी गाभिन थी । घोड़ी पार साल मेरे मायके से आयी थी । उसने कल ही शाम चार खूबसूरत अण्डे दिये हैं । यदि आप कुछ दिन और रुक जाएं तो हम आप का एक-एक पैसा चुकता कर देंगे । वैसे जहां आप इतना ठहर गये हैं, वहां कुछ दिन और ठहर जायें तो आप की बड़ी मेहरबानी होगी । जैसे ही अण्डों से बच्चे निकलेंगे हम बच्चे बेच कर आप का कर्ज चुका देंगे ।

अण्डे बेचने से हमें भारी नुकसान उठाना पड़ेगा ।'

साहूकार उसकी बात सुन कर आश्चर्य चकित हुए बिना न रहा। लोभ ने उसके रहे-सहे विवेक को दबा दिया। बोला—"मैं घोड़ी के अण्डे देखना चाहता हूं। दिखाओ। कहां हैं ?"

कर्जदार की पत्नी तो पहले से तैयार ही थी। फिर क्या था। वह तुरन्त अन्दर गयी। फिर कुछ देर बाद एक सूप में रख कर एक सफेद कद्दू लेकर साहूकार के समाने ले आयी। साहूकार ने सफेद कद्दू तो अपनी जिंदगी में कभी देखे थे नहीं । इस लिए उसे उसकी बात पर एक दम विश्वास हो गया ।

कद्दुओं को देख कर वह एक क्षण चुप रहा। फिर कुछ सोच कर चतुरता से उसने कहा, "कब अण्डों से बच्चे निकलेंगे ! कब तुम बच्चों को बेचोगे । और फिर कब मेरा कर्ज चुकाओगे । तब तक तो सूद से तुम्हारा सिर गन्जा हो जाएगा । अच्छा तो यह होगा कि तुम इन अण्डों को ही दे दो और मैं अपना सारा रुपया वसूल पाया समझ लूंगा ।"

कर्जदार की पत्नी कच्ची गोलियां नहीं खेली थी। वह साहूकार को पक्का मूर्ख बना कर छोड़ना चाहती थी । उसने झट से अपना दुखड़ा रोया, " आप का कहना सोलह आने ठीक है। लेकिन चारों बच्चे तो चार सौ में बिकेंगे । फिर तुम्हारा हम पर तो सिर्फ सौ ही रुपया है । सौ के बदले चार सौ के अण्डे ले कर आप हम पर अन्याय कर रहे हैं । हम आप के कर्जदार हैं, किन्तु भगवान के लिए इतना अत्याचार तो न करो। कभी तो कर्जदार की भी बात रख लिया करो।"

यह सुनते ही साहूकार के तन-बदन में आग लग गयी । क्रोध से आग बबूला हो कर बोला, "छोटे मुंह बड़ी बात । तुम्हें अपनी चीज बड़ी लग रही है। और मेरे रुपये छोटे ? मैं सब जानता हूं । मुझे मत पढ़ाओ । रोजमर्रा तुम जैसे कर्जदारों से ही पाला पड़ता है । तुमने ये चारों अण्डे दिये तो दिये, वरना मैं एक सौ के चार सौ वसूल कर लूंगा।

वसूल करना मैं खूब जानता हूं। तुम्हारा आदमी घर में नहीं है, इसीलिए तुम इस तरह जबान चला रही हो। वह घर में होता तो देखता कैसे तुम्हारी साहूकार को जवाब देने की हिम्मत होती। हे भगवान कैसी अजीब औरत से पाला पड़ा है। यह तो साहूकार की जोरू को भी मात कर रही है। साहूकारनी जैसी बात बना रही है।"

कर्जदार की पत्नी ने आंखो में आंसू लाते हुए कहा—"आप मालिक हैं। हम आप का हुक्म बजाते आये हैं। और हमेशा बजाएंगे। हमारे पास जो कुछ भी है, सब आप की बदौलत है। हम नें आप का नमक खाया है। आपसे बाहर नहीं जा सकती हूं।" अण्डे अभी कच्चे हैं इस लिए मैंने इन्हें आप को देना उचित नहीं समझा। आप अण्डे खुशी से ले जाएं, लेकिन सावधानी पूर्वक घर ले जायें। बस यही मेरी आप से प्रार्थना है। फिर धोती के आंचल से आंसू पोंछते हुए उसने आगे कहा, हमारी नीयत आप का पैसा दबाने की नहीं। मैं तो कच्चे अण्डों की बजह से यह कह रही हूं। वर्ना घोड़ी आप की, अण्डे आप के। जब चाहो, तब ले जाओ। हम कौन होते हैं मना करने वाले।"

उसकी असीम विनम्रता के आगे साहूकार का क्रोध हवा हो गया। उसके मस्तिष्क में एक साथ तरह-तरह की कल्पनाएं चढ़ने-उतरने लगीं। खुशी से उसकी बांछें खिल गयीं। बात बनती देख उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उधर साहूकार को पटरी पर देख कर कर्जदार की पत्नी बनावटी रोना रोते हुए बोली, "अण्डों को ले तो जा रहे हो, लेकिन एक बात का ख्याल रखना, जब भी बच्चे निकलें, तुरन्त हमें खबर भिजवा देना, ताकि हम दोनों अपनी घोड़ी के बच्चों के एक बार दर्शन कर लें। इससे अधिक हम कुछ नहीं चाहते हैं।"

यह कह कर उसने अपनी धोती के आंचल से अपना मुंह ढक लिया और सुबक-सुबक कर अण्डों के वियोग में रोने का अभिनय करने लगी।

साहूकार ने बहुमूल्य अण्डे हाथ आये देख वहां एक पल भी रुकना उचित नहीं समझा। उसे भय था कहीं कर्जदार आ टपका तो बना बनाया

सौदा बिगड़ न जाये। अण्डों के सूप को सावधानी से सिर पर रख कर वह तेजी से अपने घर की ओर चल पड़ा। वह मन ही मन प्रसन्नता से फूला न समा रहा था। खुशी से उसके पाव जमीन पर सीधे न पड़ते थे।

साहूकार का गांव एक ऊंची चोटी पर था। रास्ता चढ़ाई का और बेहद ऊबड़-खाबड़ था। तरह-तरह की कल्पनाएं संजोये और हवाई किले बनाता हुआ वह तेजी के साथ किसी पर्वतारोही की तरह चढ़ाई को रौंदता चला जा रहा था। अभी उसने आधी ही चढ़ाई तय की थी कि सहसा उसका पांव फिसला और सूप के चारों कद्दू एक साथ नीचे की ओर लुढ़कने लगे। चारों कद्दू विभिन्न दिशाओं में तेजी के साथ लुढ़क रहे थे। साहूकार चुपचाप उनका लुढ़कना देख रहा था। देखने के सिवाय वह कर भी क्या सकता था। उसका मन कर रहा था कि उन के साथ वह भी स्वयं लुढ़क जाये।

देखते ही देखते चारों कद्दू नीचे घनघोर झाड़ियों में अदृश्य हो गये। संयोग की बात। झाड़ियों में हाल की ब्याही एक हिरनी के शावक विश्राम कर रहे थे? हिरनी चरने के लिए अन्यत्र गयी हुई थी। कद्दू जब लुढ़कते हुए झाड़ियों में जा पहुंचे तो शावक भयभीत हो कर अपनी जान बचा कर सिर पर पैर रख इधर उधर बेतहाशा भागने लगे। साहूकार ऊपर खड़ा सिर पकड़े बारीकी से देख रहा था। दूर से उन शावकों को देख कर मूर्ख साहूकार को समझते तनिक भी देर न लगी कि चोट खाकर घोड़ी के अण्डे टूट गये हैं। और उन में से बच्चे निकल गए हैं। यह देख कर वह माथा पीट कर रह गया। उसके पश्चाताप की हद न थी।

कुछ देर बाद शावक उसकी आंखों से ओझल हो गये। साहूकार यह सब देख हाथ मलता रह गया। कुछ सोच कर वह उदास मुंह लटकाये घर की ओर चल पड़ा।

घर पहुंचते ही उसने अपनी पत्नी और लड़की को बुलाया और कहा, "मैं अपने कर्जदार से घोड़ी के चार अण्डे लाया था, किन्तु दुर्भाग्य से मेरा पैर फिसला और चारों अण्डे लुढ़क कर टूट गए। अण्डों से बच्चे

निकल कर भाग गए । भगवान का शुक्र है कि मेरी जान बच गयी। लेकिन हमारे दुर्भाग्य का क्या कहना है । लगता है बच्चे जंगल में कहीं भटक गये हैं । चलो हम सब मिल कर उन्हें ढूंढ कर ले आएं ।"

"घोड़ी के अण्डे'।" सब के सब आश्चर्य से चिल्ला उठे। और फिर सबने ठहाके मार-मार के कमरा गुंजा दिया '।

लड़का बोला, "पिता जी पागल हो गये हैं।" और फिर सब ठठाकार हंसने लगे।

सब की व्यंग्य हंसी सुन कर साहूकार को समझते देर न लगी कि कर्जदार की चतुर पत्नी ने उसे मूर्ख बनाया है । अब तो वह भी अपनी मूर्खता पर हंसे बिना न रहा ।

हर जुल्म और अमानवीय अत्याचार का अन्त यही हुआ करता है। अत्याचारी को देर सबेर अपने कुकृत्यों का उचित पुरस्कार स्वीकार करना ही पड़ता है ।

———

चोली की कथा

किसी गांव में एक किसान रहता था । उसकी दो बेटियां थीं । बड़ी बेटी मेहनती थी और छोटी सदा काम से जी चुराया करती थी।

एक बार की बात है। किसान के खलियान में गेहूं की दायें (बालियों से गेहूं अलग करने को कहते हैं) हो रही थी । दौनों बहने बारी-बारी से दायें रिटा (गेहूं की बालियों के ऊपर गोलाई में बैलों को हांकने को कहते हैं) रही थीं ।

दायीं रिटाते-रिटाते काफी देर हो चुकी थी । किसान को लगा कि बैलों को तीस (प्यास) लग गयी है । उसने अपनी दोनों बेटियों से कहा— "बैल प्यासे हैं । इन्हें पानी पिला कर ले आओ । जो जल्दी बैल को पानी पिला कर वापस आएगी, उसे कटोरा भर कर खीर खाने को मिलेगी।"

पिता का कहना सुन कर दोनों लड़कियां तुरन्त एक-एक बैल को हांक कर पानी पिलाने के लिए चल पड़ी ।

पानी पिलाने की खाल् (छोटा सा तालाब) काफी दूर थी । छोटी लड़की तो बैल को लेकर तेजी से खाल् की ओर चल पड़ी । किन्तु बड़ी लड़की बैल को कुछ दूर ले जा कर रुक गयी। उसने सोचा, "क्यों न बैल को बिना पानी पिलाए वापस ले जाएं। खीर खाने को मिल जाएगी। यह सोच कर उसने बैल के खुर पानी से गीले कर दिए ताकि पिता खुर देख कर यकीन कर लें कि बैल ने पानी पी लिया है ।"

कुछ ही देर में वह बैल को लेकर वापस आ गयी। पिता उसे देख कर बड़ा खुश हुआ और उसने फौरन उसे कटोरा भर कर खीर दे दी। लड़की ने मजे में खीर खायी ।

कुछ देर बाद छोटी लड़की भी बैल को पानी पिला कर आ पहुंची ।



उसे यह देख कर बड़ी निराशा हुई कि उसकी बड़ी बहन उससे पहले पहुंच चुकी है । किसान ने उसके हिस्से की भी खीर रखी हुई थी। खीर पाकर वह बहुत खुश हुई । फिर दोनों बहनें बारी-बारी से बैलों को रिटाने लगीं ।

प्यासा बैल मारे प्यास के बुरी तरह हांफने लगा। उससे न रहा गया। कुछ देर बाद वह धड़ाम से गिर गया। गिर कर छटपटाने लगा। किसान की समझ में कुछ न आया। लड़की समझ गयी कि बैल प्यास के कारण छटपटा रहा है। लेकिन वह चुप रही । यदि वह कह देती तो उसकी पोल खुल जाती। कुछ देर बाद प्यास से तड़प-तड़प कर बैल ने दम तोड़ दिया।

मरते समय उसने लड़की को श्राप देते हुए कहा—"जैसे मैं बिना पानी के तड़प-तड़प कर मरा हूं, वैसे ही तू भी दूसरे जन्म में पानी-पानी करते मरना और जमीन का पानी तुझे खून नजर आए ।" बैल को पानी के बिना मरते देख कर किसान की बड़ी बेटी को बड़ा सदमा-सा लगा । कुछ दिन बाद वह भी भगवान को प्यारी हो गयी।

अगला जन्म उसका चोली (एक प्रकार का पक्षी) में पड़ा । श्राप के कारण उसे जमीन का पानी खून दिखाई देता । अब उसकी प्यास भला कैसे बुझ पाती । आसमान से वह याचना करती और कहा करती सरग ददा पाणि दे—आसमान भाई पानी दे, पानी दे ।

जब बादल उस पर रहम खा कर पानी बरसा देता, तब पानी की बून्द गले मे डाल लेती, अन्यथा प्यासी ही रहती ।

आज भी चोली (पक्षी) इस कथा की याद दिलाती हुई आसमान से पानी की याचना करती हुई देखी सुनी जाती है ।

बाघ और ब्राह्मण

किसी गांव में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था। उसकी एक बेटी थी। लड़की जब सयानी हुई तो ब्राह्मण को उसके विवाह की चिंता सताने लगी। एक दिन उसकी पत्नी ने उससे कहा—"लड़की की शादी तो करनी ही होगी। पैसा हमारे पास है नहीं। इस तरह से तो हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहने से कुछ होगा नहीं। इसलिए तुम शहर जा कर कोई काम तलाश कर लो।"

ब्राह्मण जानता था कि शहर में काम ढूंढ़ना उसके बूते का काम नहीं है। लेकिन पत्नी को समझाना भी उसके वश की बात न थी। विवश हो कर उसने पत्नी की बात मान ली।

अगले दिन ब्राह्मण बड़े सवेरे ही शहर की ओर चल पड़ा। शहर का रास्ता जंगल के बीचों-बीच होकर जाता था। चलते-चलते ब्राह्मण जंगल में पहुंच गया। सहसा उसकी नजर रास्ते के बीचों-बीच लेटे हुए एक बाघ पर पड़ी। बाघ अभी उससे कोई बीस—पच्चीस कदम के फासले पर था। बाघ को देखकर उसकी हवा गुम हो गयी। मारे भय के वह थरथर कांपने लगा। फिर मन में सोचने लगा "शहर जाऊं या वापस घर लौट चलूं।" कुछ देर वह चुपचाप खड़ा रहा। अभी वह कुछ सोच ही रहा था कि बाघ उठ कर उसी की ओर आने लगा। अब तो ब्राह्मण की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसे लगा कि अब बाघ के मुंह से जीवित बचना असम्भव है। भय से वह इतना घबरा गया कि वापस लौटने की भी उसकी हिम्मत न हुई। भयभीत होकर वह जहां का तहां चुपचाप बैठ गया।

कुछ देर बाद बाघ उसके एक दम पास आ कर खड़ा हो गया। ब्राह्मण की दशा देख कर बाघ ने पूछा, "ब्राह्मण, तुम इतने डरे हुए क्यों हो? आखिर तुम कौनसी विपत्ति में पड़े हुए हो?"



ब्राह्मण ने यह सुना तो उसका खोया हुआ साहस पुनः लौट आया। रुन्धे हुए कंठ से उसने परदेश जाने की सारी राम-कहानी बाघ को एक ही सांस में सुना दी। कहानी कहते-कहते उसकी आंखों में आंसू छलछलाने लगे। ब्राह्मण की दयनीय दशा पर बाघ को तरस आ गया। वह बिना कुछ कहे सीधे अपनी मांद में गया। फिर कुछ ही देर बाद सोने चांदी के कुछ आभूषण लेकर लौट आया। आभूषण ब्राह्मण के आगे रख कर बोला, "ये गहने लो और खुशी से अपनी पुत्री का विवाह करो। लेकिन विवाह में मुझे बुलाना न भूलना।"

ब्राह्मण ने गहने लिये। फिर उसने बाघ को शादी में बुलाने का वचन दिया। इसके बाद ब्राह्मण घर की ओर वापस लौट पड़ा।

शाम ढलते ढलते ब्राह्मण घर आ पहुंचा। घर पहुंच कर पत्नी को उसने सारी बात सच-सच बता दी। सुन कर पत्नी के हर्ष और आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

कुछ ही दिनों के अन्दर ब्राह्मण ने अपनी बेटी का रिश्ता पक्का कर दिया। विवाह की तिथि निश्चित हो गई। ब्राह्मण बाघ को निमन्त्रित करना नहीं भूला था। फौरन से उसने बाघ को भी सादर आमन्त्रित कर दिया।

निश्चित तिथि को बरात आयी। बड़े धूम-धड़ाके के साथ विवाह के गाजे-बाजे बजने लगें। बाघ निश्चित समय पर आकर ब्राह्मण के मकान के पिछवाड़े बैठ गया। उसके वहां होने की खबर ब्राह्मण और उसकी पत्नी ही जानते थे।

रात का समय था। बराती बैठ कर भोजन कर रहे थे। तभी बरातियों को बाघ के मुहं से आने वाली बदबू का भान हो गया। उन्होंने तुरन्त ब्राह्मण से इस प्रकार की बदबू का कारण पूछा। ब्राह्मण ने बरातियों को यह कह कर चुप कर दिया कि यह बदबू गन्दे नाले से आ रही है। उसे यह भय था कि यदि उसने कहा कि बदबू बाघ के मुंह की है, तो बरातियों में आतंक छा जाएगा और हो सकता है कि भय से भगदड़ भी मच जाए।

ब्राह्मण का कहना बाघ ने सुन लिया। उसे बड़ा दुख हुआ । लेकिन वह चुपचाप बैठा रहा ।

बहुत रात गए सब बराती खा-पी कर सो गये, तो बाघ ने ब्राह्मण को बुलाया और कहा "एक कुल्हाड़ी लाओ।" ब्राह्मण अविलम्ब कुल्हाड़ी लेकर बाघ के सामने हाजिर हुआ । फिर बाघ बोला, "मेरे पैर पर कुल्हाड़ी से एक वार करो।" पहले तो ब्राह्मण सहम गया, लेकिन जब बाघ अपनी बात पर अड़ा रहा, तो विवश हो कर उसे कुल्हाड़ी से वार करना ही पड़ा । कुल्हाड़ी के वार से बाघ के पैर में एक घाव हो गया। इसके बाद बाघ बिना कुछ कहे चुपचाप वापस लौट गया।

ब्राह्मण की समझ में कुछ नहीं आया । वह गिड़गिड़ाकर बाघ को लाख बार पूछता रहा, मगर बाघ कुछ न बोला। विवश होकर ब्राह्मण चुप रह गया।

ब्राह्मण ने आराम से बेटी का विवाह सम्पन्न कर लिया । काफी दिन बीत गए । बात आयी गई हो गयी । ब्राह्मण सारी घटना को भूल गया ।

एक दिन की बात है । शाम का समय था । ब्राह्मण शहर से अपने घर को वापस लौट रहा था। सहसा रास्ते में उसकी भेंट बाघ से हो गई । दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत खुश हुए । फिर बाघ ने ब्राह्मण को अपना भरा हुआ घाव दिखाया और कहा, "ब्राह्मण भाई तुम्हारे कुल्हाड़े की चोट से हुआ घाव कुछ समय बाद भर गया है । अब न इसमें दर्द होता है और न यही मालूम पड़ता है कि कभी यहां घाव रहा होगा, लेकिन तुमने वाणी की जो चोट की थी, वह आज भी ज्यों-की-त्यों ही है । आज भी वह मेरे हृदय को उसी तरह कचोट रही है, जैसे विवाह के दिन । कठोर वचन या बुरी बात कह कर किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए ।"

ब्राह्मण को समझते तनिक भी देर न लगी कि उसने बाघ जैसे हितैषी का जो अपमान किया था, उससे उसके दिल को बड़ी ठेस पहुंची है वह तुरन्त उसके पैरों में पड़कर माफी मांगने लगा। बाघ ने उसे क्षमा करते हुए खुशी-खुशी विदा कर दिया। ब्राह्मण बाघ से एक बहुत बड़ा सबक सीख कर घर लौट आया।

सात लाटे (मूर्ख)

किसी गांव में एक बुढ़िया रहती थी । उसके सात बेटे थे । सातों के सातों लाटे (मूर्ख) थे ।

एक बार की बात है । सातों भाई किसी दूसरे गांव की ओर जा रहे थे । चलते-चलते रास्ते में एक काणी गाड (सूखी नदी) पड़ी । नदी बिल्कुल सूखी थी । मगर वे निरे मूर्ख थे । नदी देख कर सोचने लगे कि नदी कैसे पार करें । कुछ देर तक सब के सब चुपचाप खड़े-खड़े विचार करते रहे । पर अकेले नदी में जाने की किसी की हिम्मत न हुई ।

कुछ देर तक विचार-विमर्श करने के बाद उन्होंने एक दूसरे का हाथ पकड़ कर काणी गाड को पार करने का निश्चय कर डाला । अब वे एक दूसरे का हाथ मजबूती से पकड़ कर नदी पार करने लगे । कुछ ही देर में उन्होंने नदी पार कर डाली ।

नदी पार कर वे जब दूसरे किनारे पर पहुंचे, तो उन्होंने यह सोच कर कि हम में से कोई उस पार छूट तो नहीं गया है, स्वयं को गिनना शुरू कर दिया । एक-एक कर सातों के सातों लाटे भाइयों ने अपने भाइयों की गिनती की । लेकिन सब की गिनती में छह भाई ही आते थे । यह देख कर सब के सब सिर पीट कर रोने-धोने लगे ।

संयोग से उधर से एक पटवारी गुजर रहा था । उसने एक साथ इतने लोगों के बुरी तरह रोने-धोने की आवाज सुनी तो कोतूहल से उस ओर चल पड़ा । सातों लाटे भाइयों के पास पहुंचकर पटवारी ने उन से इस तरह सिर पीट-पीट कर रोने का कारण पूछा । उत्तर में उन्होंने पटवारी को बतलाया कि गाड पार करते समय उनका एक भाई कहीं गुम हो गया है । इसलिए वे रो रहे हैं ।



यह सुन कर पटवारी खिलखिलाकर हंस पड़ा। उसे समझते तनिक भी देर न लगी कि वे सब महामूर्ख हैं। उसने तुरन्त अपने पैर से जूता निकाल कर हाथ में पकड़ा। फिर तड़ातड़ एक-एक के सिर में एक-एक जूता मारा और मारते वक्त गिनती गिनता रहा। जब सातों लाटों ने सात की संख्या सुनी तो उन की खुशी का ठिकाना न रहा। वे पटवारी के अहसान से दब गये। सब उसके पैरों में पड़ गये। उसे वे देवता मानने लगे। अब तो वे पटवारी को साथ ले चलने के लिए कहने लगे। पहले तो पटवारी उन्हें टालता रहा। लेकिन जब उन्होंने अपनी हठ नहीं छोड़ी, तो विवश होकर पटवारी उन्हें अपने साथ लेकर वहां से अपने घर की ओर चल पड़ा। उसने सोचा कि इन सबसे खूब काम ले लो. इनकी अकल ठिकाने अपने आप लग जाएगी।

कुछ देर बाद पटवारी सातों लाटों को लेकर अपने घर जा पहुंचा। पटवारी के घर में बूढ़ी मां के सिवाय और कोई नहीं था।

उसने लाटों से कहा कि जैसा मां कहे, तुम वैसा ही करना। जवाब में लाटों ने अपने-अपने सिर हिलाकर पटवारी की आज्ञा का पालन करना सहर्ष स्वीकार कर लिया।

अगले दिन पटवारी सुबह अपने काम पर चला गया। पटवारी की मां ने सातों लाटों को लकड़ी लाने के लिए जंगल भेज दिया। लाटे खुशी-खुशी लकड़ी लेने के लिए जंगल की ओर चल पड़े।

दोपहर को सातों लाटे एक-एक बोझ लकड़ियों का लेकर घर आ पहुंचे सातों भाई लकड़ियों के बोझ सिर पर लादे एक कतार में खड़े हो गये। फिर उनमें से एक भाई ने पूछा, "माता जी, बोझ कहां डालूं ?"

'बेटा यहीं डाल दे।' बुढ़िया ने धीरे से कहा। फिर दूसरे भाई ने पूछा, 'और मैं कहां डालू ?'

'तू भी यहीं डाल दे।' बुढ़िया बोली।

'और हम कहां डालें ?' एक साथ शेष पांचों के पांचों पूछने लगे। यह सुन कर बुढ़िया झल्ला उठी। उसने क्रोध में कहा, "मेरे सिर पर डाल दो ।"

फिर क्या था। पांचों लाटों ने एक-एक कर अपने-अपने बोझ बुढ़िया के सिर पर दे फेंके। दोनों भाइयों ने भी अपने-अपने बोझ बुढ़िया के कहने के बाद जमीन से उठा कर बुढ़िया के ऊपर फेंक दिए। बुढ़िया तो लकड़ियों के गट्ठों के नीचे दब कर तुरन्त वहीं ढेर हो गई ।

बुढ़िया को मरी देख कर सब की भय के मारे सिट्टी पिट्टी निकल गई । सब ने विचार-विमर्श कर तय किया कि बुढ़िया को तुरन्त श्मशान घाट ले जाया जाए । अब क्या था । उनमें से एक लाटा तुरन्त पटवारी के घर के अन्दर से एक टूटा हुआ घीड़ा (एक प्रकार की पीठ पर लगा कर ले जाने वाली कंडी) ले आया । सब ने बुढ़िया को घीड़े पर बैठा दिया । फिर एक भाई घीड़े को पीठ पर लाद कर चलने लगा। बाकी सब हाथ हिला कर उसके साथ साथ चलने लगे ।

श्मशान घाट वहां से काफी दूर था । घींड़ा टूटा हुआ तो था ही, बुढ़िया के भार से वह और भी चरमरा गया । कुछ देर चलने पर बुढ़िया घीड़े से नीचे गिर गई, लेकिन लाटे को इसका आभास न हुआ। उसके दूसरे भाई खाली होने के कारण तेजी से आगे-आगे चल रहे थे। इस लिए किसी को भी बुढ़िया के नीचे गिरने का ज्ञान ही नहीं हुआ ।

काफी दूरी तय करने के बाद वे श्मशान घाट पहुंच गये। वहां पहुंच कर देखते क्या हैं कि घीड़ा तो खाली है । अब तो वे और भी घबरा उठे । उन्होंने सोचा कि बुढ़िया घीड़े से उन की नजर बचा कर भाग गई है। यह सोच कर वे तुरन्त उल्टे पांव बुढ़िया की तलाश में लौट पड़े।

कुछ दूर चलने पर उन्हें रास्ते से हटकर एक बुढ़िया दिखाई दी, वह धीरे-धीरे घास काट रही थी । उसे देख कर उन्होंने समझा कि यह

वही बुढ़िया है। फिर क्या था। सब के सब उसे पकड़ कर घीड़े में जबरदस्ती बैठाने लगे। वह बुढ़िया बुरी तरह क्रन्दन करने लगी। लेकिन उन लाटों ने उसकी एक न सुनी।

अभी वे उसे घीड़े पर बैठा भी नहीं पाए थे कि संयोग से पटवारी उन्हें ढूंढ़ता हुआ उसी ओर चला आया। पटवारी को गांव के लोगों से पता चल गया था कि सात लाटों ने उसकी मां का काम तमाम कर दिया है।

सातों लाटों को देख कर पटवारी की आंखों में क्रोध से खून उतर आया। उधर जब उसने उनकी हरकत देखी तो उसका क्रोध सातवें आसमान पर पहुंच गया। उसने आव देखा न ताव और लगा बेंत से लाटों को सड़ासड़ मारने। मारते-मारते उसने लाटों की चमड़ी उधेड़ दी।

कहते हैं कि मार से भूत भागता है। वहां भी यही हुआ। मार से उन लाटे भाइयों को अक्ल आ गई। वे पटवारी के पैरों में पड़ कर माफी मांगने लगे। उन्होंने अपना अपराध भी स्वीकार कर लिया। बुढ़िया के कहने पर पटवारी ने उन सब को माफ कर दिया।

इसके बाद पटवारी और बुढ़िया अपने-अपने घरों को चले गये। सातों लाटे भी अकलमन्द बन कर अपने गांव वापस आ गये। तब से वे गांव में प्रसन्नतापूर्वक जीवन बिताने लग गये।

घिड़ुड़ी रांड

एक राजा था। उसकी कछड़ी (न्यायालय) में एक घिड़ुड़ी (गौरय्या) का घौंसला था।

एक दिन की बात है। राजा कछड़ी में बैठा था। सहसा घिड़ुड़ी अपने घौंसले से बोल पड़ी —"जो मेरे पास है, वह राजा के पास भी नहीं है।"

घिड़ुड़ी का कहना राजा ने सुना, तो वह गुस्से में भर उठा। उसने तत्काल घिड़ुड़ी के घौंसले की तलाशी लेने का आदेश दिया।

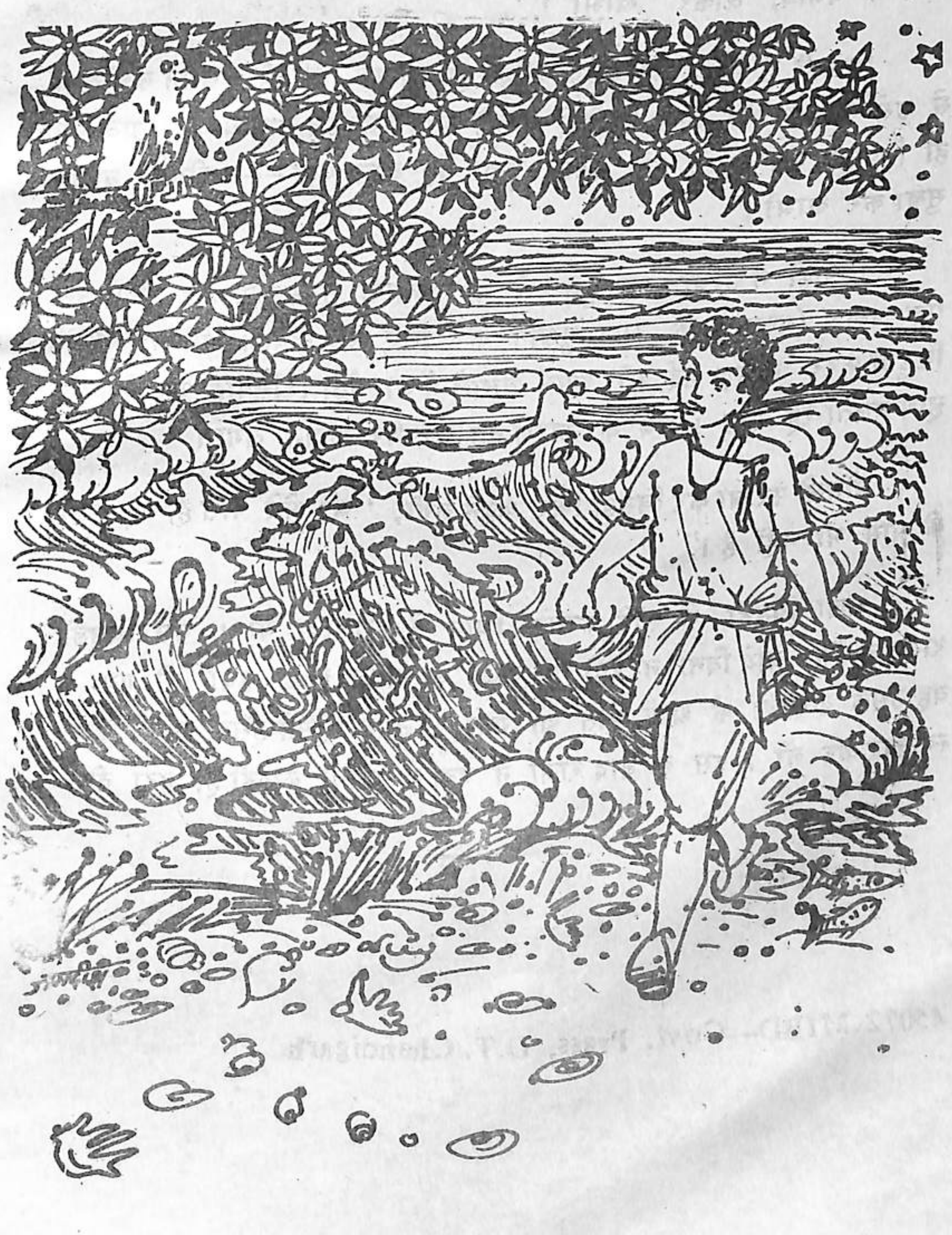
राजा का आदेश पा कर सैनिकों ने तुरन्त उसके घौंसले की तलाशी ली। तलाशी में उन्हें वहां तीन कौड़ियां मिलीं।

अगले दिन राजा फिर नियत समय पर कछड़ी में बैठा। राजा को देख कर घिड़ुड़ी बोली—"जो मेरे पास था, वह राजा ने ले लिया है।"

यह सुन कर राजा को बहुत दुःख हुआ। उसने सोचा, 'मैं इतना बड़ा राजा होकर एक घिड़ुड़ी की कौड़ियां रखे हुए हूं।' फिर क्या था। उसने फौरन से तीनों कौड़ियां उसके घौंसले में रखवा दीं। कौड़ियां पाकर घिड़ुड़ी बड़े घमंड के साथ बोली —"राजा मुझ से डर गया है।"

अब तो राजा के क्रोध की सीमा न रही। उसने फौरन एक सिपाही को हुक्म दिया — "इस घिड़ुड़ी रांड को पकड़ कर मौत के घाट उतार दो।"

सिपाही ने हुक्म पाते ही घिड़ुड़ी को धर दबोचा। सिपाही के हाथ में आ कर घिड़ुड़ी जोरों से चीं-चीं-चीं करने लगी और बेतहाशा पर फड़फड़ाने लगी। सिपाही तनिक ठिठक गया। उसने अनजाने ही पकड़ कुछ ढीली कर दी। सहसा घिड़ुड़ी फिसल कर उसके हाथ से नीचे कचील (गीली गन्दी मिट्टी) में



गिर गई। सिपाही ने उसे वहीं मारना चाहा, तभी वह चिल्ला उठी—"खोकर खाने के बजाय, धोकर खाग्रो।"

सिपाही ने सोचा यह घिड़ुड़ी ठीक ही तो कह रही है। उसने कचील मे से उसे उठाया ग्रौर फिर पानी से अच्छी तरह मल-मल कर धोया। अब जैसे ही सिपाही उसे मारने को तैयार हुआ वह बोल पड़ी—"भीगे के बजाय सुखा कर खाग्रो।"

सिपाही ने सोचा यह मुझ से भी ज्यादा समझदार है। उसने उसे एक पठाल (पत्थर) के ऊपर सुखाने के लिए रख दिया। मौका पाकर घिड़ुड़ी फुरर से उड़ गई ग्रौर अपने घोंसले में जा बैठी। सिपाही यह देखकर हाथ मलता रह गया। भय के कारण वह थर-थर कांपने लगा।

घोंसले पर जा कर घिड़ुड़ी फिर कहने लगी, "जो मेरे पास है, वह राजा के पास भी नहीं है।"

राजा घिड़ुड़ी के सारे करतब ध्यान से देख रहा था। उसे घिड़ुड़ी रांड पर हँसी आये बिना न रही। राजा का सारा क्रोध हवा हो गया। वह उसके करतबों के आगे मात खा गया। उसने हँसते-हँसते अपनी हार स्वीकार कर ली। इस के बाद राजा ने वहां से अपनी कछड़ी ही हटा दी।

45072 MIBD—Govt. Press, U.T. Chandigarh